

अथ

॥ श्रीअनयकुमारसंद्दामंत्रीश्वरनो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परतस्वसुरतरुताखिओ, प्रणमुं पाम जिणंद ॥
 सुर नर किंदर सासता, प्रणमे पयथरविंद ॥ १ ॥
 विधन विदारण मुख्यकर्म, पुरण वनिन कोड ॥ पर
 सिंदने पदमायनी, मेरे मे कर जोड ॥ २ ॥ चरम
 शरीरी चरम जिन, संप्रति शासन जान ॥ समरीजें
 मन ने सदा, आणी मन उलान ॥ ३ ॥ कविमा
 ता प्रणमुं सदा, मनशुद्ध आणी जाय ॥ गुन अक्षर
 सुवचनतणो, भासिणि ररे पमान ॥ ४ ॥ वनि प्र
 णमुं गुरुपादुका, प्रिकरण ररि निजहादि ॥ कुमति
 कुमारग परिहरा, दाया अघिसन बृदि ॥ ५ ॥ गुरुन
 रयो जगको नदी गुरु महोको महिमाण ॥ जिणे
 गुरु मन सुखे धया, नारजोविन सुप्रमाण ॥ ६ ॥
 वधने वधने गुरु कह्या, तीरथ शम्भे मान्य ॥ गुनम
 म तीरथ को नही, पंडित शिष्ये जान्य ॥ ७ ॥ गुरु
 उपकार तणो किहा, नवि सुखियो मे पार ॥ विणे

प्रह सम नित कविने, गुरुचरणे तिर धार ॥ ८ ॥ अ
नयकुमरगुण वर्णवुं, बहुबुध बुद्धिविलास ॥ सुणतां
अचरिल कपजे, जग जागे जसवास ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥ तथा मगध
देशनो श्रेणिक नूपाल ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथमद्वीप जंबूद्वीपनाम, दो चंदा दो सूरज वा
म ॥ नरत खेत्र सघले परगडो, जिहां तीरय शेजुंजो
वडो ॥ १ ॥ जसु महिमा जांखे जिणवीर, सांप्रत
सामी साहस धीर ॥ नर नारी फरसे एक बार, च
उगतिनो जे करे परिहार ॥ २ ॥ त्रैलोक्य शिलाकापु
रुप प्रधान, उत्पति जिहां जिनधर्म निधान ॥ थार
जदेश साढा पचवीस, साधु अने साधवी सुजगीस
॥ ३ ॥ मगधदेस देसां शिर मोड, धरती धाखो अ
पणो मोड ॥ तिहां कुशग्रपुरपाटण जलुं, अतिसुंदर
शोढे गुण निलुं ॥ ४ ॥ अनुपम वाडी बनने वाग,
पडकुतु रहेवानो ठे लाग ॥ फूलां फूल सुगंध महम
हे, उपर नमरा गण गहगहे ॥ ५ ॥ सरस सरोवर
जरियां नीर, पंखी केल करे बहुकीर ॥ अतिकंचो
विपमो जिहां कोट, अरिदल पाडण सबलो उट
॥ ६ ॥ सुंदर पोन्न सरस बाजार, चोराशी चढुटा सु

स्वकार ॥ मागे जे मुख पावें थोक, हीर चीर रूपैया
 रोक ॥ ७ ॥ त्रिक चच्चर चवमुख शुनगाण, महोटां
 महोटां नगर मंमाण ॥ अतिउंचा आवास उतंग, सो
 वन तोरण कलश सुचंग ॥ ८ ॥ गोखें वेठी सारंग
 नयणि, प्रत्यक्ष दीसे अपठर वरणि ॥ नगर कुतुहल
 देखण थाइ, मोही रही सरगें नवि जाइ ॥ ९ ॥ ध
 नयंत महोटा सयला शाह, वसे रसे घर रुद्धि अ
 थाह ॥ नहीं ठे कुमणा जिहाने कांइ, जिणवर था
 ण धरे चितलाइ ॥ १० ॥ सुंदर मंदिर जिननां ग
 हके, दंमकलश धज गयणे लहके ॥ धरमघंट सदा
 जिहां वजे, कुमतिमिष्यामति थलगो नजे ॥ ११ ॥
 पापनिवारण शुन सुविस्तार, उत्तमठामें पोषधशा
 ल ॥ सूधा साधु सिद्धांत बखाणे, सुणि श्रावक शु
 द्ध जावना थाणे ॥ १२ ॥ वरण अठार वसे तिहां
 सुखिया, लोक कोइ नवि दीसे दुःखिया ॥ कालत
 णो बली नहीं परवेस, चोर जार व्यसनी नहीं लेस
 ॥ १३ ॥ चुगल नहीं कोइ तिहां पुरुष, जे परघरनी
 करे अनुरूप ॥ दानशाला मांमी दातार, दुःखिया
 दीन हीन उदार ॥ १४ ॥ एवुं नगर कुशाग्रथनोप,
 लक्ष्मीविनय कहे केती उप ॥ चोपइनी ए जाणो दा

ल, सुणतां लागे अतिहि रसाल ॥ १ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४ ॥

॥ दोहा शोरवी ॥

॥ देश नगर नहीं दंम, निरुपम नीकी रीत ए ॥
 देवगृहां शिरदंम, थकरा कर बीजो नही ॥ १ ॥ दि
 नदिन अधिको नेह, नरनारीमें देखियें ॥ दीपक घ
 टत सनेह, नेहरहित बीजो नही ॥ २ ॥ जिहां नवि
 दीसे काल, जमराणो पाठो मुझ्यो ॥ जंगम थावर
 जाल, नागधरारे ठावडे ॥ ३ ॥ करकाठा कहीयांह,
 दाता जलधर दीपता ॥ नहि ते कृपणथीयांह, करका
 ठा खड्गे सही ॥ ४ ॥ बीजो नहीं किहां वाद, चार
 वरणमें चेषतां ॥ तरक विचारें वाद, पंमितजन
 वेठा करे ॥ ५ ॥ नही किहांयें मान, नर नारीमां
 निरखतां ॥ सेर धडी चचमान, चउराशी चढुटेवचां
 ॥ ६ ॥ कारागर पणकोइ, बध बंधन दीशो नही ॥
 नारी मस्तक लोइ, बंधन बेणी दंमगुं ॥ ७ ॥ एह अ
 पुरव वात, नगर कुसागरमें अने ॥ राजानी कहुं
 वात, सुणजो आलस ठोडीने ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ धणरा मारुजी रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रसेनजितनामें तिहां राजा करत दिवाजा वा
 जा जसना वाजे रेजो, महारा राजेसरजी रे लो ॥

सुंदरसुरत ओहनीकोपितिनां टीको नीको केहरि गा
 जे रे लो ॥ महा० ॥ १ ॥ तेजप्रतापे इइ जणापे
 कापे दलिइने दाता रे लो ॥ महा० ॥ विक्रम ता
 हस रामत पायस जास जगत विख्याता रे लो ॥
 महा० ॥ २ ॥ ठत्र परावे चमर दुजावे थावे जाच
 कबूहा रे लो ॥ महा० ॥ जयजय मंगल शब्द सुणा
 वे लाखपसावे गावे कवित्तनं डुहा रे लो ॥ महा० ॥
 ॥ ३ ॥ सजासमहें पंमित सेवे अहनिश रहेवे देवत
 जा समदीसे रे लो ॥ महा० ॥ आपणी परज सुखें
 रखवाले नयण निहाले हीपडुं हरखे हीसे रे लो ॥
 ॥ महा० ॥ ४ ॥ समकित पाले दोपने टाले पाले
 जिननी वाणी रे लो ॥ महा० ॥ पास तणो श्रावक
 ए जाणो सद्गुमन जाणो वचन सुहाणो कलिमें जा
 स कहाणी रे लो ॥ महा० ॥ ५ ॥ आण मनावे
 सद्गु शिर दावे छुजने नावें जीत्या सद्गु सीमाडी रे
 लो ॥ महा० ॥ राजा राज निकंटक कीनो जगजस
 लीनो दीनो दंम सीमाडी रे लो ॥ महा० ॥ ६ ॥
 बेरी नाशी गया बनवासें रहे वदासें जासे हीणो
 जाणी रे लो ॥ महा० ॥ केवी कामणी काजल गाछे
 नेणप्रनाले जिम वरसाळे पाणी रे लो ॥ महा० ॥

॥ ७ ॥ रूपें राणी रंजसमाणी धारणी नामें अवे रे
लो ॥ महा० ॥ शीलें सीता प्रियशुं प्रीता निर्मल
चित्ता शा अवे रे लो ॥ महा० ॥ ८ ॥ सुखनो म
टको सुंदर लटको चटको शशिनो दीसे रे लो ॥ म
हा० ॥ विकसित आंखडियां कमलपाखडियां जांप
णीयां जज हींमे रे लो ॥ महा० ॥ ९ ॥ अधरप्रवा
ला दंतवज्रा मोतिमात्रा मणियां रे लो ॥ महा० ॥
सुंदरी आगिका तीग्वी नामिका नकवेसर जासिका
गुण नवि जाये गणिया रे लो ॥ महा० ॥ १० ॥
सिर वेणी विराजे नागेंद्र लाजे जाज गयो पातालें
रे लो ॥ महा० ॥ कुचोन्नत ठानी प्रेमनी माती गज
कुं जाती गाले रे लो ॥ महा० ॥ ११ ॥ कटिकेदह
खीणी नदीं रे हीणी जीणी मंत्रमें आवे रे ॥ महा०
जेह निहाले हंसणि हाळे सरयाळे सह जावे रे लो
॥ महा० ॥ १२ ॥ नामं जांग मुखे जांगवतां मननी
खंता पूरव मुकृतां गर्न धर्या निण नागी रे लो ॥
महा० ॥ मादा नवमर्दाने दुवे पूर पुण्यथंकरुं डंडी
पूरे सुन जायो सुखकारी रे लो ॥ महा० ॥ १३ ॥
राजायर महोत्सव मंजाणा हर्षपुगणा जहेणा नवि
को मागे रे लो ॥ महा० ॥ नूर वजाडे पात्र अवाडे

आखला, दीधा थाल विशाल ॥ खीरपीरसे खांतुं,
 जीमे कुमर रसाल ॥ ३ ॥ कुमर जिमंतां देखीने,
 मूके श्वान नूपाल ॥ उठ्या कुमर तिहां थकी, सहुये
 तजी निज थाल ॥ ४ ॥ श्रेणिक इक वेठो रह्यो, नि
 र्जय निश्चल थान ॥ निकट थाल जेला करी, जोल
 विया सहु श्वान ॥ ५ ॥ थापणपें वेठो थको, जो
 जन करे निचिंत ॥ किछुं न साथे जेह नर, जेहने
 बुद्धिमहंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ बांगलीयानी देशी ॥

॥ देखी नरपति हरखीयो रे, श्रेणिक लायक रा
 ज रे ॥ मनगमीया ॥ जिम तिम थरियण जीपड़ो
 रे, धरड़ो निश्चल राज रे ॥ म० ॥ १ ॥ एतो मारे
 जीवन जरियां, एतो कुमर शिरें शिरियां ॥ बली जोबुं
 रे, जोबुं एहनी बुद्धि रे ॥ म० ॥ ए थांकणी ॥ एक
 दिवस बली इम करे रे, मोदक जरिय करंन रे ॥
 म० ॥ कोरा कुंज तिम जल नरी रे, मुझ मुख थ
 खंन रे ॥ म० ॥ २ ॥ तेडावी कुमरो जणी रे, नूप
 ति ये ते थाण रे ॥ म० ॥ ए वेहु मुझ थकां रे,
 करजो थशनने पाण रे ॥ म० ॥ ३ ॥ मुझित कुमरां
 देखीने रे, ठोढे थलगा आय रे ॥ म० ॥ श्रेणिक

रे ॥ म० ॥ १२ ॥ ढाल जणी ए तीसरी रे, बांग
 लियानी जात रे ॥ म० ॥ लक्ष्मीविनयमुनि एम कहे
 रे, कुमार परीक्षा यात रे ॥ म० ॥ १३ ॥ सर्व ॥ ६९ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, पुरकुशायनी मांहि ॥
 थगनी उपडव कपनो, नृप वीनव्यो उछाहिं ॥ १ ॥
 मंत्रतंत्र कीधां घणां, कीधां जपने जाप ॥ बलिवाकु
 ल कीधां घणां, पण नटले संताप ॥ २ ॥ अग्नि थने
 वैरी बली, एकणहीं न रहाइ ॥ चले न मंत्र न थौ
 पधी, अतिथिसाध्य कहेवाय ॥ ३ ॥ राजा मन चिंता
 घणी, कीजें कोइ उपाय ॥ मली महेंतायें वीनव्यो,
 एक उपाय महाराय ॥ ४ ॥ थाज पवी हवे जिण
 घरे, कपजसे जिहां आग ॥ तेहने पुरमांहे बली,
 वसवानो नहीं लाग ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ नगर सुदरसण अतिजलुं, अथवा
 सीखण सीखण चेलणा ॥ ए देशी ॥

॥ नगर करे उद्धोषणा, कोटवाल विशेष ॥ दु
 कुम थयो नररायनो, सुणजो सविशेष ॥ नग० ॥
 ॥ १ ॥ चउमुख चच्चर चहुहटे, कहे पडह बजाइ ॥
 थाजथकी जेहने घरे, पावक उपडव थाइ ॥ न० ॥

॥ १ ॥ तेहने पुर बाहिर सही, बसवानो ठे जाग ॥
 जेहने हूए ते इम करे, तजी पुरनो राग ॥ न० ॥ ३ ॥
 विधिवस नरपतिने घरे, सुधार प्रमाद ॥ ततखण
 थावी कपनो, अग्रि तणो उनमाद ॥ न० ॥ ४ ॥
 जनकी अग्री जयंकरी, नवि चाले जोर ॥ हाकबुंव
 कलख दुवे, थातस कठिन कठोर ॥ न० ॥ ५ ॥
 बधतो पावक देखीने, कुमरनणी कहे नूप ॥ मणि
 माणिक मोती घणा, महोटा रत्न अनूप ॥ न० ॥
 ॥ ६ ॥ जे जे वस्तु जिकां ग्रही, मंदिरथी थाणेत,
 ते तेहना होसे सही, इम दीधो थादेस ॥ न० ॥ ७ ॥
 हय गय केचित् मेलयी, केइ सुगताफल सार ॥ ही
 रचीर केइ लीयां, थावे एम कुमार ॥ न० ॥ ८ ॥
 काढे श्रेणिक तिणसमे, बाजो जंजा नाम ॥ पूठे
 राजा देखीने, नव ए किण काम ॥ न० ॥ ९ ॥ स
 विनूपतिने जाणवो, जयकारण एह ॥ इमसुणि नर
 वर हरखियो, बुधिमंत सुत एह ॥ न० ॥ १० ॥
 जंजा सार दीयो इतो, जंजाने अनुमान ॥ ए
 वीजुं नाम जाणजो, श्रेणिकनो परधान ॥ न० ॥
 ॥ ११ ॥ अचनीपति एम चिंतवे, मारी तो ठे वाच ॥
 बाहिरवास देवराविया ॥ करवा वाचा साच ॥ न०

॥ १२ ॥ अनुक्रमे तिण ठामे सही, राजगृही इण
 नाम ॥ नगर वस्यो तिहां द्विति तिलो, सर्व गुण
 अजिराम ॥ न० ॥ १३ ॥ चोयी ढाल थइ इति ॥
 लक्ष्मिविनयनी वाच ॥ सांजलजो हवे आगले ॥ क
 विना वचन ठे साच ॥ न० ॥ १४ ॥ सर्व गाथा ॥ ७७ ॥

॥ दोहा सोरठा ॥

॥ श्रेणिकनाम कुमार, राजपाट योगो अठे ॥
 दान मान सतकार, तात न थापे तेहने ॥ १ ॥ मत
 मत्सरधर कोइ, कुमर करे एनां बुरो ॥ इस्यो थंदेसो
 जोइ, ग्राम गगस थापे नहीं ॥ २ ॥ एम चितवी
 नरेश, बीजा कुमर जर्ण ॥ दीये ॥ अधिका घास वि
 शेष, श्रेणिकने अपमानायां ॥ ३ ॥

॥ ढाल पांचमी कार्वा कति अनागकी रेहां ए देखी ॥

॥ कुमर इस्यो मन चितवेगहां, अपमान्यो मुज
 तात ॥ कर्म दिमाइमां ॥ इहां रहेंबु जुगतो नहीं
 रेहां, उठ चले परनात ॥ क० ॥ १ ॥ जुवो चित
 विचार, सुख दुख सरजनहार ॥ नहीं कोइ मेटण
 हार, जाणो सकल संसार ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥
 दहीतणी एक थायणीगहां, मार्गे साहर्मा थाइ ॥
 ॥ क० ॥ तेम बली कुमरी कन्यकारेहां, दक्षुण थंगे

जाइ ॥ क० ॥ ३ ॥ शंख शब्द काने सुण्योरेहां, बली
 सबही गाय ॥ क० ॥ कुंज कजश दीगो नजोरेहां,
 मंगलध्वनि तेम थाय ॥ क० ॥ ३ ॥ मीठा फल कोण
 जेटणेरेहां, दीधां कुमरने थाण ॥ क० ॥ वेद नणंते
 वेदीयेरेहां, वै आशिश सुविहाण ॥ क० ॥ ४ ॥ धव
 लाधूनावलदीया रेहां, रासे बांध्या तेह ॥ क० ॥
 सामा थाया कुमरने रेहां, पुन्य तणी कही रेह ॥
 ॥ क० ॥ ५ ॥ गुन गुकने पुर लांधीने रेहां, वाहेर
 थायो जाम ॥ क० ॥ माब्हाजी यइ ततक्षणें रेहां,
 वेठी बोले ताम ॥ क० ॥ ६ ॥ वाम जाग वेगो थको
 रेहां, तितर थापे वाच ॥ क० ॥ पंथीने परदेशडेरेहां,
 लहे सुख संपत्ति साच ॥ क० ॥ ७ ॥ तुरत तिसे बांह
 फोरने रेहां, दक्षिण अंगे जोइ ॥ क० ॥ अणजाण्यासुं
 प्रीतडीरेहां, अणजाण्यां फल होइ ॥ क० ॥ ८ ॥ आगल
 जाता मारगेरेहां, मृगमाब्हाला थाय ॥ क० ॥ वंठित
 फलदये पंथीया रेहां, शुक्ल नलां सुखदाय ॥ क० ॥
 ॥ ९ ॥ गाम नगरपुर लांधनो रेहां, लांध्यां विषमां ताम
 ॥ क० ॥ अनुक्रमे चलतां आचीयो रेहां, वेनातट अ
 निराम ॥ क० ॥ १० ॥ पुर प्रवेश करतां थकांरेहां, सुक्ल
 यया श्रीकार ॥ क० ॥ चिंते मनमां कुमारजीरेहां,

होशो फल सुखकार ॥ क० ॥ ११ ॥ नगर
 रजिथ्यामणो रेहां, हरख्यो श्रेणिक चित्त ॥
 चवराशी चवटां नजारेहां, थापणो कोइ न
 ॥ क० ॥ १२ ॥ नगर कुतुहल निरखतारेहां,
 नइसेठने हाट ॥ क० ॥ सुन ठामे वेठो थको
 जोवे नर गहगाट ॥ क० ॥ १३ ॥ वेठो देखी तेहने
 पूठे सेठ तिवार ॥ क० ॥ किहां वसो कोण ठो
 रेहां, बोले ताम कुमार ॥ क० ॥ १४ ॥ मगध
 वासी थबुं रेहां, झूठी मारी जात ॥ क० ॥ कर
 जमावे तिम जमेरेहां, नर धरती दिन रात ॥ क० ॥
 ॥ १५ ॥ थादर दीधो थतिघणारेहां, मिठी मीठ
 नीहाल ॥ क० ॥ वसो रसो वसो इहारेहां, बच
 कहे सुविसाल ॥ क० ॥ १६ ॥ काची कलि थना
 कीरेहां, इण वेशीमें जाण ॥ क० ॥ पांचमी ढाल
 सुकननीरेहां, लक्ष्मी वीनयनीवाण ॥ १७ ॥ सर्व ॥ १०० ॥

॥ डहा ॥

॥ तिण नगरे तिणहीज दिने, परव महोठव को
 य ॥ खान पान खेजण रमण, हरख वसे सब लो
 य ॥ १ ॥ थावे माहक थति घणां, सोदोलेण स
 माज ॥ व्याकुल देखी शेठने, कारावे तसु काज ॥ २ ॥

कुमर प्रजावे तेहने, थयोलाज महंत ॥ ते देखीने विं
 तवे, शेव महा गुणवंत ॥ ३ ॥ जे में सुहणो निर
 खीयो, थाज निस्ताने थंत ॥ ते देसी सफलो हुसे,
 सांप्रत एहने तंत ॥ ४ ॥ रतन पुरुष मोटो थवे,
 वरकन्याने योग्य ॥ में जोतां लीधो नहीं, मलियो
 पुण्य संयोग ॥ ५ ॥ लइ थाव्यो घर थापणे, करि
 थादर सनमान ॥ स्नान विलेपन थानरण, जोजन
 जगत प्रधान ॥ ६ ॥

॥ दाल ठवी वश्यानी तथा शेव जइपुठी सिकोत्तरी
 ॥ ए देशी ॥

॥ अक्सर पामीने हवे थापणो, करी उठव बहु
 जांते रे ॥ नंदा नामे वेटी थापणी, परणावे मन
 खांते रे ॥ थ० ॥ १ ॥ दीधो दान थने चली दाइ
 जो, दीधा इव्य थपारो रे ॥ सरखी जोडी वेचनी दे
 खीने, हरख्यो सहु परीवारो रे ॥ थ० ॥ २ ॥ रहे
 वा काजे शेव थापीया, थति उंचा परसा दोरे ॥
 जो जाली गोख जरुखे सोहतो, करतो गगनसुं वादो रे
 ॥ थ० ॥ ३ ॥ हवे दोगंदक सुरवरनी पेरें, विलसे
 सुख तसु साथो रे ॥ पुण्य सखाइ हुवे जिण पुरु
 ॥ पने, केही जोग थनाथो रे ॥ थ० ॥ ४ ॥ थन्य दि

वस निसी पोढी थापणे, नंदा महेज मजारो रे ।
 गजपति निरखे ऐरावण समो, थानंद थंग थंपारो
 रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ थावीने कहे पतिनी थागले, पुढे
 तास विचारो रे ॥ श्रेणिक जाखे इम मनगहगही,
 सुपन तणो फलसारो रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ होसे पुत्र तु
 मारे अति जजो, सुंदर अति सुकुमालो रे ॥ कुल
 दीपक वली होसे माहरे, गुण लक्ष्ण सुविसालो रे
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ सांजली नंदा अति हर्षित थइ, धर्म
 जागरणे जागे रे ॥ लक्ष्मी विनय कहे एणीपरे जवि
 तुमें, सांजजजो हवे थागें रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ सर्व ॥ १२२ ॥

॥ डहा ॥

॥ हवे प्रसेनजीत नरपति, वृद्ध थयो असमान ॥
 निजसुत तेडण कारणे, मूक्या निज परधान ॥ १ ॥
 मझ्या कुंवरने थावीनं, कुशल खेम कहेही ॥ ते हर
 पित दुठ घणो, मरम जेद लहेही ॥ २ ॥ अनुमति
 सेठ तणी लहे, थावी प्रीयाने पास ॥ तात बोला
 व्यो चालसुं, एम कहे वज्रास ॥ ३ ॥ सील रतन
 धरजो तुमे, जगजागे जस वास ॥ राजगृही गोवा
 लीया, सरस धवज थावास ॥ ४ ॥ ए थद्धर पत्री
 लिखे, दे प्रीयाने सहाय ॥ चाव्यो थायो पुरशरें, प्र

एमे तातने पाय ॥ ५ ॥ ततकृण राजा हरापन,
 दीयो थपणो राज ॥ पोते थणसण थादखो, साखा
 थातम काज ॥ ६ ॥ उदयवंत हवे राजवी, पाले
 थ्रेणिक राज ॥ वज ठल थसियण जीपिने, सारे प
 रिजनकाज ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ दोरी महारी थावे रस्तीया कटतले ॥ ए देशी ॥
 दोहलो उपनो रे नंदाने हवे, गरजतणे परनावे रे ॥
 रस्तीया ॥ चामर ठत्र धरावती, गजवेठी सप्रनावे रे ॥
 रस्तीया ॥ १ ॥ पुन्य पत्ताये रे रस्तीया संपजे, सघला
 वंढित जोग रे ॥ २० ॥ जयजय बोले रे उजा वारणे,
 जगजाणे सद्गु लोग रे ॥ २० ॥ पु० ॥ २ ॥ ए थांकणी ॥
 थमर पलावुं महारा नगरमें, दीजे दीनने दान रे ॥
 २० ॥ एम करती विचरुं हुं नगरमें, जीयत जनम प्र
 माण रे ॥ २० ॥ पु० ॥ ३ ॥ हवे वात कहे ए तातने,
 ते पण लइ वहु जेट रे ॥ २० ॥ जाइ देइ रायने वीन
 व्यो, मन थारती सद्गु मेट रे ॥ २० ॥ पु० ॥ ४ ॥
 नरवर प्रसन थइने ते दीया, नंदानी फली थास रे
 ॥ २० ॥ जिणविध विचरी तेह सवि कही, हरख रहे सुख
 वास रे ॥ २० ॥ पु० ॥ ५ ॥ साढा नव महीने पूरे

थये, सुन लगने सुन चार रें ॥ २० ॥ गुण मणि
 रण सुत जनमीयो, रवी मंजल अनुहार रे ॥ २०
 पु० ॥ ६ ॥ उठव कीधारे शेठे अतिथणां, थइ
 जय जयकार रे ॥ २० ॥ वाजा वाजे पंच शब्द जनां,
 दीधां दान थपार रे ॥ २० ॥ पु० ॥ ७ ॥ दशमे दी
 न रे दसूठण मांमीयो, सरसा चार आहार रे ॥ २०
 ॥ परीयण सयण सहुं जीमावीने, शेठ कहे सुविचार
 रे ॥ २० ॥ पु० ॥ ८ ॥ अमे तुमारे स्वमुखे जाणिने,
 मोहलाने अनुसार रे ॥ २० ॥ कीजीयें ठेयें नामनी
 स्थापना, नामे अजय कुमार रे ॥ २० ॥ पु० ॥ ९ ॥ दोष
 त्रण धावे पालीजतो, चंदकला अनुमान रे ॥ २० ॥
 थाव वरसनी अनुक्रमे ते थयो, सकल कला गुण
 जाण रे ॥ २० ॥ पु० ॥ १० ॥ एक दिन कुंवर जर्ण
 कहे तेहवे, केलि करंतडा बाल रे ॥ २० ॥ ताहरो ता
 त नीस्त नवि जाणीयो, तुं मन आप संजाल रे ॥
 २० ॥ पु० ॥ ११ ॥ बलतो कुंवर कहे पीता तुमे, ए
 मुळ शेठ गुण खाण रे ॥ २० ॥ हसी हसी बालक
 बोले ठे इसो, ते तो मायनुं जाण रे ॥ २० ॥ पु० ॥
 १२ ॥ एम सुणी आवी पूठे मातने, ते कहे एहीज
 तात रे ॥ २० ॥ एह तुमारो पीता थठे खरो, साच

इहो सुजवात रे ॥ २० ॥ पु० ॥ १२ ॥ तव सार्ध माता
 कहे तेहने, सांजल सुतविरवंत रे ॥ २० ॥ गयेंलहु
 डो वे गरुयो गुणे, वाजे एम बुद्धिपंत रे ॥ २० ॥ पु० ॥
 १४ ॥ चलते तातें कहीपो वे कितो, देपत्री सुज ए
 करे ॥ २० ॥ वांचे तेहनी थरथ विचारीने, जांखे एम
 सुधिवेकरे ॥ २० ॥ पु० ॥ १५ ॥ १४४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात माहरो मातजी, राजग्रही पुरराय ॥ चा
 लो जइए तिहांकणें, पूठे तातने माय ॥ १ ॥ सेवे
 सीख दीधी तुरत, दश्मणि माणिक रास ॥ निरजय
 अनुक्रमे थाविया, राजग्रही पुरपास ॥ २ ॥ सुंदर
 सरस उद्यानमें, धरी माताने हेन ॥ पांने थापो न
 गरमें, चाकर नफरसहेत ॥ ३ ॥ नगर कुतहज निरख
 तां, दीर्ग माणस वृंद ॥ कुवर तुरत थावे तिहां, धरी
 मनमे थाणंद ॥ ४ ॥

॥ ढाल थावमी ॥

॥ चित्रोढा राजा रे ॥ ए देशी ॥ हवे कुमरतें पूठे
 ,इहां थचरिज सुंने रे ॥ चलतो ते जाखें रे, सांजल
 कुवरजी रे ॥ इहां थ्रैणिक राजा रे, देखण बुधि काजारे,
 मेढ्या वे तेणे मंत्री पाचसें रे ॥ १ ॥ निज नामनी मुझ

रे, नहों कांइ दुखा रे, ते लइने नांखी एणे ॥
 रे ॥ जल विण ए कूँ रे, नृपनो ठे दूँ रे,
 जे काढे मंत्री ते बडो रे ॥ २ ॥ सुणी कुमर
 रे, गोमय मंगावे रे, ते लइने नीरखी नांखे कपरे रे ।
 तृण पूजो बलतो रे, तिम नांखे बलतो रे, जल कूप
 जरावे ते ततकृण रें ॥ ३ ॥ एम बुद्धि पसावे रे, मुद
 ते पावे रे, लइने ते थापे थावी नूपने रे ॥ पय शीश
 नमायो रे, नृप तास बोलायो रे, क्यांथी तुं आयो
 वासी केथनो रे ॥ ४ ॥ बलतो एम नासे रे, सौ रह्यो
 तमासे रे, वेना तट वासी आयो त्यां थकी रे ॥ न
 इ शेवने जाणो रे, हा जाणुं जाणो रे, नंदा तस पूत्रीये
 शुं जण्यो रे ॥ ५ ॥ नांखे सूत जायो रे, नृप सुणि
 सुख पायो रे, ते केवो कहे में दीठे देखीयो रे ॥
 शुं नाम ठे तेहनो रे, तसु नय नहों केहनो रे, गुणी
 नृप विचारे एहिज अजय कहीजीये रे ॥ ६ ॥ ते ते
 नी— परखो रे, कहेताने नीरखो रे, मुज मन अति
 हारख्यो देखी वालने रे ॥ लइने उठंगे रे, राजा मन
 रंगे रे, तुज मात क्यांहाते कहे उद्यानमें रे ॥ ७ ॥ तिण
 वेला राजा रे, करी उधव साजा रे, गज राज घंटा
 ला सामा मोकले रे ॥ परगट पेसारे रे, थाणी नगर

(२४)

वेदु श्रावकधम करे, सील धरे सुपवित्र ॥
पित पंथे चले, चित्त ॥ ३ ॥ अन्य दिव
स त्यां विशेष ॥ नाग विजय
नरनवे, देख ॥ ४ ॥
॥ १ ली ॥
जर घडो हे देशी ॥ चि
सारणी ॥ गरदाप

५. १५ नव ए इक तार ॥ अंगज वेगुं ताहरे रे, अ
 न परणुं नार ॥ मे० ॥ ७ ॥ आजयकी करवो
 , कोइक दाय ठपाय ॥ नंदन होवे ताहरे रे,
 सुख थाप ॥ मे० ॥ ७ ॥ आंखिज तप सु
 करे रे, पाछे निर्मल जीत ॥ इणो समे सोइ
 रे, सुगपति कीप सगीत ॥ मे० ॥ ७ ॥ अ
 एक वेषना रे, धरि करि मापुनो देह ॥ क
 धणो करनो थको र, आयो मृजमा गेह ॥ मे०
 १० ॥ उठी सनमा नांदिया रे, पुने मापुने एम ॥
 , कागण आब्या नुमे र, नांग्या कागज नेम ॥
 ११ ॥ ११ ॥ गजान काज आपो नुमे रे, नंत अम्हां
 त, चपाक ॥ नाव धरी हव आनिका र, आणे आप
 १२ ॥ पाक ॥ मे० ॥ १२ ॥ ~~आपुट~~ उपाट ॥ आणे जिमे रे,
 १३ ॥ नांग्या वव प्रनाव ॥ ~~आपुट~~ नही र, मृज
 १४ ॥ आ केग नाव ॥ मे० ॥ ~~आपुट~~ सुदद ~~आपुट~~ न

(१४)

हु श्रावकधर्म करे, सीज धरे मपवित्र ॥ जिनना
येत पंथे चले, निर्मल ॥ अन्य दि
स त्यां उपनी, चिंता ॥ नाग विचां
नरजने, पुत्र विन

रे, ॐ नमः त ए इक तार ॥ अगज रंभुं तादरं रे, अ
 वर न पणं नार ॥ मे० ॥ ३ ॥ अगजथकी कर्वा
 नुमे रे, कोइक वाय नगाय ॥ लंडन टावे तादरं रे,
 तां मुजने मुख्य आय ॥ मे० ॥ ४ ॥ प्रांचित नप नु
 लमा इरे रे, पावे निर्मेत उर्वन ॥ इणं ममे सोत्र
 म धर्मा रे, अगजि रीर मर्मा ॥ मे० ॥ ५ ॥ अ
 गमहता एक रंभना ॥ अगि अगि तारुतां रेरे ॥ क
 पट धर्मा कर्मा गङ्गा ॥ गङ्गा मङ्गा मेरे ॥ मे०
 ॥ ६ ॥ उर्वी मङ्गा गङ्गा ॥ उर्वी मङ्गा मेरे ॥
 किण उर्वी मङ्गा ॥ उर्वी मङ्गा मेरे ॥
 मे० ॥ ७ ॥ उर्वी मङ्गा गङ्गा ॥ उर्वी मङ्गा मेरे ॥

वैदु श्रावकधम करे, सील धरे सुपवित्र ॥ जिन
 पित पंथे चले, निर्मल राखे चित्त ॥ ३ ॥ अन्य
 स त्यां उपनी, चिंता अतिहि विशेष ॥ नाग विचा
 नरजवे, पुत्र विना कुल देख ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

॥ उठ कलालणी नर घडो हे ॥ ए देशी ॥ नि
 तातुर मन चिंतवे रे, सारथी एम विचार ॥ गरढां
 कुण मोजणी रे, पुत्र विना आधार ॥ १ ॥ मेरा ज
 उडा रे, पुत्र समान न कोइ ॥ ए थांकणी ॥ सुत विण
 घर सूनो हुवे रे, सुत विण लक्ष्मी जाय ॥ सुत विण
 को लेखे नहीं रे, सुत विण नामो जाय ॥ मे० ॥ २ ॥
 सुत विण कुण माता कहे रे, सुत विण को कहे ता
 त ॥ एके सुत विण मानवी रे, जूरे दिनने रात ॥ मे०
 ॥ ३ ॥ चिंते गलहथ देइने रे, रही रही धूणे शी
 चूख तृपा सहु वीसरी रे, जोर किपे ॥ मे० ॥ ४ ॥
 मे० ॥ ४ ॥ इम उदास देखी करी रे, सा नार
 नार ॥ कां पियु थामण दूमणो रे, कांइ न लोपी
 कार ॥ मे० ॥ ५ ॥ यजतो सारथी इम जणे रे, सुतनी
 चिंता आज ॥ त्रिया कहे परणो तमे रे, जिम सीपे
 तुज काज ॥ मे० ॥ ६ ॥ वली सारथी तेहने ॥

कला संयोग ॥ ३ ॥ सतानीक राजा सखल, भृगाव
 ती तसु नार ॥ जेष्टा बरी नंदिवर्धने, शिवा प्रद्योत व
 दार ॥ ४ ॥ कन्या सुजेष्टा चेलणा, ठे वलि मंदिर
 दोय ॥ वाद करंतां योगणी, कुंवरी जीती सोय ॥
 ॥ ५ ॥ अपमानिती योगणी, धिंते एम धरी रीत ॥
 लोकतणे ए संकटे, पाडीश वीशवा वीश ॥ ६ ॥ अम
 रख आणी योगणी, लखी कुंवरी पटरूप ॥ आची
 राजगृहिपुरे, जिहांठे श्रेणिक नूप ॥ ७ ॥ योगणि रा
 जाने मली, पट दीधो नृप हाथ ॥ रूप अधिक देखी
 करी, मोही रह्यो नर नाथ ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देशी विंदलीनी ॥ चित्र लिखित रूप देखी, नृप
 अकित थयो सविशेषी हो ॥ सुंदर सोहेवे ॥ ए टेक ॥
 वेणी सांहे लांबी, अलिकुज ज्युं श्यामता आंधी हो
 ॥ सुं० ॥ १ ॥ शशिमुख कीध वजासो, अंधारे लीधो पासो
 हो ॥ सुं० ॥ माथे राखडी सोहे, जाणे नाग चूडाम
 णि मोहेहो ॥ सुं० ॥ २ ॥ अष्टम शशितम जाल,
 विंदली अतिहि विशालहो ॥ सुं० ॥ नयण जलां
 अणियालां, विच कीकी अलिअल कालाहो ॥ सुं० ॥
 ॥ ३ ॥ नासिका दीप जोसरखी, अति तीखी कवि

जन परखीहो ॥ सुं० ॥ नकवेसर तिहां लहके
 मनी संगति गहके हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ दोइ काने
 ल जीणां, तसु मोल लहे लाखीणा हो ॥ सुं० ॥
 धर प्रवाली राता, रद दाडिम कलीय कहाता हो ॥
 ॥ सुं० ॥ ५ ॥ इम पूरण मुख चंदो, बली वचन
 मृतरस विंदो हो ॥ सुं० ॥ त्रिवली सोहे ग्रीवा, शंख
 दक्षिणावर्त सदीवा हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ कमल नाल बे
 बांहां, कर पल्लव थतिहि उठांहां हो ॥ सुं० ॥ ७ ॥
 कलस कंचन सुविशाला, तसु उपरे पहेरी माला
 ॥ सुं० ॥ ८ ॥ कटि तटि केहरी खीणो, कंठ को
 लनी परें जीणो हो ॥ सुं० ॥ कटिमेखला कटि पहे
 री, जीवन जल लेती लहेरी हो ॥ सुं० ॥ ९ ॥ थ
 ति कोमल दोइ जंघा, विपरीत रच्या केलयंजा हो ॥
 ॥ सुं० ॥ पग उन्नत नख राता, जाणे क्रूरम रच्या वि
 धाता हो ॥ सुं० ॥ १० ॥ जीत्या हंस जिणे दाले, ते
 शोच करे सरपाले हो ॥ सुं० ॥ स्त्रीगुण चउसर जा
 सहु विद्या वेद बखाणे हो ॥ सुं० ॥ ११ ॥ कहे
 मुज साचो, ए चित्र किणहिना जाचो हो ॥
 ॥ सुं० ॥ थसुर थमर कोइ नारी, थय किन्नरी ना
 गकुमारी हो ॥ सुं० ॥ १२ ॥ थाज जगें इण सरखी,

। नारी कोइ न निरखी हो ॥ सुं० ॥ बलति योगणि
 प्राखे, महाराज सुणो सहु साखे हो ॥ सुं० ॥ १२ ॥
 गर नजो वेसाली, तिहां राजा राज खुशाली हो ॥
 । सुं० ॥ राय चेडानी धूथा, चेलणा सुजेष्टा दूथा
 हो ॥ सुं० ॥ १३ ॥ चित्र लख्यो मति थोडी, तिण
 नाख गुणो रूप जोडी हो ॥ सुं० ॥ बीजा खंमनी ए
 ढाल, सांजलतां थतिहि रसाल हो ॥ सुं० ॥ १४ ॥
 राय श्रेणिक चित्त चीनो, मुडी ज्युं देखी नगिनो हो
 ॥ सुं० ॥ लक्ष्मीविनय एम बोले, शीलवंतने कोइ न
 तोले हो ॥ सुं० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा देखी मोहियो, पल न करे पट दूर ॥ प
 रणु कन्या एक ए.तो मुऊ राज पट्टर ॥ १ ॥ राय
 विचारी एहवा, तुरत तेडायो दूत ॥ बात कही सहु
 थापणी, ते पण तेथी पट्टत ॥ २ ॥ राजा चेडे पुठि
 यो, क्यांथी थाच्यो दूत ॥ मगधेसर मों मेंजियो, क
 रवा थापण सूत ॥ ३ ॥ कन्या मंदिर ताहरे, मागे
 ते मगधेश ॥ दूत मुखे ए वचन सुणी, कोण्यो राय
 विशेष ॥ ४ ॥ तब राजा बलतो नणो, दूत प्रत्ये ए
 बोल ॥ हीन जात वांठे किशो, श्रेणिक निपट निटो

ल ॥ ५ ॥ तुरत दूत पावो बड्यो, चढ्यो न काम
माण ॥ कोयतणा थति थाकरा, बोल सुणाय
ण ॥ ६ ॥ नूपति बोल सुणी हवे, चिंते चित्त मज्ज
र ॥ चिंतातुर नृप देखीने, पूठे अजयकुमार ॥ ७ ॥
चिंतानो कारण कह्यो, सहु श्रेणिक महाराज ॥ अ
जय जणे चिंता नहि, सारीस सयलां काज ॥ ८ ॥

॥ ठाल वीजी ॥

॥ करम परीक्षा करणकुंवर चड्यो रे, ए देशी ॥
चिंते मंत्री हवे घर थाविने रे, कीजे कोइ उपाय ॥
ताततणी सहु चिंता टले रे, मनवंठित फल थाय
॥ १ ॥ तुरत कला मंत्रीसर केजवे रे, लखि पट श्रेणि
क रूप ॥ तेड्या चितारा निज पुरुषसुं रे, कहे मंत्रीस
सरूप ॥ तु० ॥ एथांकणी ॥ २ ॥ सुबडपणे तमे करवो
आजयी रे, श्रीश्रेणिकनुं रूप ॥ एणे कामे तुमने ते
डिया रे, एहिज ततसरूप ॥ तु० ॥ ३ ॥ वचन सुणि
चितारा हरखीया रे, कहे तुम वचन प्रमाण ॥ थावि
घरेने नवरंग केजयी रे, बारु करत विनाण ॥ तु०
॥ ४ ॥ चतुराशुं पीठी चालवे रे, धरि चित्त एक
ध्यान ॥ पांचे रंग कला थति फायता रे, दे जि
हां जिहां थनुमान ॥ तु० ॥ ५ ॥ खद्द मासें पट पृ

ते थयो रे, तख शिखमय सहु नाव ॥ आणि वीधो
 तेहिज अजयने रे, पायो जाल पसाय ॥ तु० ॥ ६ ॥
 हुगल जली परे मंत्री जालव्यो रे, निज कोडंभिक ते
 डी ॥ कदे क्रियाणा वारु तंमहो रे, अवर चिंता स
 हु ठोडी ॥ तु० ॥ ७ ॥ लविंग कस्तूरी केसर अर्गजा
 रे, जायफल ने कंकोल ॥ पुंगी चिबल ने मोमा पूर
 यी रे, जेदनो मोंधो मूल ॥ तु० ॥ ८ ॥ जावंत्रीने त
 ज ताजी जली रे, लीधां पत्र तमाल ॥ अकलकरोने
 तेम तीत्या मरी रे, बली ज्यामा शुविशाल ॥ तु० ॥ ९ ॥
 लीधा साथे थिरमा पांजडी रे, पाट पटोलां खास ॥
 नारी कुंजर तेणे लीधां घणां रे, अघला धरे जसु
 आस ॥ तु० ॥ १० ॥ साछू ने शेलां लीधां घणां रे, ली
 धां दखणी चीर ॥ रंगिन ठायल ने शुन चूनियां रे,
 स्त्रीरोदक ज्युं स्त्रीर ॥ तु० ॥ ११ ॥ इत्यादिक सूत्रने ता
 चट्टू रे, चूवा ने चंबेल ॥ वृषन वंट गाढां नारें नखां
 रे, चाले हवे शुन मेज ॥ तु० ॥ १२ ॥ शुन दिन मु
 दूरत जोयी पूठियो रे, पूठयो पांग सर्वक ॥ अंते कि
 यो प्रस्थानो थाहिरे रे, तजी मननी सहु शंक ॥ तु०
 ॥ १३ ॥ गुटिका प्रयोगे निजरूप फेरवी रे, नाम ध
 खो धनशेठ ॥ अनुक्रमे आया बेतालीपुरे रे, राय म

स्थानकरे, चिंते तेह अजाण ॥ मे० ॥ १६ ॥
 चि हुवे बहु सुत जण्यारे, तिणें एको गुण जाण ॥
 साख सकलमां प्रविण जेरे, पुत्र दूजो कुलनाण ॥
 ॥ मे० ॥ १७ ॥ इम कहिने गुटिका जखेरे, जीव
 त्रीसे आय ॥ समकालें ते उपन्यारे, वेदन सही नवि
 जाय ॥ मे० ॥ १८ ॥ सुर आराध्यो ते बलीरे, यावि
 हरे सहु कष्ट ॥ सम जीवत सुत ताहरेरे, इम कह
 थयो अट्ट ॥ मे० ॥ १९ ॥ अनुक्रमे तिणे सुत ज
 न्मियारे, कीधा उठय कोड ॥ हर्ष थयो बहु सारथीरे,
 देखी बत्रीशनी जोड ॥ मे० ॥ २० ॥ कला कुशज
 थया ते सद्गुरे, चढती जोवन रेख ॥ नूपति थाप्य
 सारथीरे, करी पारखसविशेष ॥ मे० ॥ २१ ॥ रात
 मलारे एजणीरे, बीजा खंमनी ढाल ॥ जक्ष्मीविनफ
 एन उचरेरे, पुण्य फळे तत्काल ॥ मे० ॥ २२ ॥ सर्व २६
 ॥ दोहरा ॥

॥ वेशालीनगरी हवे, राज करे महाराय ॥ सेव
 रंजित पुरवे, चेडो नाम कहाय ॥ १ ॥ थवर थव
 तणी, तेने कन्या सात ॥ रूपे रतिपति मोह
 रंजा सम तनु नात ॥ २ ॥ यदायन यर नावती,
 ॥ २१ ॥ योग ॥ पद्मावती गुण रंजियां, सकल

जा संयोग ॥ ३ ॥ सत्तानीक राजा सबल, मृगाय
 ती तलु नार ॥ जेष्टा बरी नंदिवर्धने, शिवा प्रयोत व
 ॥ ४ ॥ कन्या सुजेष्टा चेलणा, ते बलि मंदिर
 ॥ ५ ॥ वाद करंतां योगणी, कुंवरी जीती सोय ॥
 ॥ ५ ॥ अपमानोती योगणी, चिंते एम धरी रीत ॥
 तां कतपो ए संकटे, पाडीश वीशवा वीश ॥ ५ ॥ अम
 रंख थाणी योगणी, लखी कुंवरी पटरूप ॥ थाची
 राजगृहिपुरे, जिहांते श्रेणिक नृप ॥ ७ ॥ योगणि रा
 जाने मली, पट दीधो नृप हाथ ॥ रूप अधिक देखी
 करी, मोही रह्यो नर नाथ ॥ ८ ॥

॥ दाल बीजी ॥

॥ देशी बिंदलीनी ॥ चित्र लिखित रूप देखी, नृप
 थकित थयो सविगेरी हो ॥ सुंदर मोहेवे ॥ एटेक ॥
 देणी सोहे लांबी, अलिकुन ज्युं श्यामता थांबी हो
 ॥ सुं० ॥ १ ॥ शशिमुख कीध उजामो, अंधारे लांयो पामो
 हो ॥ सुं० ॥ माघे राखडी सोहे, जाणे नाग चूडाम
 णि मोहेहो ॥ सुं० ॥ २ ॥ अप्रम शशिमम जाल,
 बिंदली थतिहि विशालहो ॥ सुं० ॥ नयण जनां
 थणिपालां, बिच कीकी थनिथल कालाहो ॥ सुं० ॥
 ॥ ३ ॥ नासिका दीप लांशरखी, अति तीखी क

जन परखीहो ॥ सुं० ॥ नकवेसर तिहां लहके, उ
मनी संगति गहके हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ दोइ काने कुं
ल जीणां, तसु मोल लहे जाखीणा हो ॥ सुं० ॥ अ
धर प्रवाली राता, रद दाडिम कलीय कहाता हो ॥
॥ सुं० ॥ ५ ॥ इम पूरण मुख चंदो, बली वचन अ
मृतरस बिंदो हो ॥ सुं० ॥ त्रिवली सोहे ग्रीवा, शंख
दक्षिणावर्त सदीवा हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ कमल नाज वे
वांहां, कर पद्मव अतिहि उठांहां हो ॥ सुं० ॥ कुच
कलस कंचन सुविशाला, तसु उपरे पहेरी माला हो
॥ सुं० ॥ ७ ॥ कटि तटि केहरी खीणो, कंठ कोय
लनी परें जीणो हो ॥ सुं० ॥ कटिमेखला कटि पहे
री, जीवन जल जेती लहेरी हो ॥ सुं० ॥ ८ ॥ अ
कोमल दोइ जंघा, विपरीत रच्या केलयंजा हो ॥
॥ सुं० ॥ पग उन्नत नख राता, जाणे क्रूरम रच्या वि
धाता हो ॥ सुं० ॥ ९ ॥ जीत्या हंस जिणे हाले, ते
शोच करे सरपाले हो ॥ सुं० ॥ त्रीगुण चवसठ जा
णे, सद्गु विद्या वेद बखाणे हो ॥ सुं० ॥ १० ॥ कहे
योगि मुज साचो, ए चित्र किण्हिनो जाचो हो ॥
॥ सुं० ॥ असुर थमर कोइ नारी, थय किन्नरी ना
गकुमारी हो ॥ सुं० ॥ ११ ॥ थाज जगें इण सरखी,

में तारी कोइ न निरखी दो ॥ सुं० ॥ रजति पांगणि
 आखे, महाराज सुणो सहु साखे दो ॥ सुं० ॥ १२ ॥
 नगर जनों बेसाली, तिहां राजा राज सुसाली दो ॥
 ॥ सुं० ॥ राय चेढानी भूथा, चेलणा मुजेष्टा दूथा
 हो ॥ सुं० ॥ १३ ॥ निघ्न लख्वां मति थोडी, तिण
 लाख गुणो रूप जोडी दो ॥ सुं० ॥ बीजा खंमनी ए
 दाज, सांजलतां अतिहि रमाज हो ॥ सुं० ॥ १४ ॥
 राय श्रेणिक चित्त चीनां, मुडी ज्हु देखी नगिनां दो
 ॥ सुं० ॥ लछ्मीविनय एम घोले, शीजवंतने कोइ न
 तोले हो ॥ सुं० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ राजा देखी मोहियो, पल न करे पट दूर ॥ प
 रणु कन्या एक ए, तो मुऊ राज पहूर ॥ १ ॥ राय
 विचारी एहवां, तुरत नडायां दृत ॥ वान कहीं सहु
 आपणी, ते पण तेयी पहून ॥ २ ॥ राजा चेहे पूठि
 यो, क्यांथी थाव्यो दृत ॥ मगधेसर मां मेत्रियो. क
 रवा थापण सूत ॥ ३ ॥ कन्या मंदिर ताहरे. मागे
 ते मगधेश ॥ दृत मुखे ए वचन सुणी. कांथ्या राय
 विशेष ॥ ४ ॥ तब राजा बलतो जणे, दृत प्रत्ये ए
 घोले ॥ हीन जात बांटे किशो, श्रेणिक निपट निटो

ल्यो देइ नेट ॥ तु० ॥ १४ ॥ राय महेल पासे जाडे
 लीया रे, चारु चारु हाट ॥ सोदे थावे राजसाहेलियां
 रे, लोक मल्या रहे थाट ॥ तु० ॥ १५ ॥ मांघी व
 स्तु ते सांघी दीये रे, ये उचित नृप गेह ॥ देखी स
 लोचो सोदो चेडियां रे, थावि लिये सहु तेह ॥ तु०
 ॥ १६ ॥ बीजा खंमनी ए पूरी यशे, बीजी ढाल र
 साल ॥ लक्ष्मीविनय कहे गह गहकतो रे, बुद्धि फले
 तत्काल ॥ तु० ॥ १७ ॥ स० ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्नान करे शुद्ध नीरसुं, पहेरे वस्त्र पवित्र ॥ शो
 ठ करे त्रिहुं कालनी, पूजा एकण चित्त ॥ १ ॥ दे
 खी पूठे चेडियां, किण नामे ए देव ॥ शोठ चवे जी
 वितथको, श्रेणिक ठे अम देव ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष पर
 तो जेहनो, पावे वंछित थोक ॥ कर जोडी सेवा करे,
 मगध देशनां लोक ॥ ३ ॥ इत्यादिक गुण वर्णना
 कीधी शोठे तिवार ॥ सखी गइ कुंवरी महेल, कहे
 केम कीध अवार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रामचंदके वाग चांपो मोरी रह्योरी ॥ ए देशी ।
 सखीय कहे सुण बोल, जिम मुज चार नईरी ॥ शोठ क

1

2

3

4

5

6

तिण पथे आवे नूप, जो तुम एम वरोरी ॥ करो उ
 पाय तुरत, अम चित्त दृढ खरोरी ॥ ७ ॥ सेवकसं स
 केत, नूपति नेद दयोरी ॥ करी पंचांग पसाय, नरप
 ति सुख नयोरी ॥ वार्षिक तुरत तेडावी, सुरंगनी वा
 त कहीरी ॥ त्यां पण कीधो तेम, कनकनी कोडी ल
 हीरी ॥ ८ ॥ जब थड सुरंग तयार, त्यारे कुंवरी कहे
 री ॥ शेव मजावो वार, कुण हवे विरह सहेरी ॥ आ
 वशे नरपति आज, रहो तुम सज्ज थशरी ॥ सखी क
 हो तुम जाय, शेवे वात कहीरी ॥ ९ ॥ तुरत चड्या
 मगधेश, मेना साथ निणेरी ॥ श्रेणिक साहसधीर, धन
 अवतार गिणेरी ॥ यत्रीमे वडवीर, सारथी साथ थ
 यारी ॥ सुलसापुत्र सुजाण, नूपति जाम मयारी ॥ १० ॥
 अनुक्रमे आब्या तेह, मेना दूर धरेरी ॥ सारथी पुंन
 यत्रीश, नरपति साथे करेरी ॥ पेठा सुरंग मजार, चे
 लणा आइ मिजारी ॥ निज आनरण मंदूप, सुजेष्टा
 छेण बजीरी ॥ ११ ॥ कहे सारथी सुण नूप, कारज
 सिद्ध थयारी ॥ अरि घरे करतां ढील, उपजे कोड न
 यांरी ॥ सीख वचन सुणी राय, रथ चढी वेग बळ्या
 री ॥ आइ सुजेष्टा ताम, पुंन न स्वाधा हाथ बळ्यारी
 ॥ १२ ॥ बीजा खंमनी ढाल, श्रेणिक थाश फलीरी

•

•

•

-

•

पाधरो, करवा अरिगुं युद्धो रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ पैरो
 पूवे सुरंगथी, आपडीयो तसु धायो रे ॥ हात सक
 त उजो रहे, अबला लीधां जायो रे ॥ रा० ॥ ४ ॥
 सुलसासुत उत्तरि पड्या, रय खेज्यो महारायो रे ॥
 इणगुं युद्ध करगुं अमे, नवितव्यता ते थायो रे ॥
 रा० ॥ ५ ॥ तीर सडासड बाहतां, लागो मर्मनी गो
 डो रे ॥ एक ढलंते सहु ढल्या, वत्रीसेनी जोडो रे ॥
 रा० ॥ ६ ॥ देखी अचरिज एहवां, पागो बल्यो ते
 वीरो रे ॥ रण शूरा नर जे हूवे, मृतक लंघे नही धीरो
 रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ खेडतो घांडा खंतगुं, श्रेणिकनो दल
 दीगो रे ॥ कांइ पापी कन्या हरी, उजो रहे हवे धी
 गो रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ आमा सामा दल मय्यां, तीर
 सडासड लागं रे ॥ रण फूजंतां जोरगुं, सुजटां तर
 वार जागां रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ नूटे हयनाज हवाश्यां,
 नूटे नालना गोला रे ॥ गुरा नर सामा धमे, कायर
 ताके उंजा रे ॥ रा० ॥ १० ॥ बुवकारे पूठा थकी,
 निज निज सेवक सामो रे ॥ विरुद्ध बडाइ वे घणी,
 ले ले बायनो नामो रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ हाक बुंव क
 लख करे, पडे लडे रण देशो रे ॥ युद्ध करंतां जालमी,
 चेडा दल दियो खेसो रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ दल जाजं

तो देखीने, मंत्री बुद्धि विशेषो रे ॥ वेशाली नृपने क
हे, राय धरो सुविवेको रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ वीर सुजट
थायो तित्ते, वात कही सहु तेहो रे ॥ एके वाणे था
हण्या, कुंवर वत्रीजे जेहो रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ सुणी
राजा मन चिंतवे, जवितव्यतानी वातो रे ॥ चंचल चप
ल ए थाउखो, क्रोधमान दिन रातो रे ॥ रा० ॥ १५ ॥
किणसेंती तुमे युद्ध करो, ए पति पुत्रि तुजो रे ॥ व
चन देये धरो माहरो, तत्त मरमनो गुझो रे ॥ रा०
॥ १६ ॥ मिठे वचने न्यायने, समजायो राजानो रे ॥
मूक्या प्रधान ते थापणा, श्रेणिक देइ बहु मानो रे
॥ रा० ॥ १७ ॥ बीजा खंमनी पांचमी, ढाले चेलणा
मेजो रे ॥ ठल वल जे नर साचवे, काम सरे तसु हे
लो रे ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ११४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जइ परधाने वीनव्यो, सुण राजा मगधेश ॥
श्वविचाखो कारज कीयो, निणे थयो दंत द्वेश ॥ १ ॥
थाण्यो मंदिर थापणे, हरगव्यां सहु नरनार ॥ चेन्न
णाने परणावीने, दीधा तेजी तोखार ॥ २ ॥ सुज्येष्ट
संयम थादखो, साखा थातम काज ॥ थावे नगरे
थापणे, श्रीश्रेणिक महाराज ॥ ३ ॥ दोह्या वयाउ

आगले, लइ कर नीली माल ॥ वेगां सांमेलो सजो,
आव्यो श्री नूपाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठही ॥

॥ देशी काठधारी सोरठी ॥ हवे मंत्री परधानदे
सखी मोरी आगम सुणी राजा तणो ॥ तुरत वजाव्या
तुरहे ॥ स० ॥ घर घर उत्सव अति घणो ॥ १ ॥ तेडावो
कोटवाल हे ॥ स० ॥ कहे मंत्रीसर सिर तिलो, नग
र करावो शुद्ध हे ॥ स० ॥ नीर ठंटावो निर्मलो ॥
॥ २ ॥ पचरंगी उत्तम फूल हे ॥ स० ॥ विठावो गली
ये गली, सणगारो सहु हाट हे ॥ स० ॥ निरखतां
दूये रंगरली ॥ ३ ॥ सजी सोदव सिणगार हे ॥ स०
॥ चंद्र वदन माग चली, शींगें सोवन कुंज हे ॥
॥ स० ॥ वधावे गायने बली बली ॥ ४ ॥ मृगनयणी
चढी गोख हे ॥ स० ॥ निग्ये मगधनो राजीयो, बड
वखती वरियांम हे ॥ स० ॥ पद्मणि परणी घर थावी
यो ॥ ५ ॥ जीवे कोडी वरीय हे ॥ स० ॥ थाशीय बली
बली उचरे, वाजंते निशान हे ॥ स० ॥ नरपति महे
ले संचरे ॥ ६ ॥ नरवर श्रेणिक राय हे ॥ स० ॥ प
टराणी फहावी चेजणा, बिलसे जोग अनेक हे ॥
॥ स० ॥ नित नित नवला खेलणा ॥ ७ ॥ काराग

वेर कदि तूटे नहीं, जिण तिण आवे अंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मोरा साहेब हो, श्रीशीतलनाथके ए देशी ॥
जंबूझीपेहो इण भरत मजारके, नगर वसंतपुर पुरति
लो ॥ तिहां राजाहो पाले राज पमूरके, जितशत्रु ना
मे अति नजो ॥ १ ॥ तसु राणी हो, अमरा पटरा
णीके, सीले सीता सम कही ॥ तसु अंगज हो सुमंग
ल इण नामके, रूपे तिण सम को नहीं ॥ जं० ॥ २ ॥
निज रूपे हो मोहे नरनारीके, मदमातो रातो रहे ॥
नवि लेखे हो बीजो नयणा मेठके, आठे मदमातो
रहे ॥ जं० ॥ ३ ॥ तसु मंत्री हो नंदन गुण हीणके,
श्रेणिक नामे रूप विना ॥ नृप नंदन हो संतावे नि
त्यके, चिंते ते इम अज मन ॥ जं० ॥ ४ ॥ में कीधी हो
परजव जीव हिंसके, अथवा मुनि संतापिया ॥ तिणे
इण जव हो हुं दोहग ठामके, चिंते इम श्रेणिक हीयां
॥ जं० ॥ ५ ॥ हवे कीजेहो कांइक तप कष्टके, तो पूरव
तक वेलिये ॥ इम चिंतविहो परिग्रह सवि ठोडके,
॥ व्रत हवे ते लिये ॥ जं० ॥ ६ ॥ जितशत्रु हो
निज मननी खंतके, पाट सुमंगल आपियो ॥ तप क
रतोहो श्रेणिकमुनि तेहके, क्रमें वसंतपुर आवियो ॥

॥ जं० ॥ ४ ॥ तिणे लीधो हो थनिग्रह थति कूरके,
उठडि नामे तप तणो ॥ निमंत्रे हों पहिजो जे थाय
के, करवो तेहने पारणो ॥ जं० ॥ ५ ॥ तप महिमा
हो पसखो जगमांहीके, लोक थया सहु रागिया ॥ क
र जोडी हो सेवे निश दीशके, नर नारी पाय लागि
यां ॥ जं० ॥ ६ ॥ ते नरपति हो जन मुख सुणी वा
णिके, बांदी थपराध खामियो ॥ तव नरपति हो नि
ज मनने जायके, पारण काज निमंत्रियो ॥ जं० ॥
॥ १० ॥ इम कहिने हो पोहोतो निज ठाणके, मुनि
मास खमणने पारणे ॥ नृप पीडा हो थइ तेणी वार
के, जव थाव्यो राय वारणे ॥ जं० ॥ ११ ॥ तिण
मांहेहो नवि पेसे कोइके, वण रीमे बल्यो मुनि ति
को ॥ पेहेले घर हो जो सुगति थलन्यके, बीजो खम
ण करे जिको ॥ जं० ॥ १२ ॥ बली नरपति हो निमं
त्रण कीधके, तिणी परें पारणो नवि दीयो ॥ त्रीजे पण
हो पारणनी बेलके, उत्सव वस मुनि थवहेलीयो
॥ जं० ॥ १३ ॥ तव तापस हो चढियो बहु कोपके,
थति नूख कितो नवि लोपियें ॥ इण पापि हो लाज
च मुज लायके, पण मुज पारणो नवि दियो ॥ जं० ॥
॥ १४ ॥ हवे परजव हो एहने बधी दायके, हुं होजो

तिण मति बही ॥ नियाणोहो करी पामे कालके,
 तापस व्यंतर गति लही ॥ जं० ॥ १५ ॥ हवे नूपति
 हो, सुमंगल तेहके, राज तजी थयो संजती ॥ व्यंत
 रगति हो तिण पण लही सारके, दूठ श्रेणिक नूपति
 ॥ जं० ॥ १६ ॥ खंम बीजे हो ए सातमी ढालके, श्रे
 णिकनो नव नांखियो ॥ तापसनी हो सुणजो हवे
 चातके, जेणे नियाणो दाखियो ॥ जं० ॥ १७ ॥ स० १५२
 ॥ दोहा ॥

॥ पटराणी नूपतितणी, चेलणा उर उत्पन्न ॥ ग
 र्ज पसाये मोहलो, पति मांस नक्षण मन्न ॥ १ ॥
 राणी देखी डुवली, राजा पूत्रे वात ॥ अति आ
 ग्रहसुं तिणे कही, आपणा मननी धात ॥ २ ॥ मंत्री
 जेद जणावियो, ते एम करे उपाय ॥ शशक मांस
 अणावीने, धरि उर ठेवे राय ॥ ३ ॥ राणी मोहलो
 पूरियो, राजा दीयो उलंज ॥ गर्जे ते पाले गोरडी, सुत
 संपत नलंज ॥ ४ ॥ पूरे मासे जन्मियो, परवयो वा
 डी जाम ॥ चंद समो करे चांदणो, श्रेणिक संचरे ता
 म ॥ ५ ॥ ताम्रचूडको तिण समे, चुंणतो आव्यो चू
 ण ॥ अति सुंदर कोमल घणुं, तिण आंगुल कीधी उं
 ण ॥ ६ ॥ राजायें ते संग्रह्यो, अशोकचंद कही नाम

+

2

2

2

सर्व कला निधि जोइने रे लो, आठ कन्या धरी स्नेह
 रे ॥ सु० ॥ परणावी एकण दिने रे लो, ताते अथि
 क स्नेह रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ ७ ॥ आठ रमणि सुख
 जोगवे रे लो, दोगंदक सुर जेम रे ॥ सु० ॥ सुख स
 माधे प्रवर्ततां रे लो, जे थयो ते कहे तेम रे ॥ सु०
 ॥ ह० ॥ ७ ॥ ग्रामागर पुर विहरतां रे लो, आब्या
 श्रीजिनराज रे ॥ सु० ॥ श्रेणिक कुंवर परिवारगुं रे लो,
 पट्टता वंदन काज रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ ९ ॥ देशना सुणी
 जिनवरतणी रे लो, जविक जीव सुखकार रे ॥ सु० ॥
 श्रेणिक समकित उचखो रे लो, आवक अजय कुना
 र रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ १० ॥ मेघकुंवर मातानणी रे
 लो, कही यो अनुमति आज रे ॥ सु० ॥ संयम लेखुं
 प्रभु कने रे लो, सारीश आतम काज रे ॥ सु० ॥
 ॥ ह० ॥ ११ ॥ अनुमति लही परिवारनी रे लो,
 ले संयम मन रंग रे ॥ सु० ॥ राते दूहवियो घणुं रे
 लो, मुनि गमनागमन प्रसंग रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ १२
 ॥ मन जंगे हवे प्रहसमे रे लो, मेघ आव्यो प्रभु पा
 स रे ॥ सु० ॥ संयम दढ करवा नणी रे लो, पूरव
 नव कही तास रे ॥ सु० ॥ ह० ॥ १३ ॥ जिनवर
 मुख नव सांनजी रे लो, धरे संयम सुपवित्त रे ॥ सु० ॥



जा राणी जावशुं, वंद्या मुनिवर पाय ॥ संध्याये घरे
 आविया, सढुको हर्षित थाय ॥ ४ ॥ सुंदर मंदिर था-
 पणे, करता केलि निःशंक ॥ राजा राणी चेलणा,
 पोढ्यां एक पलंक ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ राग मज्जार प्रोहितीयाना गीत
 नी ॥ निंदा म करशो कोइनी पारकीरे ॥ ए देशी ॥

॥ राजा श्रेणिक पोढ्यो मंदिरे रे, राणी चेलणा
 केरे साथ रे ॥ निःशवश राणी नवि लख्यो रे, सोड
 वाहिर रहियो हाय रे ॥ रा० ॥ १ ॥ सीते कर ठ
 रियो अति धणो रे, ऊवकी जागीने कहे एम रे ॥
 ते केम होशे प्रीतम एम सुणि रे, चिंने श्रेणिक मनमें
 तेम रे ॥ रा० ॥ २ ॥ अस्ततीने मनमांहे कुण वसे
 रे, चंचल चित्त नारीनो होय रे ॥ वायम कदि न
 होवे निर्मजो रे, देखो पंचाभृतशुं थोय रे ॥ रा०
 ॥ ३ ॥ थंतेवर परजालण जणी रे, ये मंत्रीसरने
 थादेश रे ॥ नरपति पढोतो श्रीजिन वंद्या रे, कहे
 मंत्रीने श्रीमगधेश रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ अजय सुणी वच
 हीपडे चमकीयो रे, अविचाखो दीधो थादेश रे ॥
 मुज माता तो शीजे नवि चले रे, जो थावे पोतें
 थमरेश रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ जिम तिम थंतेवर ए रा

खवो रे, बुद्धि प्रपंच करी इहां कोइ रे ॥ अंतेंवर प
 ण प्रजालवो रे ॥ राय दूकम पण साचो होय रे ॥
 रा० ॥ ६ ॥ जीरण जाली कुंजरनी कुटी रे, मंत्री
 दूवे एहवा बुद्धवंत रे ॥ वांदी पूठे नरपति एकमना
 रे, चेलणा कहेवी कहो जगवंत रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ जि
 न बोले सांजल तुं शुजमति रे, साते सतियां में शिर
 ताज रे ॥ नरपति चेढानी साची सही रे, इण परं
 जगवंत सांसों जांज रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ इम सुणी नृप
 वेने ध्याव्यो वही रे, शुं तें कीधो इम कहे याण रे ॥
 अजय जणे तुम दूकम कियो अमे रे, तें पण कांइ
 न ठंम्या प्राण रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ मंत्री तात तणो व
 च संग्रही रे, बोले बाल मरण न करुं निटोल रे ॥ ए
 अवरसरे संयम लेइत जावशुं रे, अजयकुंवर कह्यो ए
 वोल रे ॥ रा० ॥ १० ॥ चिंत निवारो राजा चित्तनी
 रे, ठे तुम अंतेंवरने केम रे ॥ राजा सुणी अति ह
 रिंत थयो रे, बलतो अजय जणी कहे एम रे ॥
 रा० ॥ ११ ॥ तुं मुज जीवन प्राण ठो जगतमे रे, तुं मु
 ज मानससरोवर हंस रे ॥ चिरंजीवे तुं मंत्री माहरो
 रे, तुजयी उंप्यो मारो वंश रे ॥ रा० ॥ १२ ॥ सुख जोगव
 तो रहे तुं सासतो रे, संतोप्यो इम कही सुवचन रे ॥

बुद्धियें जिणो अंतरेर राखियो रे, लोक कहे धन धन
 रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ नवमी ढाल ए खंम बीजा तणी
 रे, लक्ष्मीविनय कहे सुविलास रे ॥ बुद्धि प्रवल जिण
 पुरुषनी रे, तेहनो सयले जग यश वास रे ॥ रा० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, पनणे चेलणा रंग ॥
 एकथंनो सुंदर घणो, गृह मुज काज सुरंग ॥ १ ॥
 करावी यो मुज नणी, प्रीतम मन उल्लास ॥ सयली
 मां अधिकी दुबुं, पूरो ए मुज आश ॥ २ ॥ नित्य
 नारी सुजागणी, प्रीतम जेहने हाथ ॥ जेहने प्रीतम
 वश नहि, सानारी काढी नाथ ॥ ३ ॥ नूपति मंत्री
 नांखियो, मंदिरनो विरनंत ॥ अजयकुंवर हवे ततरु
 णे, चिंते बुद्ध बुद्धिमंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी जिनवरसुं मेरो मन लागो, अ
 थवा शेजुंजे साधू अनंता सीधा ॥ ए देशी ॥

॥ अजय तेडाव्या वार्षिक ततरुण, गृह विधि
 जाणणहार रे ॥ मंत्री वार्षिक साथे लेइ, पढुता व
 नह मजार रे ॥ अ० ॥ १ ॥ फिरि फिरि वन खंम त
 रुवर पेखे, तिहां दीगो तरु एक रे ॥ शाखा पत्र फूल
 फल देखी, मंत्री धखो विवेक रे ॥ अ० ॥ २ ॥ सुंदर

वन ए देव अधिष्ठित, ठोते थयो. विठाय रे ॥ अ० ॥
 ॥ ११ ॥ मंत्री शिरोमणि तेडी राजा, कहे एवो आ.
 देश रे ॥ वन फल तस्कर निग्रह कीजे तेहनो, त
 जीये विश्वास विशेष रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ बीजा खं
 मनी दशमी ढाले, महेल तणो अधिकार रे ॥ लक्ष्मी
 विनय निजमति अनुसारे, जाखी ढाल उदार रे ॥
 अ० ॥ १३ ॥ सर्व गाथा ॥ २१४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचामृत जल पूरियां, तरु तरु मूले आय ॥ गू
 गल अंगर उखेनियां, नव पल्लव वन थाय ॥ १ ॥ तस्कर
 र निग्रह कारणे, मंत्री करे उपाय ॥ बुद्धि प्रबल जिण
 पुरुषने, तसु जिम तिम कारज थाय ॥ २ ॥ कथा ए
 क मन केलवी, सुंदर अद्भुत वात ॥ सुणतां अचरि
 ज उपजे, जेदे साते धात ॥ ३ ॥

॥ ढाल अगियारमी ॥

॥ थारां महेलां ऊपर मेह, ऊरुखे विजलीहो ला
 ल ॥ ऊ० ॥ ए देशी ॥ नगर जमे निश दीश, धरे मन
 कंदमें हो लाल ॥ ध० ॥ कथा कहे मंत्रीस, वेसी नर
 वृंदमें हो लाल ॥ वे० ॥ नगर वसंतपुर नाम, सद्गु
 जग जाणियो हो लाल ॥ स० ॥ निर्धन जीरणशेव,

वसे तिहां बाणियो हो लाल ॥ व० ॥ १ ॥ तस
 पुत्री रति रूप, यौवन जल जित रही हो लाल
 ॥ यो० ॥ मोहे सुर नर लोक, यौवन ज्योति मिल
 रही हो लाल ॥ यो० ॥ चोरे नित वन फूल, ते रति
 पति कारणे हो लाल ॥ ते० ॥ चरचे पूजे देव, ये क
 षि पति वारणे हो लाल ॥ ये० ॥ २ ॥ नित नित चोरी
 कोइ, करे वन माहरे हो लाल ॥ क० ॥ जाणे नहीं
 नर कोइ, न होवे जाहरे हो लाल ॥ न० ॥ एम वि
 भासि वनपाल, त्रिपी विवरमे रह्यो हो लाल ॥ ठि० ॥
 प्रांते आवी बाल, जालि कर इम रह्यो हो लाल ॥
 जा० ॥ ३ ॥ वणा दिवस नें लीध, जलां फूल माहगं
 हो लाल ॥ ज० ॥ जाधी तुज में आज, जाणी गुण ता
 हरा हो लाल ॥ जा० ॥ नवि ठांडुं तुज नेट, बचन
 माली इसा हो लाल ॥ व० ॥ जो आवे मुज पास,
 परण पेहेली निशा हो लाल ॥ प० ॥ ४ ॥ वाचा मा
 नी बाल, ठोडी मालितिका हो लाल ॥ ठो० ॥ अनु
 क्रमे वर धनवंत, कन्या परणे जिका हो लाल ॥ क० ॥
 पढुता सुणिहि जाम, करें प्रीय बीननि हो लाल ॥
 क० ॥ वाचानी कही बात, मालिनी पीनती हो लाल
 ॥ मा० ॥ ५ ॥ लही प्रीतम आवेश, चली निशि ए

कली हो लाल ॥ च० ॥ मारगें मलिया चोर, साची
 बातें मूकी बली हो लाल ॥ सा० ॥ तिण परें राक्षस
 लंघी, गइ वनमे जिसें हो लाल ॥ ग० ॥ वनमाली द
 ढ देखी, कहे जगनी तिसें हो लाल ॥ क० ॥ ५ ॥
 बलतां राक्षस चोर, तजी तेहने तंइ हो लाल ॥ त०
 ॥ कुशले थायी गेह, मली प्रीतें जइ हो लाल ॥ म०
 ॥ कहां कुण डुफरकार, कहे मंत्री इशो हो लाल ॥
 ॥ क० ॥ मानी थमरस वंत, सराहे पियु जिसो हो
 लाल ॥ स० ॥ ७ ॥ लोक वचुद्धित जेह, अधिक राक्ष
 स गणे हो लाल ॥ थ० ॥ जे कामी कामांध, डुफर
 माली जणे हो लाल ॥ ६० ॥ चोर चतुर ति
 णमांडी, जंपे मानगीयो हो लाल ॥ जं० ॥ मुहते त
 तदण तेह, नुरत चोर परखियो हो लाल ॥ तु० ॥
 ॥ ७ ॥ पूठयो किम फल जीध, कहे विद्या करी हो लाल
 ॥ क० ॥ थाप्यो नरपति पास, मागे विद्या खरी हो
 लाल ॥ मा० ॥ वनो कहे ते नील, विद्या नरपति ज
 णी हो लाल ॥ वि० ॥ जाये कहे मंत्रीश, विनय विण
 थम धणी हो लाल ॥ वि० ॥ ९ ॥ सिंहासन बेसाडी,
 नुगत विद्या गृही हो लाल ॥ तु० ॥ पडुता निज नि
 ज पाम, सहु सुखसुं रहे हो लाल ॥ स० ॥ युद्ध का

रिज कीध, मह्यो चोर इण चिये हो लाल ॥ अ० ॥

मतिवन्त मंत्री होय, तियां कारिज सधे हो लाल ॥

॥ ति० ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ २२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण थवत्तर पुर एकदा, समोसखा जिनवीर ॥

जगवन्त वंदण उमह्यो, श्रेणिक साहस धीर ॥ १ ॥

मारग जातां वालिका, देखी एक दुर्गंध ॥ वांदी पूठे

जिन जणी, तेह तणो संवंध ॥ २ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ नेमी समोसखा, ए देशी ॥ अथवा धर्म ह्ये

धरो ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनवर बलतो जणे रे, निंदा

विकथा ठोडी ॥ सुण श्रेणिक नृपाल रे, जे कहियें ते

थोडी रे ॥ १ ॥ कर्मतणी कथा ॥ ए आंकणी ठे ॥

धरजो ह्ये विचारी रे ॥ हीन कुल थवत्तरी, बली

थइ श्रेणिक नारी रे ॥ कर्मतणी कथा ॥ २ ॥ इणहि

ज घीपे जरतमें रे, ठे साजियाम शुन ठाम ॥ तिहां

नियसे एक वाणियो रे, धन मित्र एहवे नामो रे ॥ क०

॥ ३ ॥ वेटी धनशिरि तेहने रे, सुंदर शोना तन्न ॥

मात पिता जीवन समी रे, पातें परियल घन्नो रे ॥

॥ क० ॥ ४ ॥ तत्तु बिवाहने महोत्सवे रे, मुनि मज म

लिन शरीर ॥ आया देखी हर्षित मने रे, उठी धन
 शिरि धीरो रे ॥ क० ॥ ५ ॥ अशन पान वोहरावतां
 रे, आब्यो मल दुर्गंध ॥ मुह मचकोडी निंदा करे रे,
 कियो अशुन कर्म बंधो रे ॥ क० ॥ ६ ॥ तिहांथी म
 री इण पुर वरे रे, गणिका उर अचतंस ॥ गर्जने संगे
 तेहनो रे, सुख न रह्यो तनु अंशो रे ॥ क० ॥ ७ ॥
 नेडो को आवे नहीं रे, अरति धरे दुर्गंग ॥ जात मा
 त दुर्गंधपणो रे, नंखावे इण मागो रे ॥ क० ॥ ८ ॥
 अशुन कर्म इणो जोगव्यो रे, हवे लेहेरो सुख जोग ॥
 आव वरस स्त्री ताहरी रे, जोगवरो बहु जोगो रे ॥
 ॥ क० ॥ ९ ॥ ते कहे केम हुं जाणशुं रे, ते चढरो त
 म पूंठ ॥ कामनिशुं तुमे क्रीडतां रे, जिन वंदी नृप उ
 ठरो रे ॥ क० ॥ १० ॥ हवे त्यांथी ते वाजिका रे, लः
 आहीरणी काय ॥ लाले पाले निज पुत्री परं रे, जिहां
 तिहां कर्म सखायो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ हवे राजगृही
 पुरी कौमुदी रे, उत्सव देखण काज ॥ आवे ते नि
 ज मातशुं रे, यौवन लावन राजो रे ॥ क० ॥ १२ ॥
 नर नारी टोलां मिव्यां रे, त्यां महा मंत्री मगधेश ॥
 निशि कौतुक देखण जणी रे, आवे फेर विवेशो रे ॥
 ॥ क० ॥ १३ ॥ जीड वसें ते आहीरणी रे, उवे चुज

ग जग उग्यो, रखे सुणो तसु वाण ॥ नर नारी सहु
वश कियां, योजन वाणी वखाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ हुं तुज आगल शी कहुं केशरीया लाल ए देशी ॥

॥ शीख सुणी हवे तातनी बालेसर, रहे रोहणि
यो चोर रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ राजगृही पुरमे सदा ॥

॥ वा० ॥ करतो चोरी अघोर रे ॥ वा० ॥ लाल ॥

॥ १ ॥ मंत्रीसर हवे जे करे ॥ वा० ॥ सुणजो ते म

न लाय रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ ताते शीख दइ जिका

॥ वा० ॥ ते पण विफली थाय रे ॥ वा० ॥ लाल ॥

॥ मं० ॥ २ ॥ ग्रामागर पुर विहरता ॥ वा० ॥ समो

सखा जिन वीर रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ नर नारी बंद

न गयां ॥ वा० ॥ करवा पवित्र शरीर रे ॥ वा० ॥

॥ लाल ॥ मं० ॥ ३ ॥ चोरी करी आव्यो तिसे ॥ वा० ॥

बलतो तिणे आराम रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ श्रवण आं

गुलीये रुंधवी ॥ वा० ॥ कांटो विंध्यो ताम रे ॥ वा०

॥ लाल ॥ मं० ॥ ४ ॥ ते उद्धरवा वेगो जिसे ॥ वा०

॥ सांजलीयो सुर स्वरूप रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ पढुतो

पुर धनहर हवे ॥ वा० ॥ ए बात कहे जन नूपरें

॥ वा० ॥ लाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ राय हूकम मंत्रीसरु

विवेक रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ साते क्षेत्रे धन वावखो ॥ वा० ॥
 सील जावादि अनेक रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ मं० ॥ ११ ॥
 जंपे मंत्रीसर जाणीने ॥ वा० ॥ तें किम जाण्यो मुज
 दंज रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ तुंहिज चोर विसवावीशुं
 ॥ वा० ॥ ते नणे गुरु उवंज रे ॥ वा० ॥ लाल ॥
 मं० ॥ १२ ॥ कुण गुरु कहे जिन वीरजी ॥ वा० ॥
 ताम जणावे निज विरतंत रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ देई
 धन व्रत आदखो ॥ वा० ॥ पाली पढुंतो सर्गनी अं
 त रे ॥ वा० ॥ लाल ॥ मं० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ २६६ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हवे ठे सागरमांहि गुज, आदनपुर अनिरा
 म ॥ तिहां ठे आदन नरपति, राणी आदन नाम
 ॥ १ ॥ अंगज आई कुमार तसु, सवि गुण कला नि
 धान ॥ एक दिन तिहां आव्यो वही, श्रेणिकनो पर
 धान ॥ २ ॥ जेट देई नृपने मळ्यो, हरख्यो आदन
 चित्त ॥ पूठे कुंवर कवण नृप, कहे श्रेणिक मुज मि
 त्त ॥ ३ ॥ तेहतणा ए मंत्रवी, सुणी कहे आईकुमा
 र ॥ मंत्री तुम स्वामी तणे, कोइ नंदन ठे सुविचार
 ॥ ४ ॥ तिणसुं करिणुं प्रीत हुं, इम सुणि ते कहे वोल
 ॥ अम प्रचुने सुत ठे जिको, तसु मति सुर गुरु तोल ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी अलबेलानी देशी ॥

॥ अजयकुंवर नामे जलो रे, पणसें मंत्री सिरता
ज ॥ सुविचारी रे ॥ दान दया गुण आगलो रे लाल,
सोहे निज जुज राज ॥ सु० ॥ अ० ॥ १ ॥ आदन
सुत रंज्यो घणुं रे, दीये जातां तसु साथ ॥ सु० ॥
चेट जुड कही वीननी रे लाल, ए देजां तसु हाथ ॥
सु० ॥ अ० ॥ २ ॥ जेड राजगृह आविया रे, आपी
चेट उदार ॥ सु० ॥ संदेशां कहे अजयनें रे लाल,
चिंते ते तिणवार ॥ सु० ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुगनि पूरव
जव आसने रे, चरण करण विराध ॥ सु० ॥ तिणे
इण जव अनाये रे लाल, देजां उप्पति लाध ॥ सु०
॥ अ० ॥ ४ ॥ मुजगुं गुरु कर्माजिके रे, मित्रपणो न
करंत ॥ सु० ॥ तिण कागण जिन नांखिया रे लाल,
सगिखा सगिख गचंत ॥ सु० ॥ अ० ॥ ५ ॥ जिनप्र
तिमा जिन सागिखी रे, दर्शन सवि सुख काम ॥
सु० ॥ जेहजे प्रतिबोध देखतां रे लाल, जातिस्मरण
पाम ॥ सु० ॥ अ० ॥ ६ ॥ इम चिंतवी उपकरणसुं
रे, आपी मंजुमे जाव ॥ सु० ॥ प्रनिमा जिन युगा
दिशनी रे लाल, मंत्री ताम पठाव ॥ सु० ॥ अ०
॥ ७ ॥ ते नर तिहां आपे जड रे, हवे ते हरे विश

प ॥ सु० ॥ मंजूस उघाडे जेहवे रे लाल, तिहां जिन
 प्रतिमा देख ॥ सु० ॥ अ० ॥ ७ ॥ कुणें आनरण मु
 ज मोकळ्या रे, आगे राखी थाप ॥ सु० ॥ वली व
 ली तसु जोवतां रे लाल, जातिस्मरण प्राप ॥ सु०
 ॥ अ० ॥ ८ ॥ जातिस्मरणे जाणियो रे, हुं इहांथी
 नव वीज ॥ सु० ॥ नाम सामायिक कुटुंबकी रे, लाल,
 नगर वसंत सुणीज ॥ सु० ॥ अ० ॥ १० ॥ रमणी
 वंधुमती साथणुं रे, धर्म सुणी व्रत लीध ॥ सु० ॥ म
 हिला व्रतमां निरखतां रे लाल, राग नाचमें कीध ॥
 सु० ॥ अ० ॥ ११ ॥ मुज नाच तिणे जाणी करी रे,
 आणी मन संवेग ॥ सु० ॥ व्रतजंग तणे नयें तिणे रे
 लाल, अणसण लीधो वेग ॥ सु० ॥ अ० ॥ १२ ॥
 काल करी स्वर्गें गइ रे, हुं पण सुणी तसु वांत ॥
 सु० ॥ अणसण सुरपद पामियो रे लाल, चवि देश
 अनारय जात ॥ सु० ॥ अ० ॥ १३ ॥ मुज जिन प्रतिमा
 प्रति बोधियो रे, धन ते थनय सुदेश ॥ सु० ॥ तसु
 मलवा मन उमह्यो रे लाल, मागे पितानो आवेश
 ॥ सु० ॥ अ० ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ २७५ ॥


॥ दोहा ॥

॥ राय रखवाला राखिया, पांचसे राजकुमार ॥

र रे ॥ मु० ॥ तिए कारण थाजीविका, होशे इण
 आधार रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ इम सुणी वालक बोलियो
 बांधी राखीस हुं तात रे ॥ मु० ॥ सूत कांत्यो होयजे
 टलो,यो मुज मोरी मात रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ इम कही का
 चे तांतणे,ताततणां पग विंट रे ॥ मु० ॥ किम जाइस
 एम सुणी करी,देखी निज सुत मिंट रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ गाहा
 रस श्रवणे सुणी,तिम बली स्त्री हावजाय रे ॥ मु० ॥ कवि
 कछोल तिमैं कहा,वालक मुणमुण लाव रे ॥ मु० ॥ ७ ॥
 नेह विछूयो वचन सुणी,गणि तांतणां ते बार रे ॥ मु० ॥
 तेता घरे वरसो हवे, रेहवो आर्दकुमार रे ॥ मु० ॥ ८ ॥
 वरसे बोले व्रत लीयो, सेवक पणसैं चोर रे ॥ मु० ॥
 प्रति बोधि बलि युगमसुं, मंखलि पुत्र कठोर रे ॥
 मु० ॥ ९ ॥ पंथे गजबंधन ठोडवी, साथें तापस कीध
 रे ॥ मु० ॥ राजगृहिपुर आवीयो,वंदन जिणंद प्रसिद्ध रे
 ॥ मु० ॥ १० ॥ मुनिवर आयो सांजली,हवे श्रेणिक नर
 राय रे ॥ मु० ॥ मंत्री बहु जन वंदसुं,वंदे तेहना पाय रे
 ॥ मु० ॥ ११ ॥ कर जोडी श्रेणिक कहे, तुम दर्शन गज
 केम रे ॥ मु० ॥ मूकाणो बंधनथकी,मुनि कहे बलतो ए
 म रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ लोहतणां बंधन जिके,ते न थयाव
 जवंत रें ॥ मु० ॥ सूत्र तंतणना बंधणा,ते मुज कठिन

त्रीजो खंम हवे बोलखुं, सदगुरु करो सहाय ॥ १ ॥
 खीर खांम घृत त्रण मिल्खां, उपजे सरस सवाद ॥
 तिम ए त्रीजो खंम करुं, तजी थंगे परमाद ॥ २ ॥
 एक दिन प्रभुश्रीवीरजी, राजगृही उद्यान ॥ जब
 सायर तारण तरण, समोसखा वर्द्धमान ॥ ३ ॥
 श्रेणिक निज परिवारखुं, वंदन पढुतो तेथ ॥ परस
 द वार मिला तिहां, सुणवा जिनधर्म एथ ॥ ४ ॥
 त्रिण रूपे कोइएक नर, कर्ता प्रभुनी सेव ॥ रसीय
 छेहे जिन चरणखुं, निरखे निम नरदेव ॥ ५ ॥ अ
 ति कोपातुर नृप थयां, ङण अवसर प्रभु गय ॥ ठीके
 अजयकुमार तम, काजकसूगीयां आय ॥ ६ ॥ अनु
 कमे तव कोढी नणे, कर्ता प्रभुनी सेव ॥ मरिसु
 जीव अहजीव मरि, ममरि जावनहव ॥ ७ ॥ एम
 सुणी रुडो थाइसे, नगर निज नर नेडी ॥ ए नर
 जातो साहिजो, ते तमु जागा केडी ॥ ८ ॥ ते तत
 रूप उडी गयो, नृपने कहां उदंन ॥ पूजे श्रेणिक
 तेहनो, चरित्र नणे जगयंत ॥ ९ ॥

॥ दाज पहेजी चोपाइती देगीमां ॥

॥ नगर कोसंबीनामें जज्ञो, सत्तानिक गजा अति
 जज्ञो ॥ तिहां निवसे  सेटूक, निर्धन मूरख

गयो थयो काया सुख ॥ बली आब्यो निज घर ते
 देख, सवि परिजन कोढी सुविशेष ॥ १० ॥ हरण्यो
 विप्र विशेषे ताम, सविशेष जनने जंघे थाम ॥ मुज
 अचहीला फल तुम लह्यो, तव सज्जन बलतो इम
 कह्यो ॥ ११ ॥ डुष्टी तुज सम अवर न कोइ, दीगो
 नहि जन संताप्यो सोइ ॥ राजग्रहपुर आब्यो तेह
 पोलिया पासे रहे धरी नेह ॥ १२ ॥ एक दिन आ
 ब्या वीर जिणंद, जविक कुमद पडिवोहण चंद ॥ वं
 दन पोहोतो पोलियो ताम, द्विज स्थापी रखवालो
 गम ॥ १३ ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्यां बली डुग्गा देहरे, नखे घणो बल ताम ॥
 तास तृपा व्यापी घणूं, जल आरतें मरि ताम ॥ १ ॥
 जल आसृत फिण यावमें, उपनो जाइ जेख ॥ अन्य
 दिन थम आब्या बही, सुणी तसु थयो विवेक ॥ २ ॥
 जातिसमरण उपन्यो, मेमरने तिण काल ॥ थम वं
 दणने संचह्यो, हय हणियो गुर ताल ॥ ३ ॥ गुन
 नावे ते सुर थयो, डुङ्गरांक इण नाम ॥ इइ प्रशंसा
 तुम सुणी, आब्यो एणे गम ॥ ४ ॥ रस्तीय त्रमे क
 री वंदणे, चरचे थमारा पाय ॥ सुर परमारथ सद्गु

कह्यो, जंगवत करी पत्ताय ॥ ५ ॥ अमने परजव
 शिव दुस्ती, तुमने परजव नरक ॥ अजय जणी सुख
 विहुं जवे, सूरिय इत उत नरक ॥ ६ ॥

॥ ठाज बीजी ॥

॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो ॥ ए देखी ॥ वचन
 सुणी एम वीरनां, श्रेणिक दुःख थयो गाढो रे ॥ क
 जोडीने वीनवे, मुजने नरकथा काढो रे ॥ वचन
 एणी ॥ १ ॥ जिम हुं नरकें नवि पडुं, ते उपाय कह
 स्वामी रे ॥ जिन जांगवे कपिला कनें, दान दीवावे
 खधामी रे ॥ व० ॥ २ ॥ नृपति आर्वी मंदिरे, क
 जाने बोलावे रे ॥ सावन पीठे घेर्माने, दान दे मा
 ने जावे रे ॥ व० ॥ ३ ॥ वज्रती दामी एम जणे, न
 च काम हुं करीशुं रे ॥ पण ङण जव ङण हाथ
 साधुने दान न देखु रे ॥ व० ॥ ४ ॥ नेझ्यां वधटा
 ए जणी, कालकमुगिया जूप रे ॥ किणहि उपाय
 वि रहे, तव ते घाळ्यां कृप रे ॥ व० ॥ ५ ॥ नांप
 मनशुं महिप लइ, मार विमवावीमां रे ॥ चितान
 नृप देखीने, पजणे श्रीजगदीशां रे ॥ व० ॥ ६ ॥
 मे निकाचित धंधिया, ते तूं जांगव गजा रे ॥ ज
 तव्यता जाजे नहि, जो कर कोटि ङजाजा रे ॥ व

॥ ७ ॥ तिहांथी तुं होइस सही, अम सम पदम जि
 एंवो रे ॥ पद्मनाभ नामे जजो, सेवरो चोसर इरो रे
 ॥ ४० ॥ ८ ॥ हर्षित नृप प्रनुने नमी, पुर थाये ति
 ए कांते रे ॥ माती रूपे सर कंठे, मुनिवर एक निहा
 ले रे ॥ ४० ॥ ९ ॥ उयो केडे बांधीयो, मछ कावे सर
 कांते रे ॥ देइ प्रदक्षिण बीनवे, नूपति वचने मीठे रे
 ॥ ४० ॥ १० ॥ ए सुं दीमे साधुजी, ते कहे जयणा
 हेतें रे ॥ आवक को एहवां नहीं, जे पाप पुंण चेतें
 रे ॥ ४० ॥ ११ ॥ कंचल वेरायी साधुने, थाये नूप
 ति जेहवे रे ॥ चहुहटे गर्जणी साधवी, याचनी दीवी
 तेहवे रे ॥ ४० ॥ १२ ॥ ते पण वंदी जावशुं, ए तुम
 कारण केहे रे ॥ जिनशासननी क्षीजणा, मत दुए
 थावो गेहे रे ॥ ४० ॥ १३ ॥ सुतक कर्म करानियां,
 सम्यगुं रहां अम गेहे रे ॥ जाव अधिक जाणी करी,
 र प्रगळ्यां ते तेहे रे ॥ ४० ॥ १४ ॥ पनणो नरवर
 तुं, धन धन तुज अवतारो रे ॥ सुप्रसन्न गोलह
 गज दे, तेम अमूलक द्वारो रे ॥ ४० ॥ १५ ॥ ते
 रसे जे सांघरां, मूढो दाह उदारो रे ॥ इम कही सुर
 गें गयो, नरपति निज परिसारो रे ॥ ४० ॥ १६ ॥ ४४ ॥

(६९)

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस हवे एकदा, कालकसूरियो थंग ॥
पाप थकी बहु वेदना. उपनी जात अजंग ॥ १ ॥
तसु नंदन सुख कारणे. गीत गान सुख मेज ॥ सु
जि गंध तसु थंगने. बहु जेपे धमि हेज ॥ २ ॥ कीध
थोपथ बहु विधे. सुख न जहे कण मात्र ॥ सुजम त
दा मंत्रीजने. आवी जणावे वान ॥ ३ ॥ मंत्रिमर सु
णी एहवो, जांखे नेह उपाय ॥ निवक कंटक अरु
करो, जिम नेहने सुख आय ॥ ४ ॥ अशुचि यिजे
थंगे करो. अशुचि स्ववगावां रीर ॥ नीर अशुचि प
वो बली. जिम मुख जहे अरीर ॥ ५ ॥ ए उपाय पु
कखो, सुख पायो नम्र जीव ॥ पाप वजो नरकें गयो
पाढंतो सुख रीव ॥ ६ ॥

॥ दाज ब्रौजी ॥

॥ आदर जीव कृमा गुण आदर ॥ ७ ॥ ॥ ॥

॥ प्रत्यक्ष पाप तणां फल दया. सयगियाने दुःख
जी ॥ जे अशुचि दृग् परिदृग्तां. नेहजुं पाम्यो सुख
जी ॥ प्र० ॥ १ ॥ ग्यावण वगिया परिजन सधला
सहु कहं मायने ताच जी ॥ पाप उदय हुवे जेदने
ज्यागे, नव दृग् नवि आय त्र ॥ प्र० ॥ २ ॥ ग्यावण वि

वे सहु सयणां, स्वारथ विण नहि कोय जी ॥ स्वारथ
 थणसरतो जाणीने, सुत पण वेरी होय जी ॥ प्र० ॥
 ॥ ३ ॥ इण संसारे मोह्यो प्राणी, करे पाप कर्म बंध
 जी ॥ फल किंपाक तणां सुख पामे, जाणे नहि जा
 तंध जी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जरा मरण रोगें करी पूरित,
 देह थयिर संसार जी ॥ तो पण मूरख जीव न जा
 णे, नेत्र थकां थंधार जी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इण जव पा
 रथी विरुद धरावे, परजवे दुःख दातार जी ॥ कुंजी
 पाके पचतो प्राणी, सेहेतो दुःख थपार जी ॥ प्र० ॥
 ॥ ६ ॥ सयण तवे कोइ आडो न थावे, सहे एकलो
 निरधार जी ॥ इम जाणी जे पापथी विरता, धन ध
 न तहु थवतार जी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ हवे परिजन सहु
 मिलिने थायो, कहे सुलसने एम जी ॥ कुटुंब काज
 महिपां वध कर तुं, थमे लेश्यां पाप तेम जी ॥ प्र०
 ॥ ८ ॥ निज कुटुंब प्रति बोधन काजें, सुलसतर हणे
 पाय जी ॥ वांटी ल्योए वेदना माहरी, पल जर मुज
 न खमाय जी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ ते थया थसमर्थ वेद न
 ६५ , समजायो परिवार जी ॥ थनय वचने थयो
 आवक, पाले नित्त व्रत वार जी ॥ प्र० ॥ १० ॥

बोले पीजवाण युं, आरोहक हो तुमे थया अजाण ॥
 ए मूरख गणिका प्रत्ये, केम जांखो हो तमे मीगी वा
 ण ॥ आ० ॥ ४ ॥ द्विज तरुने दृष्टांतनी, तमे धारो
 हो निज हेंडे वाण ॥ केम दृष्टांत ठे तेहनुं, अम जां
 खो हो तुम चतुर सुजाण ॥ आ० ॥ ५ ॥ देवदत्त
 नामे जलो, द्विज पढुतो हो उत्तर दिस जाण ॥ त्यां
 तरु दीठ पलासनो, तसु फूजे हो मोह्यो मन जाण
 ॥ आ० ॥ ६ ॥ तस वीज जेइ निज देशमां, आणी
 वावे हो नित सींचे नीर ॥ वृद्ध घणुं तरु पामियो,
 पण न हुवे हो तसु फूज शरीर ॥ आ० ॥ ७ ॥ रुग्ण
 वडुठ एकदा, दे वन्हि हो तसु तरुने मूल ॥ जलणें
 जड जलतां थकां, ते ततरुण हो फूव्यो बहु फूल
 ॥ आ० ॥ ८ ॥ ए दृष्टांत इहां किणे, प्रीय कहेतां हो
 नवि माने जेह ॥ नेहनो संग निवारियें, जे मूरख
 हो करे तेहणुं नेह ॥ आ० ॥ ९ ॥ असुख हुवे पोते
 जिणे, ते कहिजें हो नेह प्रेत सनान ॥ नेह अथिर
 बली नारीनो, ते मारे हो विलटी वाव समान ॥ आ०
 ॥ १० ॥ एक धरे मनमां बली, एक निरखे हो नय
 णांती मेट ॥ एकणसुं कान वातीयां, एकणसुं हो
 मजती दे नेट ॥ आ० ॥ ११ ॥ एकणसुं गाली दी

ये, एकण्ठुं हो मलती मन हेज ॥ एकण पाय पखा
 लती, एकण्ठुं हो रमती सुख सेज ॥ आ० ॥ १२ ॥
 एकण्ठुं शयनां करे, एकण्ठुं हो पूरे संकेत ॥ एक
 ण्ठुं हिलिमलि रहे, एकण्ठुं हो मन कपर हेत ॥
 ॥ आ० ॥ १३ ॥ जिएमेंति मजे कामिनी, रहे नेहने
 हो होइ पानही जेम ॥ कूड करे जण जणयकी, तुं
 पियुढां हो मुज जीवन जेम ॥ आ० ॥ १४ ॥ धूता
 री जग धूतियो, पाडे मुग्धा हो लोकाने पास ॥ च
 तुर नरां चित्त चोर ले, नवि पूरे हो बली नेदनी आ
 श ॥ आ० ॥ १५ ॥ नारी मार आपणो, नारी राचे
 हो नीचाने संग, नारी प्रव्यक्त राक्षसी, तिणें तजीयें
 हो नारीनो संग ॥ आ० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ७१ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ बली जेम ब्रह्मदत्तने कियो, अज गरुड सुख
 जाग ॥ किम अज ब्रह्मदत्तने कियो, ते कहां मुज व
 ड जाग ॥ १ ॥ कथा कहु सुण मित्र तुं, कंजिल नय
 र निवास ॥ बारमां चर्की तिहां बसे, ब्रह्मदत्त यश
 वास ॥ २ ॥ एक दिन नृपने अपहृत्यो, एकज चप
 ल तुंग ॥ पदुनो बनस्वम पाधरो, पूत्रे दल चतुंग
 ॥ ३ ॥ तिण आप्या निज नगरमें, पदुनो नृप निज

वास ॥ घर थाव्यो जाणी करी, राणि कहे मृडनास ॥

॥ ढाल पांचमी वीर बखाणी राणी

चेलणा जी ॥ ए देशी ॥

॥ सरस सुंदर एक तरु विपे जी, जे तुम दीगो को
 ६ थाज ॥ वन खंममांही कोतुक नवो जी, तव
 दे श्रीनरराज ॥ १ ॥ अचरिज कहो प्रिय मों नणी
 जी, जिम मन हर्षित थाय ॥ अचरिज जे वन देखि
 यो जी, ते कहे राणीने राय ॥ अ० ॥ २ ॥ हुं वन
 मांही पढोंतो जिमे जी, मनोहर सरोवर पाल ॥
 त्यां वेगो जइ तरु तले जी, शीतल ठांही निहाल ॥
 अ० ॥ ३ ॥ नारी तिहां एक नागणि जी, रूप गुण
 करीय अथाग ॥ थावीयो तसु पासे बीयो जी, गोणत
 नामे नाग ॥ अ० ॥ ४ ॥ ते रति करतां देखियां जी,
 असमंजस में थाचार ॥ जाणीने ते में ताडियां जी,
 कसादिकां दीया प्रहार ॥ अ० ॥ ५ ॥ ते अदंसण
 वेदु थया जी, थाविया निज निज ठाम ॥ एम क
 ही नृप कवियो जी, शरीर चिंता तणें काम ॥ अ०
 ॥ ६ ॥ तिणे कृण ततकृण प्रगटियो जी, सुरवर को
 ई एक ॥ जंपे जय नरवर तमे जी, नित पालो सु
 विवेक ॥ अ० ॥ ७ ॥ पूठे चक्रवर्ति ते नणी जी, तुं

कृष्ण माहरे गण ॥ आरियो किम कहो ते सहजु जी,
 हम कहें ते सुर बाण ॥ अ० ॥ ७ ॥ नरपति आज
 तुम बन गया जी, जे दीक्षां सरोवर पाल ॥ नारी दुबे
 ते माहरी जी. आर्यो कहाँ बच बाल ॥ अ० ॥ ८ ॥
 देख हो प्रिय अरुण विना जी, मुज विडंवि ब्रह्म
 दत्त ॥ बर बालो प्रिय माहमं जी, नहिं तो तजिगुं
 प्राण ऊत ॥ अ० ॥ ९ ॥ हम मुणी बच निज ना
 रीनां जी, माग्या तुज साटोप ॥ आरियो मंदिर ता
 हरे जी, मन धरी अनि घणों कोप ॥ अ० ॥ १० ॥
 निसुण्यां में तुं नव नणीजी, गणी आगज विरनंत ॥
 नारी चरित्र नणी शुद्ध लहि जी, आरियो मुज को
 पनो अंत ॥ अ० ॥ ११ ॥ वृको हवे दुं तुज नणी
 जी, लहो वर नरपति कोऽ ॥ सर्व जीव नारा लहुं
 जी, सुर कहें दीयो वर मोऽ ॥ अ० ॥ १२ ॥ पण
 जो जीवित आशा धरं जी, तां मत कहें किल वृक ॥
 सुर गयो निज स्थानकनणी जी, गयने कही सहजु
 गूक ॥ अ० ॥ १३ ॥ इव नरपति सुखगुं रहे जी, जो
 गवे जोग अपार ॥ जखीविनय कहें नारीना जी, च
 रित न जानें पार ॥ अ० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राजायें कखा, गुन लेपन निज अंग
 ॥ देखी कहे घर कोइला, निज प्रीतमने रंग ॥ १ ॥
 थोड़ो सो प्रिय मोनणी, ए लेपन दें थाए ॥ नहि तो
 दुं निश्चे करी, ततक्षण ठंभीश प्राण ॥ २ ॥ पति प
 नणे राजा थकी, वीहतो न शकुं थाए ॥ इम सांज
 ली नूपति हस्यो, राणी पूछे वाए ॥ ३ ॥ किण का
 रण नरपति कहो, हास्यानो मुज हेतु ॥ जो कहुं
 सुंदर मरम ए, तो मरण लहुं दुःखहेतु ॥ ४ ॥ वज
 ती राणी इम नणे, जो मरम न नांखीश एह ॥ तो
 दुं मरीशुं इण क्खणे, धरी मनमें संदेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल ठछी ॥ सुण मेरी सजनी रजनी
 न जावे रे ॥ ए देशी ॥

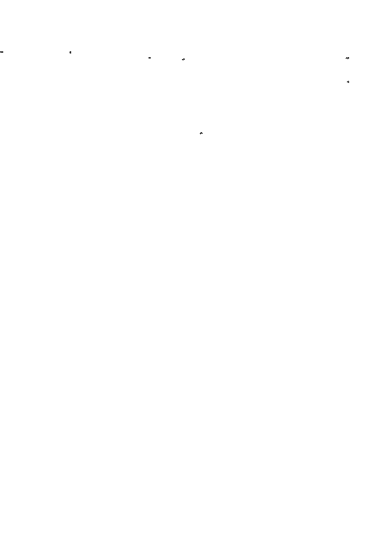
॥ हवे कहे राजा कहि सु यातां रे, चिंता करावी
 राणी सातारे ॥ कमही चाख्यो चक्रवर्ती जेहडे रे,
 कांइ न करे नर नारीने नेहडे रे ॥ ह० ॥ १ ॥ लीधा
 साथे राणी राजा रे, प्राण तजे नृप स्त्रीने काजा रे ॥
 ऐ? ऐ? दुर्जय देखो मोहनी रे, सुख दुःख पामे जीव
 लुब्धो मोहनी रे ॥ ह० ॥ २ ॥ तब परिजन नर
 जंपे जूजूठ रे, नगरमांहे कोजाहल दूठ रे ॥ इण क्ख

देखे जय संचारा रे, - अज्ञा कहे अज प्रत्ये सुवि
 वारा रे ॥ ६० ॥ ३ ॥ इण जवथी इण पूली मुज
 नागो रे, थाणी थापो तव बोले ठागो रे ॥ ए जव
 वरशे नूप तुरंगा रे, अवर लीये तसु दुए तनुजंगा
 रे ॥ ६० ॥ ४ ॥ कहे इम ठाजी हुं मरीश थाश थ
 नाणी रे, ते कहे मुजने स्त्री मजगे प्रेम अघांणी रे ॥
 नितुर पुरुषा जग तुम जेहारे, पूली काजे जे दीये स्त्री
 जेहा रे ॥ ६० ॥ ५ ॥ निर्गुण कंतो दुए जिण नारी
 रे, तेहना गुण सहु गले हितकारी रे ॥ नारी दोहि
 ली जग सहु जाणे रे, नारी विना नर कोइ न गाने
 रे ॥ ६० ॥ ६ ॥ नारी जिमावे नोजन ताजां रे, जि
 ण घर नारी तसु सुख साजां रे ॥ नारी जणे वली
 सुजक्षण पुतारे, नारि विना नर घरमें नूता रे ॥ ६०
 ॥ ७ ॥ बलतो बोले अज एम बोला रे, नारी तुं
 कांइ पुरुष न तोला रें ॥ पुरुषां नारी बली बली
 थाये रे, पुरुष विना स्त्री परघर जाये रे ॥ ६० ॥ ८ ॥
 नारी दूषण अति बद्ध थाये रे, पुरुषतणां गुण सहु
 को गाये रे ॥ पर घर देखों पति विण नारी रे, स्व
 मण पीतण करे विचारी रे ॥ ६० ॥ ९ ॥ मुख देखे
 नहि कोइ प्रजाते रे, जिण तिण जांते तजे शुजनाते

रे ॥ जे नर स्त्री वश हुए दिन राते रे, तेहनुं घर स
 दु जाये दिन जाते रे ॥ ह० ॥ १० ॥ पानही जेहव
 पुरुषां नारी रें, पुरुष पराक्रम धर लीजें सारी रे ॥
 रुपां आगल तृण सम नारी रे, पुरुषतणां गुण श
 खें नारी रे ॥ ह० ॥ ११ ॥ तव कहे नारी सुण हित
 कारी रे, कोप निवारो दुं दासी तुंहारी रे ॥ प्रत्यक्ष
 खो ए नगरी राया रे, महिला काजे तजे निज क
 या रे ॥ ह० ॥ १२ ॥ अज बोले दुं तुं पशुजाती रे
 कर्म एह नृप मूरख वाती रे ॥ चक्रवर्ती जातो पं
 एम संजले रे, कनक माला लश्याती अज गले रे
 ह० ॥ १३ ॥ चित्त चिंतवे तसु हितोपदेशा रे, आब्य
 घरे सुख रहे नरेशा रे ॥ मिठक कहे करी हित गज
 पाले रे, ब्रह्मदत्त जिम मन तूं संजाले रे ॥ ह० ॥ १४ ॥
 मिठकथी सुणी एवी चेलणा रे, मरणथकी हवे वि
 मी ततक्षणा रे ॥ करी संतोष तजी मन रीशा रे, हा
 पहिरे करी पूरवे जगीसा रे ॥ ह० ॥ १५ ॥ सर्व ॥ १२० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे सांकेतिकपुर नलो, तिहां नृप चंडवतंस ।
 सुदंसणा प्रियदंसणा, राणी दोइ प्रशंस ॥ १ ॥ अत
 क्रमे तेहने सुत थया, सागरचंड मुनिचंड ॥ चंड तर्ण



मोदक नृपनैं दीयो, तिणैं बंधवने दीध हो ॥ शु०
 विष धारित सोचन गले, तेह सचेतन कीध हो
 शु० ॥ सं० ॥ ७ ॥ नरवर दासी मुखयकी, ज
 सवि परमव हो ॥ शु० ॥ माताने कहे एहवो, तें
 कीधो अनघ हो ॥ शु० ॥ सं० ॥ ८ ॥ राज देइ
 आदरे, पूठ्या केइ साधु हो ॥ शु० ॥ आब्या
 वजेणयी, तिहां ने मुनि निवाध हो ॥ शु० ॥ सं०
 ॥ ९ ॥ कुंवर पुरोहित नृप तणां, ते तिहां करे
 श हो ॥ शु० ॥ इम सुणी शीख जणी गयो, नि
 मुनि गुरु आदेश हो ॥ शु० ॥ सं० ॥ १० ॥
 दक्ष विनय चर्या, गय पुगंदिन गेह हो ॥ शु०
 धर्मज्ञान मोटे मरे, आची दे मुनि तेह हो ॥ शु०
 ॥ सं० ॥ ११ ॥ कुंवर सुणी तिहां आविया, तेडी
 निवर दूर हो ॥ शु० ॥ नृत्य कगावे मुनि कनें, थ
 वजावे दूर हो ॥ शु० ॥ सं० ॥ १२ ॥ ताजनेगें ते
 ने कोपियो, जाली ताडे वेह हो ॥ शु० ॥ थंग सं
 टाली बली, आवे वन मुनि तेह हो ॥ शु० ॥ सं
 ॥ १३ ॥ जाणी नृप निज बंधुनी, एह कजा व
 थाय हो ॥ शु० ॥ बंदी जपे तुम करो, सुत व
 र सुपसाय हो ॥ शु० ॥ सं० ॥ १४ ॥ ये उजेंना

नि कहे, मूकं जो लीये दीख हो ॥ शु० ॥ रात सुणी
 ते मुनि हूथा, विचरे निज गुरु शीख हो ॥ शु० ॥
 सं० ॥ १५ ॥ नृप सुत व्रत पाले जलो, विज सुत
 करे मुनि हीज हो ॥ शु० ॥ सुर हूथा प्रतियोधणो,
 करी संकेत सजीज हो ॥ शु० ॥ सं० ॥ १६ ॥ सर्व ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राजगृह शेर धन, नंडु ठे तसु नार ॥ ए
 क मेशिणुं प्रीत तसु, विप्र जीव निणिवार ॥ १ ॥
 चवि मेशिण सुत ते हूयो, मेवाणी सुता पस्य ॥ नि
 जसुत शेरगणिने दीये, सुता लीये तसु हूय ॥ २ ॥
 शेर घरे वयतो कला, जणे नाम मेश्रु ॥ सुहणे
 सुर प्रतियोधियो, पण न हुवे व्रत नळ ॥ ३ ॥ कन्या
 परणी थार तिणे, हींमे सिविकारुट ॥ देव अधिष्ठि
 त मेय तव, कहे घरणि प्रने मूढ ॥ ४ ॥

॥ ढाल थारमी ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए देशी ॥ सुत हुवे तो
 इम करुं, कहे मेशिण ए सुज ॥ प्रीतम ॥ इम सुणी सुत
 घरे थारियो, देव कहे प्रतियुक्त ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १ ॥
 मेतारिज कहे नृप सुता, परणावी निज गाण ॥ प्री० ॥

थापे तो व्रत थादरुं, वार वर्षे थवसाण ॥
 सु० ॥ २ ॥ करतो मणिमय मींगणी, थज थापे
 तास ॥ प्री० ॥ तिणि रयणे जरि थाल ते,
 नृप पास ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ३ ॥ जेट देइ नरपति सुता,
 मागे निज सुत हेत ॥ प्री० ॥ राय पुरुष थपमानियो,
 पण थापो मणि मेत ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ४ ॥ एता
 यण किदांयकी, तुज पूजे इम मंति ॥ प्री० ॥ वाण
 करे मणि मींगणी, ते दे मुज मन खंति ॥ प्री० ॥
 सु० ॥ ५ ॥ दीयो थज मंत्री घरे, थशुचि करे डुंगेप
 ॥ प्री० ॥ वेग्वी तसु पात्रो दीयो, जाण्यो सुर
 ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ६ ॥ मंत्री कहे हे मगधपुरी,
 वैजारनी पास ॥ प्री० ॥ कारवि थाण समुद्र जल, नि
 ज नंदन शुद्ध काज ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ७ ॥ जेम दे
 वारुं नृप सुता, सुग्मान्निथ मय हूय ॥ प्री० ॥ शुद्ध
 करी मेतायने, परणावे नृप धूय ॥ प्री० ॥ सु० ॥ ८ ॥
 थामंवर मोटे करी, परणा राजकुमार ॥ प्री० ॥ थार
 श फली सुरसान्निधे, दिन दिन सुख सुखकार ॥ प्री०
 ॥ सु० ॥ ९ ॥ तव मद्विजासुं विलसतां, वार वरसं
 लगे जोग ॥ प्री० ॥ तात मंदिर दियो नारिने, पति रंहे
 वाने जोग ॥ प्री० ॥ सु० ॥ १० ॥ सर्व ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे भेतारज कुंवरने, स्वप्नांतर कहे देव ॥ सं
यमने तुं सल्ल दूइ, जन्म सफल कर देव ॥ १ ॥
सुर जिम सुख नित बिलसतां, बोझां बग्न चांची
श ॥ महिलाणुं करि मंत्रिणां, संयम ले सुजगीश ॥
२ ॥ ग्रामागर पुर विचरतां, आध्या केइ साध ॥ व
नमाला आधि कहां, भेतारज सुख लाध ॥ ३ ॥
कुदितण पग्विगर्थी, पढुतां साधुने पाम ॥ नव म
हिलाणुं निण जियां, संयम मन उवांस ॥ ४ ॥

॥ दाज नवर्मा ॥

॥ वे वं मुनिवर विहरण पांगुल्या रे ॥ १ दर्श ॥ साधु
शिरोमणि ए जगिमज्जदीये रे, श्री भेतारज गुणवंत
रे ॥ परम दयागम सागर समा रे, दीपे उपगम जास
महंत रे ॥ सा० ॥ १ ॥ नव पुखधर मुनि ने थयो रे,
मुनि एकार्की विहार रे ॥ अन्यदिन राजगृही पुरे रे,
थटतो धीरज गुण धार रे ॥ सा० ॥ २ ॥ एकदा आध्यां
घर सांताग्ने रे, नेह कर निण वार रे ॥ नरपति
जिनपूजन जणा रे, शांवन जव अनि सार रे ॥ सा०
॥ ३ ॥ ते कारज वसे गयो मंदिर रे, कोंच गले सवि
जव तान रे ॥ आधियां निज जव देखे नहि रे, तन

पुढे मुनिवर साम रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ करतो कोंच नणी
 वयारे, बोलाव्यो बोले नहि साध रे ॥ बाधे करी ति
 र तिणे वींटीयो रे, तव तिण मुनि विण थपराध रे
 ॥ सा० ॥ ५ ॥ ततक्षण लोचन युगल खरी पड्यो रे
 सहे वेदना मुनि असमान रे ॥ शुन ध्याने करी केव
 ल लही रे, पडुतो मुनि निर्वाण रे ॥ सा० ॥ ६ ॥
 ण थवसर तिहां दारु विदारतां रे, लागो कोंच गु
 तसु खंम रे ॥ पंग्वी तिण वेदनथी वीहितो रे, नांख्य
 जव ते सद्गुण थखंम रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ ते जव देख
 मनमे संकियो रे, मुगर्णकार सदोष रे ॥ जन मुनि
 वात सुणी तिसे रे, उपज्यो नखरने अति रोष रे ॥
 ॥ सा० ॥ ८ ॥ निजसेवकने तेडावीने रे, दूकम क
 इम मगधेश रे ॥ चोर तणी परें तासु चिंटीने रे
 लावो वेहेला मुज आदेश रे ॥ सा० ॥ ९ ॥ हवे ते
 सेवक स्वामी दूकमथी रे, आवे जेहवे तेहनं गेह रे
 ॥ परिजन किणही कह्यो जायने रे, हवे चिंते बल
 सोनी तेह रे ॥ सा० ॥ १० ॥ राय कहे एने मारवो
 रे, कृपि घातकने सकुटुंब रे ॥ इम सुणी तिणें व्रत
 आदखो रे, जय वसे सघलो गोडी विलंब रे ॥ सा० ॥
 ११ ॥ नूप नणे हवे तूं दड दूजे रें, नहितो निश्वे लहीश

विनाश रे ॥ इति परें जेह क्षमा धरे रे, ते पामे शिव
पुर वास रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ लीजै नाम सदाय प्रह
समे रे, जावे प्रणमुं पय अरविंद रे ॥ नवजल तरियें
जेहनं ध्यानछुं रे, वंदे बलि बलि प्रह कवि चंद रे ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अरुमर दवे एकदा. वृटो द्वार उदार ॥
सांधी शके नहि कोइ नर. पडत दिगवे त्याग ॥ १ ॥
नृपति पडत दिगवियों. मां नगर मोजार ॥ जाख
लहे मांघे जिको. इम मुनि इक मणिकार ॥ २ ॥ अरु
लख दीधो पेहेलथी. अधजय पात्रे जाग ॥ मांघे द्वार
नजी जुगत. धरी मनने वनगग ॥ ३ ॥ पुरी मांघ्यो
द्वार तिण. नयने परनव जाय ॥ कोटंबो जे द्वार ते,
दीधो नृपने आय ॥ ४ ॥ मणिकारक मग्नि थयो. वानर
तिहां वनमांझ ॥ देग्यो निज वर मनरे. पुरव नव
मूरठांहि ॥ ५ ॥ बर्जी वगे मृत मझ करे. अरु ज
खे सुवाइ ॥ पुरव नव दुं तम तणां. तात दुतां नृगदा
इ ॥ ६ ॥ तुम सुख मरी वानर थयो. बर्जी पुत्र कपि
तेह ॥ गये आप्यो छुन मना. नवि दीधो बर्जी तेह ॥ ७ ॥

॥ दाल दशमी ॥ जोशीडानी देशी ॥

॥ रुठो कपि जोवे घणा रे, ठज इण अरुमर एम.

॥ चेलणा जलक्रीडा जणी रे, उमहिं मनने
 ॥ १ ॥ सुगुण नर जोवो अचरिज एह, कपि
 जेह ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ वन अशोक गड रागय
 सखियां के समुदाय ॥ जिहां ठे जल खंको
 दीगां आवे दाय ॥ सु० ॥ २ ॥ निज
 रे, दीये दासीने हाय ॥ तेह सवे पडले धरे रे, जाण
 आपणो नाथ ॥ सु० ॥ ३ ॥ दासी अशोक तरु तज
 रही रे, हरख्यो मन सारंग ॥ साखा अंत ते संचरी
 रे, हार हख्यो हरिंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ निज
 आणी दीयो रे, हार गयो नृप जाण ॥ अचरिज
 णी कहे एहवो रे, लहे दिन सात प्रमाण ॥ सु० ॥
 ॥ ५ ॥ नहितर तम होखो सजा रे, नगर जमे मंत्री
 ॥ नर नारी जोतो रहे रे, चिंत धरे निश दीश ॥ सु०
 ॥ ६ ॥ एहवे पद दिन बोलिया रे, हार न पायो केय
 ॥ तव सतम वासर निशा रे, लीये पोसो गुरु जेय
 ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिहां सुस्थित सूरिसरु रे, साधु महा
 व्रतधार ॥ सुव्रत धन जोनक मुनि रे, परवरिया परि
 वार ॥ सु० ॥ ८ ॥ जिनवर तुजणा ने तुले रे, करे
 काचसग्न निश धीर ॥ रंगरमें रे, उपस
 गंजीर परिजन नृप वी

हतो रे, द्वार दीयो हरि ताम ॥ घनतो ते मुनि कंत
 ठवे रे, निशि शशिज्योत अनिराम ॥ सु० ॥ १० ॥
 प्रथम पहोर निशि बोजीयो रे, शिवमुनि आये देय ॥
 विनयवंत गुण आगरू रे, करवा गुरुनी सेव ॥ सु० ॥
 ॥ ११ ॥ गुरु कंठे द्वार देखीने रे, मुनि शंख्यो तिण
 वार ॥ निशही वाणे जयं जणे रे, तय कहे अनपकु
 मार ॥ सु० ॥ १२ ॥ कुण जय तुमने केहनो रे, मु
 नि कहे पुरव हूय ॥ सावधान दुइ तुमे मुणो रे, जि
 म कहुं तिम अनुनय ॥ सु० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ १९०

॥ दोहा ॥

॥ पुरव पुण्य उदय करी, नर गृह धन थिर आय ॥
 पुण्य फिरंतां ततकृणे, यतन करंतां जाय ॥ १ ॥ धन
 विण को माने नहि, पगिजन दीधो ठेह ॥ चंदर पूरणा
 कारणे, कामकरां परगेह ॥ २ ॥

॥ दाज अगियारमी ॥

॥ रुढीरे रेवारण रामजा पदमणी रे ॥ ए देशी ॥
 यस्तता उजेणी नगरी चाणिया रे, निर्धन शिव शिवद
 त्त ॥ ये नार्ई धन खाटवा रे, सोरतवेशें पत्त ॥ १ ॥ मं
 ब्रीसर धनयी अनय वधे रे, निश्वे सेंती एह ॥ जण
 लोने परिजन सहू रे, दुए थरि हणमे जेह ॥ मं० ॥

ए आंकणी ॥१॥ त्यां धन बहु मेली करी रे, नवली
 डिहि निवेश ॥ वारे वासं नित प्रत्यं बांधतां रे, आव
 निजपुर देश ॥ मं० ॥ ३ ॥ ते धन जसु करे तसु दुव रे
 परमारण परिणाम ॥ तिण ह्मणे ते धन मुज कने रे,
 जाणी अनरथ ठाम ॥ मं० ॥ ४ ॥ वात कही में निज
 वंधुने रे, तिणें पण जांखी तेम ॥ नगर समीपें इद
 जले रे, नांख्यो ते धन एम ॥ मं० ॥ ५ ॥ घरे आब्या
 परिजन मल्यां रे, नवली गले ने मीन ॥ जहू जाणी
 धीवर तसे रे, साहे ते अति दीन ॥ मं० ॥ ६ ॥ तिणें
 वेंच्यो अम्ह वहिनने रे, हायें तिणें अम नत्ति ॥ कारण
 मद्य विदारतां रे, देखी नवली करी गुन ॥ मं० ॥ ७ ॥
 ते देखी माता कहे रे, ठांनुं ने इस्पुं कीध ॥ वेहिन जणे
 कांइ नहीं रे, ते आवी धन गिह ॥ मं० ॥ ८ ॥ ते तिणें
 आयुध आहणी रे, जय वस नवली तेह ॥ पडी देखी
 अम उजखी रे, अनरथ कारण एह ॥ मं० ॥ ९ ॥
 काल कीयो माता तसें रे, दीधो वन संस्कार ॥ सं
 स्कारी आब्या निज मंदिरे रे, जाण्यो अथिर संतार
 ॥ मं० ॥ १० ॥ चिंतातुर वेठा थकां रे, आब्यो तसे
 वनपाल ॥ जाख्यो अमने एह्यो रे, वन आब्या ध
 मपाल ॥ मं० ॥ ११ ॥ जाइ वंद्या त्यां किणे रे, सु

शी देशन-जलधार ॥ जय सतुइमांही जीव बुढां
 रे, जिनधम करत चकार ॥ मं० ॥ १२ ॥ सुणी देश
 न थापी बहिनने रे, वेइ सहु घर नार ॥ संयने सहु
 गुरु केंद्रे रे, लीधो संयम नार ॥ मं० ॥ १३ ॥ ए पूरव
 जय संजरी रे, में घोली जय वाच ॥ हरख्यो अजय
 नणे तुमे रे, जांख्यो तेहिज साच ॥ मं० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कया कही शिव साधु इम, जावे करी गुरु सेव
 ॥ मुनि संयारे आर्वापो, वली गुणजां हवे देव ॥ १ ॥
 बीजे पहोर निजा तणे, आवे सुव्रत साध ॥ चरण
 करण नित साचवे, आगम गुणे अगाध ॥ २ ॥ पो
 सहसाजा पेसतां, देखे गुरु कंठ दार ॥ महा जय मु
 ख इम जणे, पुत्रे अजयकुमार ॥ ३ ॥

॥ दाज वारमी ॥ निवर्ती तथा यननी दशी ॥

॥ पनणे मुनि निज वाग्वंत, अजय सुणे करी म
 न एकंत ॥ देजें अंग देश कहीजे, ग्राम कोव्राग तिहां
 अम रहीजे ॥ १ ॥ अन्य दिन धाड पढी तिण गामे,
 नाठा लोक दजे दिश ठामे ॥ पर खूणें हुं पण रह्यो
 ठानो, चार तवे घर आय निजानो ॥ २ ॥ प्रिय गयां
 जाणी नारी वाजे, त्यां मुज साथे हुं तम खोजे ॥ ३ ॥

इ पल्लिपतिने तिणें दीधी, सुंदर देखी अपणी कीधी
 ॥३॥ नय नांग्यो जाणी वश्यो गाम, लोक मळ्या परि
 यण सहु ताम ॥ स्वजन वचन करी हुं तव प्रेस्यो, रम
 णी आननमें मन घेस्यो ॥ ४ ॥ हुं चली पढुतो पात्रें
 जाम, तिहां वसियो मोकरी घर ताम ॥ रहता दित
 गया केता जेहवें, घेरीने कही वात में तेहवें ॥ ५ ॥
 इण पात्रेने घरणी मुळ, मुज आगम तुं कहेजे गुळ ॥
 ते जाइने तेने जणावे, वलतो घेरीशुं एम कहावे ॥ ६ ॥
 बाहिर जाओ आज पल्लिपति, प्रीतम आवागे मेहें
 ण जनी ॥ तिण अवसर मंध्या समे संकतो, ज
 घणे तमु मेहे पढुतो ॥ ७ ॥ नारी नयणे ने
 रख्यो, हुं चिन अंतर अनिहि दग्ग्यो ॥ तव प
 ति न हुतो मेहें वेग्यां मेजे मुज नेहें ॥ ८ ॥
 च चंचल चरण मुज धोये तव नाग पत्नीपति
 ये ॥ हुं उवियो शय्या तत्रें ताम, मेनापति मे
 जाम ॥ ९ ॥ धोती तसु पय वाने प्रेमे
 होय तो तुमे करो केमे ॥ कहे पत्नीपति
 जगतें, हुं आपुं तेहने वं शुन जगतें ॥
 देखे निजवटी स्त्री नीळ्यो, ज
 हीपडो ॥ जे में

मारुं तेह ॥ ११ ॥ तिणें चखुसेन करी देखायो
 न देवे मुज पछीशें निहायो ॥ पछीशे मुज घांप्यो
 म, थाळे घांवे पंजरुं ताम ॥ १२ ॥ तर्जून करी
 ण्यो मुज रातें, ते सूतां सेजें निज वातें ॥ थापी
 था थाने वंधन, मोकलां कीधां तिणे मुज तंधन
 ॥ १३ ॥ पछिश् पासे थाप्यो जेहवे, तेहनो लज
 यो में तेहवे ॥ निज नारी जगवी कहायो थाम, वो
 शीश तो इहां मारीश ठाम ॥ १४ ॥ चाप्यो दुं ते क
 ने थारें, ठायल टुकडा नाखें मागे ॥ गहगहतो
 हीयडे थनुराग, मुज सम थवर नहि बढनाग ॥
 ॥ १५ ॥ इम जातां निशि बोली सारी, पुंठ पछीप
 तेकी थसवारी ॥ बाहार देखीने मन शंक्यो, वंश
 जालमांहे तव ठीप्यो ॥ १६ ॥ तिण पथे चलि था
 यो सेनापति, थसि हणी चोरंस कीधो मुज जति ॥
 नारी लइ ते पाठो बलियो, वन वानर एक मुजने म
 लियो ॥ १७ ॥ मुज दीठे मूर्ठां तिणे पामी, जही चे
 तन वन थोपथी कामी ॥ थाणी घसी जावे मुज घा
 यें, नव पल्लव सद्गु श्रंग मुज थाये ॥ १८ ॥ सिद्धक
 में नामे दुं सार, वेद दुतो तुज गोवल सुविचार ॥ म
 री वानर थयो दुं इण ठाम, तुज दीठां जाति समरण

इ पत्निपतिने तिणे दीधी, सुंदर देखी थपणी कोधी
 ॥२॥ नय नांग्यो जाणी वश्यो गाम, लोक मझा पति
 यण सद्गुताम ॥ स्वजन वचन करी दुं तव प्रेसो, रम
 णी आननमें मन देखो ॥ ४ ॥ दुं चली पदुतो पति
 जाम, तिहां वसियो मोकरी घर ताम ॥ रहता दिन
 गया केता जेहनें, बेरीने कही वान में तेहनें ॥ ५ ॥
 इण पाजेने घरणी मुझ, मुज आगम तुं कहेजे मुझ ॥
 ते फाड़ने तेने जणावे, वलतो बेरीशुणम कहावे ॥ ६ ॥
 बाहिर जाओ आज पत्निपति, प्रीतम आगो गेहें ति
 ण जनी ॥ तिण अगम मंथ्या ममे संकतो, जतन
 यणे तसु गेहे पदुतो ॥ ७ ॥ नारी नयणे नंदे नि
 रख्यां, दुं चित्त अंतर अनिद्रि दग्ग्यां ॥ तव पत्नीप
 ति न दुतां गेहे, बंसाणां संगे मुज गेहे ॥ ८ ॥ चि
 न चंचल चरण मुज धोये, तव नारां पत्नीपति पत्नी
 ये ॥ दुं वखियो गह्या ननें ताम, मंसापति सेने वख्यो
 ताम ॥ ९ ॥ धोती नगु पय धावे प्रेम, मुज पति
 हांप तो तुमं करो कंम ॥ कहे पत्नीपति करी बहु
 जगते, दुं थापुं नेहने तुं सुन सुगने ॥ १० ॥ नगु
 देगे निजवटी स्त्री नाश्या, जाण्यां नाव नगु दग्ग्यां
 होवटो ॥ जंवे छियां मे हास्या पद, उदा निशानु

झा पावुं जी ॥ व० ॥ ८ ॥ खन मूकी संवे उरी
 जी, शुलिधृत नर मंसो जी ॥ ते कापे पडती तिने
 जी, देखी लोही थंशो जी ॥ व० ॥ ९ ॥ में तव धंको
 जोइने जी, दीगो तसु नयकारी जी ॥ ते नासी कुं
 बीहीनो जी, त्रागो अमि बीमारी जी ॥ व० ॥ १० ॥
 पुर पोले हूं आवीयो जी, गह्यो बाहिर जेसे जी
 आवी महिजा ग्वज मां जी, ने जइगइ निण वेसे जी
 ॥ व० ॥ ११ ॥ त्यां पडिया हूं वित्तवतो जी, पुर
 री इम जेपे जी ॥ अमे साकिनगुं अने जी, कापु
 सी इहां मंरे जी ॥ व० ॥ १२ ॥ जे बाहिर ने तेइका
 जी, जे मांइ नेइ अमाग जी ॥ नुज वरु जि
 बाहिर गह्यो जी, निण नवि गह्या मारो जी
 ॥ व० ॥ १३ ॥ गेद म हर इम हरी हीयो जी,
 व मगति नर राध जी ॥ आषा ह मगग परे जी
 महिजा मजवा काम जी ॥ व० ॥ १४ ॥ पत नर
 ती मद पीयता जी, मामु ममणा मंन जी ॥ में जइ
 पे पर बागण जी, दीगो दीवह कंन जी ॥ व० ॥ १५ ॥
 सामु पुत्री प्रनं कइ जी, एइ मांस अति भीगो जी
 ॥ नुज जनाइनां कइ जी, गुना वयन अजि धीगो
 जी ॥ व० ॥ १६ ॥ ने सांजती परे आनियो जी, व

त जीधो बैरागे जी ॥ ते संनरि अति नय नख्यो
जी, में नितिहिने लागें जी ॥ व० ॥ १३ ॥ स० ॥ २५३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कथा कही धन मुनि इत्ती, मंत्री हरख्यो चित्त
॥ काम सफर पासैं कीयो, धन मुनि ते सुविनीत ॥
१ ॥ विषययकी मन वाजियो, साथे मुक्तिनो पंथ ॥
जाव धरीने बंदिऐ, एहवा साधु नियंय ॥ २ ॥ चोथे
पहोर निसातणे, जानक नाम मुनीश ॥ मुखे जया
तिजपं जणे, पूछे तब मंत्रीम ॥ ३ ॥ जयातिजपं का
रण किसे, जाखो स्वामी साच ॥ साधु कहे मंत्री सु
णो, जयातिजपंनो वाच ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ मोरा प्रीतम कहे कांइ अचरिज वात ॥ ए दे
शी ॥ बङ्गेली नगरी बसे, धनदत्त कूत्री नाम ॥ नारी
गुनइ तेहने, तसु सुत हुं गुणवाण ॥ १ ॥ सुण मं
त्रीसर महिला चरित्रनी वात, मूढ न जाणे धात ॥
सु० ॥ ए थांकणी ॥ मुज सुंदरी ठे श्रीमति, रूपवंत
गुण जाण ॥ मुज पग जल थोइ पीवती, गुनमति ब
हती थाण ॥ सु० ॥ २ ॥ नारी नटुयानी परें, धरती
नव नव वेश ॥ नव नव पुरुषां प्रीतडी, कुल धर्म

राखे न लेश ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्त्री पोयी दोइ ए,
 हां नही ठे साच ॥ जो ए साच दुबे किहां, तो
 डी मुज वाच ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक दिन नाखे म
 नणी, प्रीतम पूरो थाश ॥ मृग पूंठ मंस नखवा
 णी, मुज मन अधिक उल्लास ॥ सु० ॥ ५ ॥ में क
 ते किहां मिले, ते कहे राजगृही ठाम ॥ श्रेणिक न
 पतिने थने, मोरी मृग निज धाम ॥ सु० ॥ ६ ॥ इ
 सुणी वचन निज नारीनां, चालियो धरी अतिराग
 पड़ोतो दुं बाहिर आराममें, त्यां खेले वेश्या बाग
 सु० ॥ ७ ॥ इण समे खेचर को तिहां, आच्यो न
 ने माग ॥ वेश्या देखे क्रीडती, ले चव्यो अपणे जा
 ॥ सु० ॥ ८ ॥ तसु परियण कलरव कीयो, सर सांध्य
 में साही ॥ लाग्यो कर खेचरतणें, वेश्या पडी स
 मांही ॥ सु० ॥ ९ ॥ जल उतरी आवी बही, माग
 का मुज पास ॥ कहे हाजो केजि घरें, स्वामी दुं तु
 दास ॥ सु० ॥ १० ॥ केजिघर लइ जाइने, गणिक
 करी मुज सेव ॥ पूजे किहां वशो स्वामिजी, आच्य
 इहां केम देव ॥ सु० ॥ ११ ॥ प्रेम यात कही सद्गु
 में वेश्याने ताम ॥ ते कहे सरल थगो धरौ, प
 नारी-कुसीजा श्याम ॥ सु० ॥ १२ ॥ जो

ती दुवे, तां वल्लन हुए नाह ॥ पर हुंती काढे नहि,
 कूडो करीय उत्साह ॥ सु० ॥ १३ ॥ नृप मृग मांस
 किम कर चढे, कष्ट दुवे सुविशेष ॥ मारण ठल तुम
 मांनियो, थाप विमात्ती देख ॥ सु० ॥ १४ ॥ तव व
 लतो में, नांखियो, सुण वेश्या सुविशेष ॥ मुज रम
 णी चुके नहि, कुजवट राखे रेख ॥ सु० ॥ १५ ॥
 अमूर दुवे चालो पुरी, वेश्या कहे धरी राग ॥ नग
 रमांहि पेतते तिसे, कीधो मद मन राग ॥ सु० ॥
 १६ ॥ गुज यशे गणिका घरे, थावियो मन वध्यास
 ॥ वेश्या कहे तव मां जणी, थावो रायने पास ॥
 ॥ सु० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ २७४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्यां नव वंदे नाचिगुं, श्रेणिक राज हजूर ॥
 तुमे पण देखो थावीने, नाटक प्रकट पदूर ॥ १ ॥
 हुं नावीश इम करी रह्यो, ते पढोंती नृप पास ॥ मृग
 पुंठ लेवा कारणे, जाण्युं पुगी थाश ॥ २ ॥ लीणा
 जब नाटक रसे, रखवाला सद्गु ताम ॥ मृग पुंठ का
 द्या तिणे तुरत, नय गोपविया ताम ॥ ३ ॥ रखवा
 ले गृही तुरत ते, कहि नूपने विरतंत ॥ रंग जंग स
 ह्यो नहि, केद कीयो एकंत ॥ ४ ॥ दीठी गणिका ना

चती, हाथ जाय हरखेव ॥ रीज्यो भ्रेणिक तसु दीये,
 वर तीनुं नर देव ॥ ५ ॥ पहेले वर मागे इच्छुं, मुज
 पुछ पारधी तेह ॥ दीजे जीवित एहने, मुज जीवित
 दीयो एह ॥ ६ ॥ बीजे वर मुज एह प्रीय, राजा माने
 तेह ॥ बीजे वर ठोडावीने, गणिका आण्यो गेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ घणो काज
 त्यां रही करी, गणिका पूठी तेमो रे ॥ जो मुज शी
 ख दीयो हवे, तो जाचं गृह देमो रे ॥ १ ॥ सुणी
 मंत्रिसर एहयो, बीतक वातनो नंतो रे ॥ नारि चरित्र
 तणो सही, किणही न पायो अंतो रे ॥ सु० ॥ २ ॥
 ए आंकणी ॥ मुज साथे गणिका थइ, निज पुरी आ
 व्यां तामो रे ॥ वनमें वेश्या राखीने, निशि आव्यो
 गृह यामो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ खज सखाइ हाथ लेइ,
 पुरुषछुं दीठी नार रे ॥ डराचारी में देखीने, रीसे ह
 एयो ते जार रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ खान खणी ते माटी
 यो, कपर कीधो पीगो रे ॥ ते वृत्तांत जइ कह्यो, ग
 णिकाने जन दीगो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ पाठा राजगृहि आ
 विया, तिहां रही चली दिन केइ रे ॥ हुं वळेणी
 आवियो, हरख्यां भाय प्रिय वेइ रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ में

न नेहो रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ महिला चरित निहालियो,
 लीधो संयम जारो रे ॥ तिणो जयातिजयं जण्यो, पूव
 जय संजारो रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ इण कणो सूरज उगियो,
 नमी मुनि अजयकुमारो रे ॥ बाहिर थायो तव पैसि
 यो, गुरु कंठे ते हारो रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ तिण जया
 दि वचन जण्यो, मुनि नवि थाण्यो लोको रे ॥ सफल
 जनम जग एहनो, वंश वधावे शोको रे ॥ सु० ॥ १८ ॥
 तेह लेइ घर थावियो, नृपने दे मंत्रीसो रे ॥ चेलणा
 मन हर्षित थयो, सवि जन दे थाशीयो रे ॥ सु० ॥
 ॥ १९ ॥ वाचक अजय मानिक्य वरू, साधु गुणे सु
 विचारो रे ॥ तास शिष्य एम वर्णवे, लक्ष्मीविनय सु
 खकारो रे ॥ सु० ॥ २० ॥ त्रीजो खंन पूरो थयो,
 एटले इण अधिकारो रे ॥ गरुथाना गुण गावतां, इ
 ए थात्म उद्धारो रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २०२ ॥

॥ इति श्री अजयकुमार प्रबंधे, चेलणा नंदा वेंव
 द्वार गोजक वायक, सुर संबंध ततु संगगत ब्रह्मदत्त
 वर संप्राप्ति, सुलत प्रतिबोध मेताय चरित्र, द्वार स
 धान सुस्थित सुरि शिष्य चतुष्टय कथा, द्वार प्राप्ति व
 र्णनो नामा तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

दूत ॥ रा० ॥ १ ॥ दे कागल दूत कहे कर जोड, सङ्ग
 थाउ सद्गु थालस ठोड ॥ रा० ॥ सामंतिक चौदह
 नूपाल, ते पण आव्या सुणि तत्काल ॥ रा० ॥ २ ॥
 थढार टंकी हाथ जालो कवाण, जलजले तीरे नरो
 जायांण ॥ रा० ॥ सीरोही सङ्ग करो करवाल, अरि
 बलने बहे जाणे काल ॥ रा० ॥ ३ ॥ गुरज कदारी
 ने रणतोम, खंजर वूरिय धरा बहु जोंम ॥ रा० ॥
 गेंमानी ल्यो उत्तम ढाल, जिम दुए अरि खगनी पा
 ल ॥ रा० ॥ ४ ॥ अणियालां चालां ल्यो पूर, दार
 गोली ल्यो नरपूर ॥ रा० ॥ जीव रुपीने करो जिनस
 ल, पाखर सङ्ग करो तत्काल ॥ रा० ॥ ५ ॥ तोप दवा
 ने बली बाण, रामचंगी ने कूह कवाण ॥ रा० ॥ व्या
 पारी लीधा बली साथ, कविजन बांले जय गुण गा
 थ ॥ रा० ॥ ६ ॥ नरपति नारु लीधा साथ, सराफ
 लीधा परखणने थाथ ॥ रा० ॥ तंबोली लीधा राजा
 न, ते बेंचे नित बीडां पान ॥ रा० ॥ ७ ॥ . . .
 साये गुरुनी वाम, लीधा जोयी गणितने काम ॥ रा० ॥
 सुकन राज शास्त्रना जाण, ते पण लीधा ये ४६
 मान ॥ रा० ॥ ८ ॥ बागिया चौसरणां तिंधिपा
 साथ थवा सामंत नूपाल ॥ रा० ॥

नायक जेह ते पण सज्ज यथा धरी नेह ॥ रा० ॥ १० ॥
 फोजदार नायकनी जोड, ते पण प्रणम्या वेकर
 जोड ॥ रा० ॥ चतुरंग सेना सबल मंमाण, खल दल
 देखी न मंमे प्राण ॥ रा० ॥ १० ॥ चतुरंग सैन्यतणां
 गुण जाण, कहे कवियण हवे तेह वखाण ॥ रा० ॥
 एहवी सेन सजी निज राय, हवे सुणजो एहनो जिम
 थाय ॥ रा० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निज निज सेना लेहने, आव्या नगर उज्जेण ॥
 प्रणम्या चंमप्रद्योतना, चरण कमल हरखेण ॥ १ ॥
 गुंन मुहूर्ते गुंन वासरे, देइ नगारे तोर ॥ चढियो चं
 मप्रद्योत नृप, दल वादल चिहुं उर ॥ २ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग सिंधुडो ॥

॥ नणे मंदोदरी दैत्य दशस्कंध सुण ॥ ए देशी ॥

॥ चढयो नृप चंमप्रद्योत थरि जीपवा, नुरत
 नेशान वाजां यजायां ॥ चढत पाइ सुणे खूर सन्ना
 इ सजी, फटकमे चटकशुं थावी धाया ॥ च० ॥ १ ॥
 सीस सिंदूरिपा हाथिया सज कृपा, प्रबल मद पूरि
 या नीर फरणा ॥ नमर गण गुंजता छत्र दल पाड
 ता, चालता हालता मेघवरणा ॥ च० ॥ २ ॥ सुंद

बलालता दीसता परवता, हाथिया करत दाता ॥
 लोला ॥ घंट वाजे गले एकठा सवि मझे, वीर ॥
 नेक करता कलोला ॥ च० ॥ ३ ॥ वंत बग ॥
 अधिक शोनावता, बीजली शीश अंकुश विराजे ॥
 दलकनी ढाल ने शीश चामर ढले, गडडता गाजत ॥
 मेघ गाजे ॥ च० ॥ ४ ॥ हाथिया पाखर्या फांज ॥
 गे धर्या, गेप गता ग्हे दीह गता ॥ चंम प्रघोत ॥
 जा तणें कटकमें, जाय दोड जांय गज राज माया ॥
 ॥ च० ॥ ५ ॥ वेग वंगाल काडमीर कोंकण तणें ॥
 कंवोज कावुत नांवा नुगा ॥ अचल ननगप्या पं ॥
 न पाणीय्या, वेग नुग्मान गुथा म्वांगा ॥ च० ॥ ६ ॥
 जल नता नेत्री कडवशना नपन्या, नदन मुख पात ॥
 लां नाग जाडा ॥ पीतडा नीलडा मयज कंवोजडा ॥
 किवजिया गतडा ने किडाडा ॥ च० ॥ ७ ॥ दूसरा ॥
 दूसरा दिगडिया कावुया, दंताजा वसला मयज मोडे ॥
 ॥ अंग जम पातजा गेन गता रडे, वेखनां नृपति ॥
 राजान मोडे ॥ च० ॥ ८ ॥ वरन वेग पाखर्या कां ॥
 ज थारें धर्या, चालता नाणी ॥ विग्राम जलिया ॥
 एदवा अथ वडुण राजा तणें, कटकमें मदन्य ॥
 ॥ च० ॥ ९ ॥ गीत सावजिया मोन गुण

गियां, रंगीयां पंच नवरंग रागें ॥ बंध जसु खंगियां
 जसु वंकियां, सूर सोहे पण्य अधिक वारें ॥ च०
 ॥ १० ॥ ते गज्यां तावने तेजरा तोडवे, हाकवे पर
 दातां हीकहाला ॥ एकयी एकडा थावि दलमें खडा,
 शूरीर बांकडा सुनट पाला ॥ च० ॥ ११ ॥ बोल
 बोले खरा तेज अति थाकरा, करे काच शीशी जिसी
 हक काया ॥ सामने काम संग्राम शूरा करे, मरतां
 न धारे जिके मोह माया ॥ च० ॥ १२ ॥ सबल कं
 पाल मुंठाल जिन साजिया, लोहमय टोप थाटोप
 धारा ॥ पंच हथियार ने हाथ बाधें जिडे, जलजला
 जीम सम पाजिहारा ॥ च० ॥ १३ ॥ तीर तरकस
 धरा अजंग नट थाकरा, नहस जोधार संग्राम शूरा ॥
 घंमघ्योत राजा तणे कटकमें, सात क्रोड साथ पा
 एक पूरा ॥ च० ॥ १४ ॥ चक्र चारें करी जेह चाजे
 छपरा सरस नेजा सुरंगा ॥ जरह जोसण त
 नार पूरा जया, जोतिया सरस तेजी सुरंगा ॥ च०
 ॥ १५ ॥ घनघमे पुपरा अश्व गजे फावता, एकयी
 क पर्ये अथ चाजे ॥ जारव चेर थ जिया घंम निज क
 , सटक सां कटक हिव चढीय चाजे ॥ च०
 ॥ १६ ॥ परहरे घोर निशान बाजा सुरे, फोज

उजालता दीसता परवता, हाथिया करत हाजा ह
 लोला ॥ घंट वाजे गले एकठा सवि मले, वीर घंट
 नेक करता फलोला ॥ च० ॥ ३ ॥ दंत वग उपता
 अधिक शोचावता, बीजली शीश थंकुश विराजे ॥
 ढलकती ढाल ने शीश चामर ढले, गडडता गाजता
 मेघ गाजे ॥ च० ॥ ४ ॥ हाथिया पाखस्या फोज था
 गें धर्या, रोप राता रहे दीह राता ॥ चंद्र प्रद्योत रा
 जा तणें कटकमें, लाख दोइ शंख गज राज माता
 ॥ च० ॥ ५ ॥ देश बंगाल काश्मीर कोंकण तणां,
 कंबोज काबुल तीखा तुरंगा ॥ अचल उत्तरपथा पव
 न पाणीपथा, देश खुरसान सूधा खरंगा ॥ च० ॥ ६ ॥
 जल जला तेजी कछदेशना उपन्या, वदन मुख पात
 लां जाग जाडा ॥ पीलडा नीलडा सबज कंबोजडा,
 किवलिया रातडा ने किहाडा ॥ च० ॥ ७ ॥ धूसरा
 दूसरा किरडिया काजूया, हंसला वंसला सबज सोहे
 ॥ थंग जस पातला रोस राता रहे, देखतां नृपति
 राजान मोहे ॥ च० ॥ ८ ॥ पवन वेग पाखस्या फो
 ज थागें धर्या, चालता जाणी चित्राम लखिया ॥
 एहवा अश्व उज्जेण राजा तणें, कटकमें सहस्र पंचा
 श संख्या ॥ च० ॥ ९ ॥ शीश सारंगियां मोन सुचं

गीयां, रंगीयां पंच नवरंग रागें ॥ बंध जसु खंगियां
 जसु वंकियां, चुर सोहे धातु अधिक बागें ॥ च०
 ॥ १० ॥ ते गज्यां तावने तेजरा तोडवे, हाकवे पर
 जनां हीकहाला ॥ एकथी एकडा थावि दलमें खडा,
 शूवीर बांकडा सुनट पाला ॥ च० ॥ ११ ॥ बोल
 गोप्ते खरा तेज थति थाकरा, करे काच शीशी जिस्ती
 टूट काया ॥ सामने काम संग्राम शूरा करे, मरंतां
 न पारे जिके मोह माया ॥ च० ॥ १२ ॥ सबल कं
 बोल मुंगल जिन साजिया, लोहमय टोप थाटोप
 धारा ॥ पंच हथियार ने हाथ बाधें निडे, नलनला
 नीम सम पाजिहारा ॥ च० ॥ १३ ॥ तीर तरकस
 धरा थजंग नट थाकरा, सहस जोधार संग्राम शूरा ॥
 धंमप्रद्योत राजा तणे कटकमें, सात क्रोड साथ पा
 यक पुरा ॥ च० ॥ १४ ॥ चक्र चारें करी जेह चाले
 जले, कपरा सरस नेजा सुरंगा ॥ जग्द जोसण त
 णे नार पुरा जह्या, जोतिया सरस तेजी तुरंगा ॥ च०
 ॥ १५ ॥ यमधमे बुधरा थथ गले फावता, एकथी
 एक पर्ये थय चाले ॥ जाख वे रथ लिया चंम निज क
 टकमें, सटक मों कटक हिव चढीय चाले ॥ च०
 ॥ १६ ॥ घरहरे धोरे निशान बाजां धुरे, फोज रची

तुज सामंतक फेरिया रे, सघला माहरे तात रे ॥ च० ॥
 तिण कारण लेख मोकळ्यो रे लाल, कहेवा गुह्यनी
 वात रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ४ ॥ धन दऱ्हे नृप वश की
 यो रे, ताहरो सघलो साथ रे ॥ च० ॥ कहे संग्राम
 ने थवसरे रे लाल, बांधी देशां हाथ रे ॥ च० ॥ रू०
 ॥ ५ ॥ मासीपति तुं माहरे रे, सगण महोटी नृप रे
 ॥ च० ॥ तिण कारण में दागियो रे लाल, निज पर
 नो ए स्वरूप रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ६ ॥ में कहियो तुज
 हित थके रे, जो तुज संशय होय रे ॥ च० ॥ तो तुं
 तेह खणावीने रे लाल, प्रत्यक्ष नयणो जोय रे ॥ च०
 ॥ रू० ॥ ७ ॥ लेख इसो मंत्री लखी रे, मूक्यो पुरुष
 ने साथ रे ॥ च० ॥ तिणें पण जाऽ नेहनें रे लाल,
 दीधो हाथो हाथ रे ॥ च० ॥ रू० ॥ ८ ॥ बांधी नृप
 मन शंकियो रे, खणि दीठां दीनार रे ॥ च० ॥ नृप
 ति जय व्रांत होऱ्हे रे लाल, नातो थऽ थसवार रे
 ॥ च० ॥ रू० ॥ ९ ॥ श्रेणिक तमु केडो कीयो रे, लुंटे
 हय गय रय सार रे ॥ च० ॥ ते पढोंतो थापण पु
 री रे लाल, लऽ जीवित उद्धार रे ॥ च० ॥ रू० ॥ १० ॥
 जे सामंतक वागिया रे, बली जे सुजट महंत रे ॥ च० ॥
 कुल थाकंद करतां थकां रे लाल, थाव्या नासी त्वं

च० ॥ रु० ॥ ११ ॥ ते कहे तुं कीयो तुमे रे,
 तुम वंच रे ॥ च० ॥ ते बोले न करां थमे
 ए सवि थनय प्रपंच रे ॥ च० ॥ रु० ॥ १२ ॥
 करी परचावीयो रे, सामंतक निज राय रे ॥ च० ॥
 लुंही गया रे लाज, सडुको निज निज
 ॥ च० ॥ रु० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ६० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन चंद्रप्रद्योत हवे, बेसे सजा समझ ॥
 बाज बहेतो थमरपें, ठे कोइ माहरे दह ॥ १ ॥ थ
 नपनणी ते पांधीने, आपे जे मुज थाण ॥ तो बाहुं
 वेर माहुरं, जीवित जन्म प्रमाण ॥ २ ॥ बोले एक
 वेश्या तिहां, दुं इण काम समझ ॥ राय कहे जे जोइ
 ए ते तुं कहे परमछ ॥ ३ ॥ तव वेश्या बलती नणे,
 मुऊ वात ॥ धर्म कपट विण थनयनी, न
 मुखे कांइ धात ॥ ४ ॥ तिण कारण एक वरसनी,
 आपो थवधि उल्लास ॥ आवकनो धर्म सीखलुं, उजम
 छुणी पात ॥ ५ ॥

॥ दोहा चौथी ॥

॥ सीखण सीखण चेलणा ॥ ए वेशी ॥

॥ वो वेश्या तरुणी नजी, धरी आवक बुद्धि ॥ छ

रुणी पासे थावीने, शीखे समकित शुद्धि ॥ १ ॥ ए
 जग सदुच्य असास्वतो, बोले मीठी वाच ॥ कूड कप
 ट कहो कुण लखे, गुरुणी जाणे साच ॥ ए० ॥ २ ॥
 तिणें शीख्यां गुरु कन्हें वेगे नवतत्त ॥ क्रिया करे का
 उसग धरे, देव गुरुनी नत्ति ॥ ए० ॥ ३ ॥ हवे थावे
 ते वही करी, राजगृही उद्यान ॥ साथे रुद्धि बहु ले
 स्ने, परिवार असमान ॥ ए० ॥ ४ ॥ पुरमां थावी
 ते वने, नमवा जिन प्रासाद ॥ श्रेणिक कारिय देहरे,
 पेठी निसही करी आदि ॥ ए० ॥ ५ ॥ इव्य पूज करी
 वंदिया, दश त्रिक साचवी हेव ॥ तिण दूणे मंत्री था
 वियो, धरी पूजनी टेव ॥ ए० ॥ ६ ॥ मंत्री मांहे दे
 खी ते, रह्यो चैत्य डुवार ॥ धर्म सुदृढ जाणी आविका,
 तसु व्याघात विचार ॥ ए० ॥ ७ ॥ जाणी वंदी ते उ
 परमी, आव्यो संशय सत्त ॥ जंणे तसु गुण रंजियो,
 दरिसेण पुण्ये पत्त ॥ ए० ॥ ८ ॥ तुम कुण आव्या कयां
 थकी, किण कारण एथ ॥ ए कुण साथ दीसे सती,
 ते कहे अजयने तेथ ॥ ए० ॥ ९ ॥ उज्जेणी नगरी
 वसां, जश मोरो नाम ॥ विधि वश प्रीतम माहरो,
 थयो परजव ताम ॥ ए० ॥ १० ॥ पुत्र वधू ए माह
 रे, वर लावण्य रूप ॥ विधि वश ते पण पुत्रने, थयो

॥ ए० ॥ ११ ॥ कठिनं कर्म जग पाडुया,
 ॥ लघ्या जाय ॥ वैरागे मन वालियो, ॥ इम सुणि
 ॥ जाय ॥ ए० ॥ १२ ॥ तिण, कारण पहिलो थमं,
 ॥ निज वित्त ॥ तीर्थ यात्रा करती थकी, संप्र
 ॥ ॥ इहां पत्त ॥ ए० ॥ १३ ॥ एम सुणी अजय निमं
 ॥ ॥ जोजनने तेह ॥ आज थमे उपवास ठे, तिथि
 ॥ ॥ कहे जेह ॥ ए० ॥ १४ ॥ मंत्री नणे मन उल्लसी,
 ॥ ॥ आवो हो प्रजात ॥ अति आग्रहें करी मंत्रीने, मानि
 ॥ ॥ पण वात ॥ ए० ॥ १५ ॥ तेडी जिमाडे मन रली,
 ॥ ॥ वसन थनेक ॥ संतोपी साहमण नणी, मंत्री धरी
 ॥ ॥ विवेक ॥ ए० ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॥ हवे बीजे दिन तिणें चली, नोतखो मंत्रीने था
 ॥ ॥ धर्मठले ते पण ठव्यो, पांतरियो तिहां जाय ॥
 ॥ १ ॥ जिमाडी मंत्रीशने, पाइ मद चंइहास ॥ सुतो
 मंत्री तिहां कियो, करी गणिका वेसास ॥ २ ॥ ठाम
 ठाम राखी दूती, रथ पंरुतिनी ठोड ॥ तिणे ठवी वे
 श्या मोकले, थंग थालत सहु ठोड ॥ ३ ॥ हवे ग
 णिकायें थाणीयो, निज पुर थनयकुमार ॥ थाप्यो
 चंमप्रयोतने, गणिका लहे सत्कार ॥ ४ ॥ तिणें पा

ल्यो कठ पिंजरे, तोपण न करे खेद ॥ जे विधातार
शिर लख्यो, तेहनी धरे उमेद ॥ ५ ॥ गोड गोड न
मोकल्या, श्रीश्रेणिक नरराय ॥ सहु फरी पावा आ
विया, खबर न लाधी कांय ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ धीरज जीव धरे नहीं जी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रेणिक चिंतातुर ययो जी, हीयडो दुःख जरा
य ॥ सुणी माता धरणी ढली जी, थंगज दुःख न ख
माय रे ॥ मंत्री तो विण घडी रे न जाय ॥ ए थां
कणी ॥ १ ॥ हा ! वत्स हवे तुं किहां गयो जी, ए
वहुं दइ थम दुःख ॥ दे दरिसण तुं आवीने जी, ज्युं
थम पामुं सुख रे ॥ मं० ॥ २ ॥ तुं ठे पाणी मठ
ज्युं जी, मा पितु बिलवे दोइ ॥ नयणे देहु आंसु ऊ
रे जी, धीरज घडीय न होय रे ॥ मं० ॥ ३ ॥ प्रजा
लोक थाक्रंद करे जी, तेहना गुण संजार ॥ हा ! मं
त्रीसर तुऊ विना जी, थमने कुणथाधार रे ॥ मं० ॥
॥ ४ ॥ घडी एक रहेतो नही जी, मा पितु थुं तूं दूर
॥ आज कियां गयो एकलो जी, दइ थमने दुःख पूर
रे ॥ मं० ॥ ५ ॥ कृण माता धरणी ढले जी, कृण
सचेती थाय ॥ समजावे सखियां मली जी, बिलवे
वइ वइ धाय रे ॥ मं० ॥ ६ ॥ हितवत्सल मावित्रनो

$$\frac{1}{2} \left(\frac{1}{2} \right) = \frac{1}{4}$$

11

3 7

9

Address:

15

•

—

25

रेहतो थको, न धरे मनमां दुःख ॥ निज नारिगुं ति
 हां कियो, नोगवतो रहे सुख ॥ ३ ॥ किम आवी ते
 इहां कियो, सुणजो तास विचार ॥ करमें सुख दुःख नो
 गवे, जीव इणे संसार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ कुंवर इसो मन चिंतवे ॥ ए देशी ॥ जे परणी
 खेचर सुता, अजयकुंवर धरी प्रेम ॥ शिवादेवी ते किये
 आणीनें, ते आवी हो इहां कियो एम ॥ १ ॥ शील सु
 दृढ पाव्यो जिणे रे, वली पायो हो निज कंत ॥ जी
 वित जावे नवियण सांजलो रे, नय आणी हो परज
 वनो तंत ॥ शी० ॥ ए आंकणी ॥ २ ॥ मानीता मं
 त्रीशने, देखी मुऊ कित्ता रोप ॥ विद्य सिद्ध चंमालणी,
 वश करी हो दान सदोष ॥ शी० ॥ ३ ॥ शूजीगुं अ
 धिको कह्यो, शोकानोरे किलेश ॥ अणख अदेखाइ करे,
 दाक्षिणता हो न धरे ते लेश ॥ शी० ॥ ४ ॥ साइण
 नी परें सेखे, वर वशकरण विशेष ॥ कर्म वसें पाठा
 पडे, सहे पोते हो ते कोडी किलेश ॥ शी० ॥ ५ ॥ जो
 स्वारथ सीजे नहीं, तो मारे जरतार ॥ पीये नहितो
 ढोलवे, ए साचो हो दृष्टांत विचार ॥ शी० ॥ ६ ॥ दा
 सी मुखे ते एम कहे, तेम करी कोइ मंत ॥ अग्रिय

हुये मंत्रीशने, जेम सोकां हो होये एकंत ॥ शी० ॥ ७ ॥
 कौपी विद्याने बसें, पुरमांहे तिण मारि ॥ जाणी मा
 तमी प्रते, इम पनणे हो मंत्रीश विचार ॥ शी० ॥ ८ ॥
 ॥ ते कहे तुम घरमें अठे, नारी करे ते मारि ॥ रुधिर
 नित मुख दाखवे, ते पापणि हो ते तेषिवार ॥ शी०
 ॥ ९ ॥ ते देखी संजावीने, मंत्री तास कलंक ॥ तेह
 नजावी तेहने, तिण टाळ्यो हो जननो आतंक ॥ शी०
 ॥ १० ॥ देश सीम ठोडी तिणें, करती अतिहि विजा
 प ॥ दोष नहि इहां केहनो, चित्त चिंते हो मुज करमनो
 व्याप ॥ शी० ॥ ११ ॥ दवदंती सीता सती, रुपि द
 तादि अनेक ॥ तेणीयें पण दुःख जोगव्यां, तो मुजने
 हो हवे केहो विवेक ॥ शी० ॥ १२ ॥ तिहां तसु ए
 क तापस मल्यो, उजखते लइ साथ ॥ वळेणी पडुचा
 बीने, दीये शिवदेवीने हो तापस हाथ ॥ शी० ॥ १३ ॥
 सोक तणी करतव्यता, कूडो जाणी कलंक ॥ ते सा
 ये सुख जोगवे, तिहां मंत्री हो नित अजय निःशंक
 ॥ शी० ॥ १४ ॥ चंद कहे सहु ध्रम फलें, सीजे वं
 ठित काम ॥ निकजंकी दुइ थापणो, बली पायो हो
 जीवित पियु आम ॥ शी० ॥ १५ ॥ सर्व ॥ ११६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे ठे राजें तेहने, चार रतन सुविचार ॥
 शिवा गज अनिलगिरि, थग्रि जीहू रखसार ॥ १ ॥
 थो दूत ठे तेहने, ते पण सरस रतन ॥ ए चारे ग्रहा
 जणी, मंत्री कीधो मन्न ॥ २ ॥ बुद्धि पतायें संपने,
 सहु मन वंठित जोग ॥ थापद सहु दूरे टले, लाने
 वंठित जोग ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग धाहडीआशा ॥ थयवा
 कंतडे देशावर गोरीरे गम कीयो रे ॥ ए देशी ॥

॥ बुद्धि फले नरने इण जगतमें रे, जुयो हीपडे
 विमास ॥ दुर्जन पण सहु सज्जन दुवे रे, लहे सयने
 जगवास ॥ वृ० ॥ १ ॥ लोहजंघो लेखवा हवे रे, हवे
 ते मेले राय ॥ लोहजंघो जग वन्म जणी रे, वार वार
 नीग पाय ॥ वृ० ॥ २ ॥ तसु गमनागमने करी रे,
 चिंते लोक मखेद ॥ दिन ग्रने चाले कोम शोरे, जार
 जणावे जेद ॥ वृ० ॥ ३ ॥ निणे माग्यो ए सही रे,
 तसु संयत्न करी दूर ॥ एक विष अहि मोदक ठवे रे,
 तिहां किणे ने जम्पूर ॥ वृ० ॥ ४ ॥ माग चजतां न
 विनयना गमें रे, ठोडे संयत्न जाम ॥ निज ठीके करी
 नेहने पात्रियो रे, युज वाने त्रिहुं गम ॥ वृ० ॥ ५ ॥

अण जिम्यां ते थापियो रे, प्रणमे नरवर पाय ॥ पूढे
 नमस्ति दीसे थाज तुं रे, किण कारण विठाय ॥ बु०
 ॥ ५ ॥ नूपनणी हवे ते कहे रे, सहु भारग विरतंत ॥
 ते पण तढी अजयने रे, पूढे हेतु तुरंत ॥ बु० ॥ ७ ॥
 तेहनी गंधे जाणी कहे रे, अहिंसृष्टि निष क्हात ॥
 इय जोग ठांटे ते तिहां रे, तरु जाजित रूप मात
 ॥ बु० ॥ ८ ॥ अजय जणे वनमांहे जइ रे, विमुख
 गोंदयो एइ ॥ तिम कीधो तिणे वनतरुने दही रे, दग
 विष मुठ नेइ ॥ बु० ॥ ९ ॥ हवे सुप्रसन्न नृप वर दीयो
 रे, धंध मोक्ष विण नाम ॥ मंत्रा कहे मुज राखयी
 रे, ए थापण तुम पास ॥ बु० ॥ १० ॥ लक्ष्मी विन
 प यश नंदिज लहे रे, जेहन बुद्धिप्रकाश ॥ पहेजां
 वर मंत्रीमा पामीयां रे, चम प्रयांतर्ना पास ॥ बु० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे निण चंद प्रयांतर्ने, रूप कला गृण जाण
 ॥ नामवदना नाम तम्, योजन वन अममान ॥ १ ॥
 पुर तिया न अति निपुण नवि जाणो मगान ॥ तम्
 मंगीत सायावया नृप विम उपर्ना चिन ॥ २ ॥ अ
 जय जणी नृप जागिदया, कोइ मंगित प्रयाण ॥ कोम
 क्षापुर रात्रियो, उदयन सन्निध प्रयाण ॥ ३ ॥ तम्

हवा गज कारिमो, सुंदर नृप कराय ॥ सायुव सुनट
मांहे रह्या, पंत्र प्रयोग चलाय ॥ ४ ॥ कौसंबी वन
थावियो, ते गज वनचर देख ॥ कर जोडीने वीन
व्यो, नृपतिने सुविशेष ॥ ५ ॥

॥ ठाल आठमी ॥

॥ वेगे पधारो मेहेल्यी ॥ ए देशी ॥ उदयन नर
वर सांनली, गज ग्रहेवा गयो तेथ ॥ तजी परिजन
थाप एकलो, सुनटे दीवो तेथ ॥ उ० ॥ १ ॥ जाणी
थवसर थापणो, नीसर नृपने वांधि ॥ लेइ चाव्या
उळेणियें, चाढि तिण गजस्कंध ॥ उ० ॥ २ ॥ सेवक
निज प्रलुने दीयो, कहे तव चंम नरिंद ॥ मुज पुत्री
ने शीखवो, गीत कला नरिंद ॥ उ० ॥ ३ ॥ सन्मुख
कन्या न जोश्वो, एक नयन ठे तेह ॥ देखी लळा
पामरो, श्म कही राख्यो गेह ॥ उ० ॥ ४ ॥ कन्याने
वली श्म कह्यो, ए संगीत प्रवीण ॥ कुष्टि ए तिण मत
करो, थति प्रसंग रस लीण ॥ उ० ॥ ५ ॥ कन्या प
रीठने थंतरे, जणे कला मन जाय ॥ कन्या चिंते
जोश्यें, केवो विद्या दाय ॥ उ० ॥ ६ ॥ चल चित्त
ते कूडो जणे, उदयन कहे रीताय ॥ कांणी कूडो
कांइ जणे, जण निज मन करी ठाय ॥ उ० ॥ ७ ॥

रहे कन्या कुटी किशुं, वचन कहे अविचार ॥ इम
 मृणी नृप मन चमकियो, ततक्षण परख्यो सार ॥
 ४० ॥ ६ ॥ सुंदर कन्या प्रद्योतनी, रूप अनुपम पे
 ख ॥ मांहो मांही निहालतां, ययो अनुराग विशेष
 ॥ ४० ॥ ७ ॥ कुंवरी रीजी कुंवरखुं, घाली कंचनमा
 ल ॥ जाणीने सुखखुं रहे, उदयनने ते वाल ॥ ४०
 ॥ ८ ॥ अन्य दिन अनलगिरि हाथियो, वनमूली
 आलान ॥ नगर जमे जन क्षोभतो, न गणे ते पील
 बाण ॥ ४० ॥ ९ ॥ नरवरे अजयने पूठीयो, ए गज
 किम वश थाय ॥ वात्सवदत्ता साथे यइ, सतानीक
 सुत गाय ॥ ४० ॥ १० ॥ राय वचन कुंवरी मली,
 घदयन गावे गीत ॥ राग मधुर ध्वनि मोहियो, गज
 थंन्यो एक चित्त ॥ ४० ॥ ११ ॥ उदयन तसु उपर
 घटयो, गज ततक्षण वश कीध ॥ आलाने थाणी वां
 थियो, जग सघले वश लीध ॥ ४० ॥ १२ ॥ सर्व ॥ १५२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मालवपति रीज्यो पणुं, अजयजणी तेडाय ॥
 पर बीजो मागो दये, जे तुम थावे दाय ॥ १ ॥ अ
 नप प्रथम वरनी परे, थापे नृपति पास ॥ अयसर
 ए हुं संमरी, पूरीत अपणी आश ॥ २ ॥ परिजनने

परिवारणुं, चंन चळ्यो थाराम ॥ उदयननी करवा स्व
 वर, मंत्री युगंधर ताम ॥ ३ ॥ ते नमतो बोले इशो,
 हुं मुज नरपति काज ॥ त्रणे वस्तु जो नवि हरुं, तो
 नहीं मंत्री शिरताज ॥ ४ ॥ इम सुणी नरपति कोपि
 यो, ग्रही दीगो उन्मत्त ॥ परवश बकतो जाणीने,
 नूपे मूक्यो जट्ट ॥ ५ ॥ गीत काज तेडाविया, उद
 यन कन्या थळ ॥ ते लही अवसर थापणे, वेगव
 वती करे सळ ॥ ६ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ कायथके सवारे सदा सुरंगो थावे ॥ ए देशी ॥
 बुद्धि करी सुरगुरु सारिखो रे, मंत्री युगंधर तेह ॥ सा
 धे कारज स्वामीनां रे, साचा मंत्री जेह ॥ बु० ॥ १ ॥
 मली मंत्री पीलवाणुं रे, करी दृढ मन आलोच ॥
 मूत्र घटा चारे नखा रे, थवर न कीधो शोच ॥ बु०
 ॥ २ ॥ कुंज ठव्या किरणी शिरे रे, सहु सळ कीधो
 साज ॥ वासवदत्ता साथ लेरे, चढी चळ्यो उदयनरा
 ज ॥ बु० ॥ ३ ॥ तव उदयन मंत्री इम कहे रे, सांन
 लजो सहु कोइ ॥ उदयन राजकन्या हरी रे, जाये दि
 वस ए जोइ ॥ बु० ॥ ४ ॥ इम सुणी मालवपति को
 पियो रे, निज मुहता कहे तेडि ॥ अनलगिरी गज स

जिते चढ्या रे, कोसंधी नृप केडि ॥ बु० ॥ ५ ॥ वठपति
 वेगवती चढ्यो रे, जाय जोयण पचवीश ॥ देखी हंक
 हा थावता रे, जंजे घडो सुजगीश ॥ बु० ॥ ६ ॥ तसु
 गंव गज जुव्यो घणुं रे, पंथें जातो करे ढीज ॥ वढ
 पन वण वार इम कीयो रे, निज पुर थावीयो ली
 ज ॥ बु० ॥ ७ ॥ करणी कालंगत यइ रे, वेगें सजी
 निज सेन ॥ थावंती देखी प्रद्योतनां रे, गया वली
 सुजट उळेण ॥ बु० ॥ ८ ॥ वचन सुणी नृप सज थ
 यो रे, मंत्री वच उवसंत ॥ मूके जेट वदयनजणी
 रे, जाणी निज सुता कंत ॥ बु० ॥ ९ ॥ एक दिन स
 यज पलीवणो रे, देखी नगरी नरराय ॥ पूवे थजयने
 ते कहे रे, थगने थग्रि कषाय ॥ बु० ॥ १० ॥ एम
 सुणी थग्रि साहामो कीयो रे, ते ततक्षण उवसंत ॥
 सुप्रसन्न त्रीजो वर दीयो रे, राखे नृप कने मंत ॥ बु०
 ॥ ११ ॥ व्यंतर नय त्यां वपन्यां रे, वली पूवे नरना
 ह ॥ वपइव ए किम वपसमे रे, ते कहे बुद्धि थगाह
 ॥ बु० ॥ १२ ॥ नृपति तुफ थंतेउरी रे, नयणे जी
 गो एह ॥ मंत्री वचन नृपति कीयो रे, व्यंतर जीत्य
 तेइ ॥ बु० ॥ १३ ॥ वली मंत्रीश नणे इशुं रे, राणी फरइ
 दीयो पिंम ॥ नूत नणी निश तिम कियो रे, पयो पु

कुशल अखंम ॥ वु० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चोथो वर नूपति दीयो, मंत्रीने सुप्रसन्न ॥ अ
वसर जाणी आपणो, अजय नणे सुवचन ॥ १ ॥ दे
राजन हवे मुज नणी, आपण चार उदार ॥ देवशिवा
गज अनलगिरी, अग्निनीरु रय सार ॥ २ ॥ दीजे चो
थो दूत मुज, नूपति चतुर सुजाण ॥ ए चारे साथें लइ,
चिंता तजीश निज ठाण ॥ ३ ॥ इण वाते असमथ
नृपति, गोडे ते कर जोड ॥ तव मंत्रीसर इम नणे, व
जतो मूठ मरोड ॥ ४ ॥ दिवसें चौपटी चौहटे, करतो
तुं आकंद ॥ जो लेउं तुज पुर थकी, तो हुं अजय नरिं
इ ॥ ५ ॥ बोली करीने चालियो, लेइ साथ कलत्त ॥
माय ताय हर्षित थयां, राजगृही पुर पत्त ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ मधुकरना गीतनी देशी ॥ अथ
वा धनसारथवा साधूने ॥ ए देशी ॥

॥ हवे मंत्री प्रद्योतने, ग्रहवानी धरी टेक ॥ धन
धन ॥ दो गणिकातेडावियां, रूपवंत सुविवेक ॥ ध० ॥ १ ॥
ते गणिका साथे लियां, आप थयो वाणिज ॥ ध० ॥
पहोतो नगर अवंतीए, सद्गु करियांणे सज्ज ॥ ध० ॥ २ ॥

राजपंथ मंदिर लीयो, करे व्यापार विशेष ॥ ध० ॥ दी
 वी नूपती एकदा, नारी नवले वेश ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते
 पण जोवे सन्मुखे, नूप नणी धरी राग ॥ ध० ॥ शाकर
 दूध तणी परे, मेले नयण सराग ॥ ध० ॥ ४ ॥ नरवर
 थापो मंदिरे, मदने परवश आय ॥ ध० ॥ दूती मूकी
 ते कन्हे, इम कहे तेहने जाय ॥ ध० ॥ ५ ॥ रूप
 कला गुण तम तणें, मोही रह्यो लय लाय ॥ ध० ॥
 उठे पाणी मद्य ज्युं, तुम विण मानवराय ॥ ध० ॥ ६ ॥
 वंठे संग आदर घणे, इम सुणी कोपी जेह ॥ ध० ॥
 तरजी तिण वे दूतिका, वली थाइ दूती तेह ॥ ध०
 ॥ ७ ॥ त्रीजे दिन दूती तणां, वचन सुण्या धरी कान
 ॥ ध० ॥ दूतीने तिणे जाणीने दीधो अधिको मान
 ॥ ध० ॥ ८ ॥ ते कहे ए थम रुचेय ठे, पण थम
 बंधव एह ॥ ध० ॥ सदाचार तिणे राखवो, थवसर
 दाखुं तेह ॥ ध० ॥ ९ ॥ थाज थकी दिन सातमे, न
 रवर आवजो एक ॥ ध० ॥ इहां बंधव होरो नहि, क
 र्शुं प्रीति विवेक ॥ ध० ॥ १० ॥ तव मंत्री निज नर
 तणो. नाम धर्यो प्रयोत ॥ ध० ॥ कपटे ने गहिलो
 थपो, मंत्री बुद्धि उद्योत ॥ ध० ॥ ११ ॥ नगर जमे ग
 हिलो थको. कहेतो विध विध वाण ॥ ध० ॥ मेवक

मिस करी बांधियो, देखो बुद्धि विनाए ॥ ध० ॥ १२ ॥
 वैद नणी देखाडवा, लै चल्या मांचे थाप ॥ ध० ॥
 राज मारग थाण्यो जिसे, तव करे एम विलाप ॥ ध० ॥
 ॥ १३ ॥ जन सुणजो सहुको तमे, हुं नृप चंम प्रयो
 त ॥ ध० ॥ हरि जायते मुळ नणी, परगट दीणपर ज्यो
 त ॥ ध० ॥ १४ ॥ इम जंखतो रडतो रहे, सातमे दि
 न हवे नूप ॥ ध० ॥ काठ लंपट थाव्यो तिहां, लुब्धो
 रमणी रूप ॥ ध० ॥ १५ ॥ अनय सुनट बांध्यो म
 ली, कोइ न राख्यो माण ॥ ध० ॥ वैद्य घरें लै जाइ
 शां, अनय सुणी सहु बाण ॥ ध० ॥ १६ ॥ दिवस
 पलंगे ठवि करी, हखो प्रथोन नर राय ॥ ध० ॥ उळे
 णी नगरी विचें, लै नृप मंत्री जाय ॥ ध० ॥ १७ ॥
 थाण्यो राजगृहिपुरें, तात थागें ठव्यो जाम ॥ ध० ॥
 थैणिक अति गृही मारया, धायो देखे ताम ॥ ध० ॥
 ॥ १८ ॥ नीति बचने करी वारियो, वेइ बडु सनमान
 ॥ ध० ॥ मूढयो बली अवंतीए, मंत्री वतारी मान ॥ ध० ॥
 ॥ १९ ॥ बुद्धि बजे करी इणि परें, पाजे अपणो बोल
 ॥ ध० ॥ लक्ष्मीविनय बुद्धिवंतनो, एको बोल अमान
 ॥ ध० ॥ २० ॥ सर्वगाया ॥ १९८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राजगृहपुर वसे, धनदत्त जेठ सुनाम ॥ चो
 सव गुणे करी आगली, यमुमति रमणी धाम ॥ १ ॥
 तासउदर सर उपन्यो, कयवन्नो गुण जाण ॥ पुरुष
 कजां जाणे सहु, निरुपम रूप निहाण ॥ २ ॥ योवन
 आच्यो तेहने, जयतिरि कन्या तछ ॥ मात पिता पर
 णायियो, जाणी जोग समछ ॥ ३ ॥ तोपण विद्या अ
 न्यसें, न रमे विषय विलास ॥ ते जाणी माता हवे,
 कहे प्रियने उवाह ॥ ४ ॥ गोठिल पुरुषां गोठडी, मे
 लवियो उमाह ॥ देवदत्ता धरें आणियो, व्यसन वि
 लण उवाह ॥ ५ ॥

॥ टाल अगियारमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोइ पंखियां ॥ ए देशी ॥
 ॥ कयवन्नो हवे कुंवर रहे तेहने धरे, वेश्यागुं बहु
 प्रेम हरख हीयडे धरे ॥ नित नित मूके तात मात
 नंदन जणी, कनक रजतनी कोडी मोह माया घणी
 ॥ १ ॥ जोगवतां बहु जोग वरस केइ थयां, तेहवे
 माता तात दोउ परजय गयां ॥ बली मूके धन बहुत
 कलत्र पुठायकी, इणि परें तसु धन झीण वरस वारे
 जकी ॥ २ ॥ तव आचरण वतारी नारी मूक्यां ति

से, देखी थका तेह ताम चिंते ससे ॥ एक सहस्र
 दीनार घाती मननी रली, थानरण मूक्यां तेह वेश्य
 पाठां बली ॥ ३ ॥ कहे पुत्रीने एम वचन सुण मुज
 खरो, निर्धन ठमो एह थवर धनवंत धरो ॥ जो नर
 कोढी पास दुवे धन बहु परें, काम तणी परे सोइ ग
 णी राखां धरे ॥ ४ ॥ उंच नीच कुज कोइ नहि को
 अंतरो, जिण गंवे धन होइ सोइ गेह संचरो ॥ सुणि
 एहवा हवे बोल पुत्री माता तणा, ते बलती कहे ए
 म माताने गुनमणा ॥ ५ ॥ बार वरसनी प्रीत तोडुं दुं
 किम इमे, ए मुज प्राणाधार तछुं नहि जिम तिमे ॥
 मात न कर विखास सजां जिहां जीव वसें, त्यां लगी
 ए हथुं नेह गेह रमीगुं रसे ॥ ६ ॥ एक दिवस हवे ते
 ह पुत्री वनमें गइ, थका थवसर पामी कहे साहने
 जइ ॥ दिवस घणा थया थाज महेल जाड्या थकां,
 तमे बेसो घरबार काज ए थम जका ॥ ७ ॥ कपट
 करी एम तेह काढयो घर बाहिरे, जो धन हुए तो सा
 ह पेसजो इण धरें ॥ कयवन्नो सुणी एम चिंते मनगुं
 इसो, धिक् धिक् वेश्या जात जात उजति तिसो ॥ ८ ॥
 हवे थायो निज गेह साह निज बारणे, उगी नारी
 स्नेह लइ जल उवारणे ॥ संतोष्यो सुवचन चित्त प्री

तम तणो, मज्झिमा कंत एकंत हरख हेयडे पणो ॥ ए ॥
 बन कीडा करी प्रेम वेश्या पुत्री जिका, घर नवि देखे
 नाह चिंते एम मत तिका ॥ दुं पण तेहगुं नेह रही
 त तसु मंदिरे, ते पण थाइ तेय साह तसु थादरे
 ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ २१३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कयवन्नो त्यां कणें, मास एक रह्यो गेह ॥
 गर्न रह्यो महिला तणें, धनसिरि नामे जेह ॥ १ ॥
 हवे व्यापारने कारणे, चिंत करे निश दीश ॥ दीनारगुं
 आनरण दीयां, वेहु प्रिया सुजगीश ॥ २ ॥ वणज
 करो इण थायगुं, चिंत तजो प्रिय दूर ॥ हवे लीजा
 सह पामशां, ठे तुम पुण्य पमूर ॥ ३ ॥ तिण कणे
 किणे थावी कह्यो, परदेशे चले साथ ॥ आनरण थ
 न पर राखीन, थाप थयो तसु साथ ॥ ४ ॥

॥ टाल बारमी ॥

॥ सुज हीयडो हेजाछूड ॥ ए वंशी ॥

॥ साह चचे परदेशने, करी सयणागुं शीत ॥ पर
 रहेजो नजी जांतगुं, दइ इम महिला शीत ॥ सा०
 ॥ १ ॥ स्वामी संप्रेइण कारणे, महिला साथे वे
 वि ॥ खाट तजाइ पाथरे, एक वेठजनने हेवि ॥ सा०

॥ २ ॥ पोढाडे प्रीतम जणी, नारि वे थावी मेह ॥
 हवे तिण राते जे थयो, सुणजो कारण तेह ॥ सा० ॥
 ॥ ३ ॥ हवे ठे तिणहिज नगरमें, सेठ सुदंसन नाम ॥
 ॥ पोत जंगे जनने सुखे, मात सुण्यो मृत ताम ॥
 सा० ॥ ४ ॥ धन दइ जनने पात्रिया, तेहि बहुअर
 बोलाय ॥ सुत विण ए धन आपणो, सहु लेखी नर
 राय ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए धन गवगवा कारणे, करयो
 बीजो प्रीय ॥ जिम मुन होवे नुम तणें, सुणी इम यों
 ले प्रीय ॥ सा० ॥ ६ ॥ सामुज्जी किम कीजीए, एह
 अकारज आय ॥ जनम कुन कानो चढे, वज्जी कहे
 सामु नाम ॥ सा० ॥ ७ ॥ हाण नज जे कीजीयें,
 तेहनो दोष न जाण ॥ निण हाण कम माहरो, व
 दुयां वचन प्रमाण ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम आलाय
 करी हवे, चारं वदुयां ने माय ॥ थावी गने थावी
 यां, जिद्दां उतरिया माय ॥ सा० ॥ ९ ॥ निग्वी नारो
 साय ने, थावी देवत मांदि ॥ सुखसु सुनो देव्याने, तेज
 उवाइ सादा ॥ सा० ॥ १० ॥ थाण्यो मंदिर आपणें,
 पोढाड्यां सुख मेज ॥ जागे उमे जेहरे, रमणी चार
 सहेज ॥ सा० ॥ ११ ॥ तव थावी ग्यां मोहरी, इम
 जणे सरत वचन ॥ कुतवेचना मुजने दीयां, नुं वस

पुत्र-रत्न ॥ सा० ॥ १२ ॥ ए धन मंदिर ताहरो,
ए बली महिला चार ॥ सुख जोगव इण्णुं इहां, न
हि को चिंत व्यापार ॥ सा० ॥ १३ ॥ स० ॥ २३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कयवन्नो ते जणी, चिंते तव इम चित्त ॥
कुल चिंता हवे शी करुं, बिलगुं ए सुख प्रीत ॥ १ ॥
चारे रमणिगुं त्यां किरें, नोगवतो बहु नोग ॥ दोगंद
क सुरनी परे, बिलसे पुण्य संयोग ॥ २ ॥ महिला
चार तणें हवे, अनुक्रमें जनम्या पूत ॥ थेरी थाखें
ए थया, मुज घर राखण सूत ॥ ३ ॥ बार वरस वो
व्या जिसे, विधिवश तेहिज साथ ॥ थावी तिण वन
कतखो, थाणी तिणे बहु थाथ ॥ ४ ॥

॥ ठाल तेरमी ॥

॥ आज निहेजो दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥ हवे
कहे थेरी बहुथांने इशो, ए पति ठामो आज ॥ स्वा
रथ इण्णुं सीधो थापणो, हवे इण्णुं श्यो काज ॥
॥ ह० ॥ १ ॥ सुणी वच बहुथां इणि परें वीनवे,
सासुने कर जोड ॥ काज थकाज कराव्यो पहेल्यी,
हवे ठोडवियां खोड ॥ ह० ॥ २ ॥ तव बली थेरी जा
खें एहवुं, कारणवश कीयो तेह ॥ काज सखां पठी

सहु कोइ कहे, दीजे ततक्षण ठेह ॥ ह० ॥ ३ ॥
 इम करतां नहि तुमने बुरो, कारण वस तजी लाज
 ॥ ठयल जिके नर जिणि तिणि परें, साथे आपणो का
 ज ॥ ह० ॥ ४ ॥ नेहें करी हवे बहुयें कखां, मोदक म
 णि संयुत ॥ संवल काजे ते तसु ठवे, उंसीसे निशि
 सुत ॥ ह० ॥ ५ ॥ जिम आण्यो तिम मूक्यो वजी,
 ऊपाडी तिहां तेह ॥ जाग्यो चिंते किम हूं इहां कि
 णे, किहां महिला मुज गेह ॥ ह० ॥ ६ ॥ आण्यो
 साथ तिसे त्यां सुणी, आवे सुंदर दोइ ॥ तिमहिज
 प्रियने मूल तणी परें, देखे अचरिज होइ ॥ ह० ॥
 ॥ ७ ॥ किम गयणंगण संचरी, तुमे आया इहां रं
 ग ॥ खेद जिणे दीसे नहिं, मारगनो प्रिय थंग ॥ ह०
 ॥ ८ ॥ एम नणे तसु प्रति दीये, ते सुना हूंकार ॥
 संवल सेज प्रमुख महिला ग्रहे, आण्यो गेह मजार
 ॥ जेहो ॥ ९ ॥ स्नान करे जब ते तिसें, तसु नंदन
 साथ ते, ॥ ते ठे वरस थग्यारनो, आयो जणि नी
 चताइ सा ह० ॥ १० ॥ तव मांगे माता कनें, किंपी
 देह ॥ एक मोदक संवलयकी, वे माता त
 ॥ ११ ॥ जइ स्वातो बाहिर गयो, नीस
 चिन्ही ॥ रतन कंदोइने दीयो, वे सुखडी

मुज सांही ॥ ह० ॥ १२ ॥ जलमांहि पडतां खंम
 थयो, ते जाण्यो जलकंत ॥ रतन जतन करीने हवे,
 राख्यो तिणे एकंत ॥ ह० ॥ १३ ॥ हवे जिमतां मोद
 क थकी, देखी मणि तिणिवार ॥ पनणे जयतिरि प्रि
 य तुमे, गोपवियो धनसार ॥ ह० ॥ १४ ॥ इणि परें
 थाण्यो धन लायव जणी, सुणी तसु वचन विलास
 ॥ कयवन्नो हर्षित थयो, रहे हवे मुजग थावास ॥
 ॥ ह० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ २४ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण थवसर एकदा, ठे नृपतिने गेह ॥
 सिचणक नामा हाथियो, गजमे सुरमणि तेह ॥ १ ॥
 ते पडोतो जल पीयवा, तव जाव्यो जल तंत ॥ राय
 वचन मंत्रीसरे, दीये पुरि पडह महंत ॥ २ ॥ एक स
 हस्र दिये गाम तसु, परणावे तसु धीय ॥ एम सुणी
 पडहो ठव्यो, ततक्षण कंदोइह ॥ ३ ॥ जलकांते गज
 गोडव्यो, जलचर जीव विशेष ॥ कंदोइ नृप पूठियो,
 रत्न तणो थवशेप ॥ ४ ॥ कयवन्ना सुत मुज दीयो,
 छत्राडी साटे एह ॥ सुणी वच नृपति हरखियो, तव
 जांगो संदेह ॥ ५ ॥ कंदोइ घर मूकियो, तेडाव्यो तव
 साह ॥ गाम सहस्र शुं नृप सुता, परणावे उताह ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ राग रामग्री ॥ आदरजीव कृमागुण आदर ॥ ए
देशी ॥ महिला त्रणगुं सुख नोगवतो, रहे कयवन्नो
साह जी ॥ अजय कुंवरगुं प्रीत थइ बहु, दिन दिन
हर्ष उत्साह जी ॥ १ ॥ तम पेखो रे, एतो पुण्य फ
व्यो सुविशेषो रे ॥ मत कोइ करो अंदेशो रे, कृपाज
तुम पेखो रे ॥ सुपात्र फल देखो रे, कयवन्नो इणि
परें सुख विजसे, ते सहु पुण्य पसाय ॥ त० ॥ ए आंफ
णी ॥ २ ॥ एक समे कयवन्नो कहे एम, अजय न
णी धरी प्रीतजी ॥ चार त्रियागुं जे सुख सेव्यां, ते
चढी आब्यां चित्तजी ॥ त० ॥ ३ ॥ चौवुथ ज्ञान धरो
जो मंत्री, तो सारो मुज काजजी ॥ जाखो तेह मया
करी मुजने, हुं सारुं तुम काजजी ॥ त० ॥ ४ ॥ ते
कहे इणहीज नगरी मांहे, ठे रमणी मुज चारजी ॥
वार वरस तिणगुं सुख विजस्यां, हवे नहीं तेहनी
सारजी ॥ त० ॥ ५ ॥ सुणी मंत्री चित्तमांही विमा
से, बोल कहे तसु थामजी ॥ ते चारे पुवती संती,
हुं धरिं तुम धामजी ॥ त० ॥ ६ ॥ ते चारे गृहिया
हवे इणि परें, मंत्री करे वपायजी ॥ बुद्धि वसे जि
ण पुरुषां हीयडे, तेहने सहु सिद्ध पायजी ॥ त० ॥

॥ ७ ॥ देवल एक कराव्यो मंत्री, पुर बाहिर अग्नि
 रामजी ॥ कपवन्ता सम यक्ष्णी प्रतिमा, थापी मंम
 पुं सुन गानजी ॥ त० ॥ ८ ॥ पुर सघने उद्घोषणा
 रोपी, मंत्री सद्गु समक्षजी ॥ बालक कष्टने टालण
 कोजे, सद्गु पुजो ए यक्ष्णी ॥ त० ॥ ९ ॥ सुणी उद्
 घोषणा पुरमें एहवी, संतत मौ मली नारजी ॥ चर
 ची पूजी यक्ष् मनावे, बालकने सुखकारजी ॥ त० ॥
 ॥ १० ॥ कपवन्तो मंत्रीगर येहु, येता मंमप निग्वंत
 ली ॥ आवे पुर्नी मुंदरि टोले, निणमां ते आवंतजी
 ॥ त० ॥ ११ ॥ पनि मम यक्ष्णी प्रतिमा निरखे, प्र
 गद्यो विरहो नामजी ॥ नयणे नीर करे नीऊरणा,
 जाणे पायस मासजी ॥ त० ॥ १२ ॥ गमणी चारे
 विलवे मनगुं, देव जणी रुढे एमजी ॥ एक प्रीतम
 लज्जनिधिमे रक्षिणो, बीजो विहोरा केमजी ॥ त० ॥
 ॥ १३ ॥ मद्रिना चार तणां मुत जेदव तनकृण
 थिय निग्वंतजी ॥ नात कदा उन्मंगे येता, वापगुं
 केनि करतजी ॥ त० ॥ १४ ॥ इस युंठ मद्रि पुज
 ली नारी नरजे मेराने मतजी ॥ धन म्मावे गमणी ह
 त पुणने आणी एर एमघतजी ॥ त० ॥ १५ ॥ मुंदर
 सात गमणी सघन, विनसे वसित लागजी ॥ नर ज्ञा

के कयवन्नो सुरपरें, चंद वचन पुण्य जोगजी ॥ त० १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण थवसर एकदा, आब्या बनह मोजा
र ॥ चरम शरीरी चरम जिन ॥ नवियणने सुखद्वार
॥ १ ॥ निज निज कूढ़ि विस्तारिने, सद्गुरु वांछ
जाय ॥ कयवन्नो पण सुणी करी, रोमांचित थंग था
य ॥ छान करी निर्मल जने, पहेरी वस्त्र प्रधान ॥
कूढ़ि तणे विस्तारयूं, चाब्यो माह सुजाण ॥ २ ॥
देई तीन प्रदक्षिणा, प्रणमी श्रीजिन देव ॥ कृत पुण्य
पूजे में लही, किम आपद मंपद देव ॥ ४ ॥

॥ दाज पंदरमी ॥

॥ राग मानवी गोडी ॥ जिनवर मुं मेरो मन जागो एदेशी ॥

॥ बनणे जिनवर मधुग वाणी, गुण पुरव विरमे
त रे ॥ आत्म विरह्या दूर गोडी, कर निज मन ए
कंत रे ॥ १० ॥ १ ॥ साजिग्राम एक रे गुन रामे,
तिहां वमे विवरा एक रे ॥ निर्यन परधर काम करे
नित, नानो सुन तसु एक रे ॥ १० ॥ २ ॥ वाउठथी
चारे जन केरां, दाजठ मन अधास रे ॥ इणि पई ते
थारजाविका हरतो, रहें त्यांदिन मियजि वास रे ॥
५ १० ॥ ३ ॥ थन्यदा हरसव दिनको आब्या, जम

तां बालक स्त्रीर रे ॥ ते देखी तिहां मनसा उपनी,
 मागे जननी तीर रे ॥ प० ॥ ४ ॥ माता बाल वचन
 सुणी एहवुं, उपज्युं दुःख थसराल रे ॥ पाढोसण
 मजी करी तव पूठे, कुण दुःख तुज इणि काल रे
 ॥ प० ॥ ५ ॥ घरनी बात न जाणे बालक, मागे
 स्त्रीर मुज पास रे ॥ पूज्यो नहि परमेश्वर परजव,
 तो केम फले थम आश रे ॥ प० ॥ ६ ॥ दीन वच
 न सुणी करुणा थाणी, ये तसु पायस साज रे ॥ ते
 रांची बालकने पीरसी, मात गइ किण काज रे ॥ प०
 ॥ ७ ॥ तिण रूपे सम दम रत गुण जरियो, मास
 खमण मुनि कोइ रे ॥ आहार काजे थाव्यो ते थट
 तो, तेह रंब्यो मुनि जोइ रे ॥ प० ॥ ८ ॥ तीन जाग
 कळीने ते ये, जावगुं साधुने स्त्रीर रे ॥ रस आहारें
 विसूचिका थइ तसु, तिणि निशि ठंमी शरीर रे ॥ प०
 ॥ ९ ॥ त्यांची इण पुर तुं थवतरियो, दान तणें फ
 ल जोय रे ॥ जागविचें थंतराय जे पामी, ते रेखा फ
 ल होय रे ॥ प० ॥ १० ॥ तुज पाढोसण देतां निरखी,
 थनुमोदना वशें सात रे ॥ तुज नारी गुन वेंसें थइ
 इण जवे, हरण्यां सुणी निज बात रे ॥ प० ॥ ११ ॥
 संवेगे लइ ते हवे संयम, निज प्रियागुं प्रभु पास रे ॥

तप जप स्वप करी स्वर्गे उपन्या, चवि नर नव शि
वास्त रे ॥ ५० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ॥ २७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे इण अवसर एकदा, राजगृही पुर वाम
समोसखा तारण तरण, गणधर सुधर्मा स्वाम ॥ १ ॥
जाव धरी नवियण घणां, वंदन पढूता तउ ॥ अ
त्यपणे देसन सुणि, जन्म कीयो सुकयउ ॥ २ ॥ ए
कवियारो त्यां किणें, चित्त धरि धर्म विगुह ॥ गणध
देशना सांजली, लइ चारित्रि प्रति बुह ॥ ३ ॥ ते
निशुं करे गोचरी, देखी पुर नर नार ॥ दुष्करकार
ए मुनि, ठेमी क्वि कठ नार ॥ ४ ॥

॥ ढाल सोलमी ॥

॥ कुंवरी बोलावे कूवडो ॥ ए देशी ॥ मुनि अण
सहतो एहवो, गुरुने कह्यो प्रकारो रे ॥ पुरजन को
मुज मशकरी, करवो अनेपि विहारो रे ॥ १ ॥ जिन
शासन उजवालियो, मंत्री रुढी रीतो रे ॥ धर्म तणी
दृढता करे, ते दुए त्रिजग वदीतो रे ॥ जि० ॥ ए
थांकणी ॥ २ ॥ ताहु वचन गुरु सज्ज यया, महिय
ल करण विहारो रे ॥ तिण क्षण मंत्री थावीने, पूठे
अत्रे कुमारो रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ कांइ चालो उतावला,

नाखे श्री गणधारो रे ॥ नव दीक्षित अणगारनो,
 कहा हीजणा विचारो रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ एक दिन
 गुरु राखी तिहां, मंत्री बुद्धि विशेषो रे ॥ रत्न तीन
 कोडि लेइने, चौहटे देवो मंत्रीशो रे ॥ जि० ॥ ५ ॥
 पडह देवरायो नगरमे, सुणजो लोक सबाइ रे ॥ आपे
 मणि मंत्रीशरू, इम सुणी आब्या धाइ रे ॥ जि० ॥ ६ ॥
 तव मंत्रीसर इम जणे, लोकांने हितकारो रे ॥ त्रण
 वस्तु ठोडे जिको, तसु दीजे धन सारो रे ॥ जि० ॥
 ॥ ७ ॥ लोक कहे त्रण वस्तु शी, मंत्री नांखे तेहो रे ॥
 बारि बद्धि वनिता तजे, दीजे तसु धन एहो रे ॥ जि०
 ॥ ८ ॥ लोक कहे मंत्रीशने, ए न हुवे अम पाखे रे
 ॥ लोक तणी वाणी सुणी, तव मंत्री इम नांखे रे
 ॥ जि० ॥ ९ ॥ ए धननो एधणी थयो, सांप्रति ए अ
 णगारो रे ॥ त्रण वस्तु ठोडी जिणे, त्रण कोडीनो
 ठांणहारो रे ॥ जि० ॥ १० ॥ किम हसियें तुम सा
 धुने, उत्तम करणी कीधो रे ॥ जब सायर तरवा ज
 णी, जावणुं संयम लीधो रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ निंदा
 करी मूरखपणे, आजयकी अम आमो रे ॥ हवे नवि
 करणुं एहवो, मंत्री शीख दीयें तामो रे ॥ जि० ॥
 १२ ॥ इम जिन धर्म उन्नति करी, हरख्या श्रीगणधा

रो रे ॥ लक्ष्मीचंद कहे एहवो, धन धन तसु अवनता
 रो रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ स० ॥ ३०४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन श्रेणिक राय हवे, वेगो सजा समझ
 ॥ जणे किसुं मुंहगो अठे, ते जांखो मुज दह ॥ १ ॥
 केइ बोले एहवो, मोती मुंहगा स्वाम ॥ हीर चीर
 मणि सार के, के मृगमद अनिराम ॥ २ ॥ केइ चंद
 न वावनो, हय गय केसर केवि ॥ रुप्य सुवन केई
 चवे, हवे मंत्री कहे हेवि ॥ ३ ॥ अजय जणे मुंहगो
 अठे, स्वामी सघले मंस ॥ एह वचन माने न को,
 राजादिक मन थंश ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ राग गोडी ॥ पूर्व जव तमे सांजलो ॥ ए देशी ॥
 हवे मंत्रीसर इम जणे, सुण श्रेणिक महाराजो रे ॥
 पांच दिनां लगे ए सही, दीजें राज मुज थाजो रे
 ॥ १ ॥ धन धन अजय कला निलो, जगु मति चार
 उदारो रे ॥ सुर गुरु पण जिण थागले, न करे बुद्धि
 थहंकारो रे ॥ ध० ॥ ए थांकणी ॥ २ ॥ दीपुं राज मं
 त्रीसने, नूपति रहे थायासो रे ॥ को दीये नूप समा
 धिने, नर कालेजा मांसो रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडह दिरा

पो लोकरमें, उरपली जवदोऽ मानो रे ॥ जो को दे
 ण कण सही, तास वधारुं वानो रे ॥ ध० ॥ ४ ॥
 उरपली नव दीधो कियो, प्राण सहुने प्यारो रे ॥
 धन थाणी दिये जन घणा, जय वसे जाणि विचारो
 रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ जीवुं वांछे ठे सहु, मरण न वांछे
 कोऽ रे ॥ धन मलतां वली सोहिलो, प्राण वले नवि
 होऽ रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ धन थंवार किया घणां, देखी श्री
 मगधेसो रे ॥ रुठे राय तेडावीयो, अजय जणी निज
 पासो रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ कहे एतो धन क्यांयकी, कि
 ण परें जेलो कीधो रे ॥ प्रजा लोकने पीडीने, अथ
 यश कांइ तें लीधो रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ अजय कहे अ
 पयश विना, ए मेल्यो धन तातो रे ॥ निज नर ठांना
 भूकीने, छेवा पुरनी वातो रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ पग पग
 मंत्री यश सुणे, ते जाणी कहे नृपां रे ॥ किम वछ
 यश लठि घेहु, जारयो तेह स्वरूपां रे ॥ ध० ॥ १० ॥ ते
 कहे में जन पासथी, माग्यो कालजा मांसो रे ॥ ध
 न थाणी दीयो घणां, पण पल नाभ्यो थंशो रे ॥ ध०
 ॥ ११ ॥ ठामो ठाम दीधी वली, पाठी धननी राशो
 रे ॥ तिण पली मूंगो जाणियो, सहुको आयो विश्वा
 सो रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ इन बुद्धि देखी मंत्रीशनी, हर

ख्यो नरपति चित्तो रे ॥ लक्ष्मीविनय कहे अवसरे,
बुद्धियें सद्गु जग मित्तो रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ सर्व ॥ ३२१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन बंदी वीर जिन, बलतां नूपति मं
ति ॥ उपडतो पडतो बली, खेचर एक पेखंत ॥ १ ॥
पूढयो विद्याधर जणी, वात वदे सुवचन ॥ गगन गा
मिनी विद्या तणो, बीसरियो एकवर्ण ॥ २ ॥ इम
सुणि थावी ते कन्हे, मंत्री कहावे विज्ज ॥ अक्षर क
ही विद्या ग्रही, ते साधे सद्गु कज्ज ॥ ३ ॥

॥ दाल अठारमी ॥

॥ राग मज्जार ॥ मनको प्यारो, तनको प्यारो ॥ ए
हनी अथवा श्री नवकार जपो मन रंगे ॥ ए देशी ॥
मगधेसर पूढे हवे एहवो, निज परखदने साररी ॥ मा
६ ॥ धर्मी पापी पुरुष घणा कुण, जांखो तेह विचार
री ॥ मा६ ॥ १ ॥ सुणजो बुद्धि मंत्रीसर केरी, इणनो
पण लवलेशरी ॥ मा० ॥ जेहनी बुद्धि देखीने मोह्यो
श्रीश्रेणिक मगधेसरी ॥ मा० ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥
२ ॥ सजां पुरुष बोले तव एहवो, धर्मी थोडा स्वामरी
॥ मा० ॥ पापी जन जगमे ठे बहुला, मंत्री जणे तव
आमरी ॥ मा० ॥ सु० ॥ ३ ॥ थोडा पापी धर्मी जन

धनुः श्रवणं कर्कशं वृद्धिं जौहरी ॥ मा १० ॥ मातुः वय
 न निजं करदा काजं वरदा कर्मात्तं वृद्धिं ॥ मा १० ॥
 सु १० ॥ १४ ॥ श्रवणं श्रवणं श्रवणं वृद्धिं वरदा ॥ मा १० ॥
 नि श्रवणं श्रवणं ॥ मा १० ॥ मातुः वयनं वरदा ॥ मा १० ॥
 वी श्रवणं श्रवणं श्रवणं ॥ मा १० ॥ मातुः वयनं ॥ मा १० ॥
 वा श्रवणं श्रवणं श्रवणं ॥ मा १० ॥ मातुः वयनं ॥ मा १० ॥
 मा १० ॥ मातुः वयनं ॥ मा १० ॥ मातुः वयनं ॥ मा १० ॥
 वयनं श्रवणं ॥ मा १० ॥ मातुः वयनं ॥ मा १० ॥
 श्रवणं श्रवणं ॥ मा १० ॥ मातुः वयनं ॥ मा १० ॥
 वयनं श्रवणं ॥ मा १० ॥ मातुः वयनं ॥ मा १० ॥

कृष्ण आया वीरजिन, देखी उदायन जूप ॥ २ ॥
 वंदी वीर अनय नणे, चर्मराज कृपि कोइ ॥ स्वामी
 उदायन दाखवे, तसु पय वंदे सोइ ॥ ३ ॥

॥ द्वात्रिंश उगणशमी ॥

॥ थाप सवार्थे सजे सद्गुरु ॥ ए वेशी ॥ मंत्री हवे
 घर थावीने, मात पितानी पास ॥ अनुमति थापो
 मुज नणी, जिम संयम हो लत्रं जिनवर पास ॥ १ ॥
 ए जग सर्व थसासतो, एक साचो हो श्री जिननो
 धर्म ॥ जिनवर देशन सुणि करी, मुज नागो हो
 सधलो नव नर्म ॥ ए० ॥ ए थांकणी ॥ २ ॥
 सुणि माता धरणी ढली, पिता तिमहिज जाण ॥
 शीतल जल चेतन लही, मुख बोले हो इम गद गद
 वाण ॥ ए० ॥ ३ ॥ वहु संयम ठे दोहिलो, करवो मं
 स्तक लोच ॥ मान संयारे सूइवो, धर्म सेंती हो कर
 वो थालोच ॥ ए० ॥ ४ ॥ लोह चणा केम चावीयें,
 मइण तणें दांतेह ॥ कुण एहवो जग गुरिमां, तोले
 तोले हो गिरि मंदिर जेह ॥ ए० ॥ ५ ॥ जाव जीव
 थसनानना, जरवा वेळू मास ॥ थाव्यां सुख मूरख
 तजे, कुण मंमे हो परजवनी थाश ॥ ए० ॥ ६ ॥
 तिण कारण ए राज्य लइ, नोगवी नोग बिजास ॥ थ

થાવરે, તું પૂરે હો થમ મનની થાશ ॥
 માત પિતાનો વચ્ચ સુણી, બોલે સાદસ
 વીઠા સદી, ઠે કાપરાં હો નહિ
 વીર ॥ એ ॥ ૭ ॥ તન ધન યોવન કારિમો,
 એ પરિવાર ॥ કારિમે ઇણ જગ કારણે, કિમ
 માનવ થવતાર ॥ એ ॥ ૮ ॥ માત પિતા કે
 નહિ, ન ચલે પરણી સાથ ॥ જવ યમશું કાર
 પડે, તવ જાયે હો ઠોડી સદુ થાય ॥ એ ॥ ૯ ॥
 વંચજ ઘે એ થાયુઓ, જિમ તરુ પાકો પાન ॥ પલ
 થઈ હયે જાય ઠે, તે ઠીજે હો મુજ થાયુ માન
 ॥ એ ॥ ૧૦ ॥ હું પરદેશીની પરે, હોઈ રહ્યો નિસ
 નેહ ॥ કવતાંઈ ધિરતા રહે, ધર ઠપર હો જે ઘરનો
 નેહ ॥ એ ॥ ૧૧ ॥ હમ વચન સુણિ દઢ મના, તાત
 શીપો થાવેશ ॥ શીક્ષાનો ઇત્સવ કરે, હવે નૂપતિ હો
 શ્રીશ્રેણિક નરેશ ॥ એ ॥ ૧૨ ॥ થતિ ઇત્સવશું થા
 પિપો, શ્રીજિનયરની પાસ ॥ સ્વહથ શીક્ષા પામિને,
 તે પૂરે હો નિજ મનની થાશ ॥ એ ॥ ૧૩ ॥ થતિ નેહે
 કરી પુત્રને, મંઘાપે મહ્યો ઘતનાર ॥ વીશ વરસ જગી
 પાલીને, તે પદુતી હો તિણહિંજ અવ પાર ॥ એ ॥ ૧૪ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे श्रीवीर जिएंदने, स्वहथें पामी दीख ॥
 जयकुंवर मुनिवर थयो, चाले गुरुनी शीख ॥ १ ॥
 ज्ञानी गुरु पासें नणे, सूत्र अर्थ सिद्धांत ॥ चरण क
 रण नित साचवे, मुनि गुण जास महंत ॥ २ ॥ वि
 नयवंत गुण आगजो, ममता न धरे काय ॥ उत्तम
 तप करतो थको, शोषे थपणी काय ॥ ३ ॥ शत्रु
 मित्र समवड गणे, न करे क्रोध ने मान ॥ क्रूरमनी
 परें गोपव्या, इंड़ी पांच प्रधान ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीगमी ॥

॥ इम धनो धणने परचावे ॥ ए देशी ॥

॥ अजय कुंवर कृपि प्रणमूं पाया, त्रिकरण शुद्ध
 त्रिकाल जी ॥ निरुपम पंच महा व्रत धारी, तीन गु
 पति प्रतिपाल जी ॥ अ० ॥ १ ॥ पट विध जीव दया
 जे पाले, जिन जावित पंच ढाले जी ॥ सूर तणी परें
 सहे परीसह, शत्रु मित्र सम निहाले जी ॥ अ० ॥ २ ॥
 क्रोध जोह मद मोह निवाला, निकंचन निरमाया जी ॥
 तप जप दुष्कर करीने पोषे, शोषे जे निज काया जी
 ॥ अ० ॥ ३ ॥ साधु धर्म दश विध करी सोहे, कंच

१ वृण माण समता जी ॥ परिजन स्वजन प्रमुख कि
 २ सेती, न धरे जे मन ममता जी ॥ अ० ॥ ४ ॥
 ३ यमत विचरे नारंमनी परें, पंकज दल निर्लेपें जी
 ४ रांग रहित जंग रांख तणी परें, धर्म थयि कर्म हे
 ५ जी ॥ अ० ॥ ५ ॥ गगन तणी परें जे निरालंबी,
 ६ पुन जिसो थविलंबी जी ॥ तेजे शोहे सूर तरुण जि
 ७ म ॥ तप करी काया थंबी जी ॥ अ० ॥ ६ ॥ निर्मल
 ८ वज्रवज्र सरिदने सरिखो, मेरु तणी परें धीरो जी ॥ ह
 ९ मायंत नूमंज जेहवां, सायर जेम गंजीरो जी ॥ अ०
 १० ॥ ७ ॥ सिंदूर परें जे कर्म मृग फेडे, सौम्यपणे करी चं
 ११ दो जी ॥ दूषण मूज तज्यां कंचन ण्युं, जनने दीये
 १२ आनंदो जी ॥ अ० ॥ ८ ॥ पांच वर्षे पालीने निर्मज,
 १३ लई थनशन सुन ध्यानों जी ॥ शुन परिणामें मुनिव
 १४ र पापो, वलम अनुग्र विमानो जी ॥ अ० ॥ ९ ॥

॥ शोहा ॥

॥ मेतीर सागर आपुवे, अपन्यां अजय सुनीत
 ॥ त्यांची वगी माझाविंदहमे, नानव लही तुजगीत
 ॥ १ ॥ त्यां दीक्षा छेई करी, मुनि छेईजे विद्या ॥
 ॥ जे प्रणमं निज नाशु, तित धर मह मुदिहाण ॥ २ ॥

ज्ञा पूरण कृतपुण्य कथा, काष्टनारिकथा मांस मह
 र्घ्यता, विद्याधर विद्या प्राप्ति, कृष्ण शुक्ल प्रासाद प्र
 संग, धार्मिकोत्तर परीक्षा, अजयकुमार दीक्षा, नंद
 व्रत ग्रहण मोक्षगमन, अजयकुमार अनुत्तर विमा
 नोत्पत्ति वर्णन नामा चतुर्थाधिकारः समाप्तः ॥ प्र
 थम खंडे ढाल ९ ॥ गाथा १७५ ॥ द्वितीय खंडे ढा
 ल १५ गाथा ३०७ तृतीय खंडे ढाल १५ गाथा ३०२
 चतुर्थे खंडे ढाल २१ गाथा ३८२ ॥ सर्वे ढाल ॥ ६०॥
 दूहा गाथा सर्व मन्त्रिने ११६८ सर्वे ग्रंथा ग्रंथ १६६४

इति श्रीअजयकुमार मन्त्राश्वर
 नो गम समाप्तः ॥

